अमीर खुसरो

कृत

खालिकबारी

संपादक

डॉ॰ श्रीराम शर्मा

काशी नागरी प्रचारिणी सभा

इस माला की कुछ पुस्तकें

१—भूषण ग्रंथावली ३—००
२—खुसरो की हिंदी कविता ०—७५
३—प्रेमसागर ४—५०
४—जायसी ग्रंथावली ६—२५
५—तुलसी ग्रंथावली ६—२५
६—कबीर ग्रंथावली भाग २५—००
७—सूरसागर २ खंडों में २५—००
८—कीर्तिलता २—००
९—नंददास ग्रंथावली ६—२५
१०—रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना ८—५०
११—हिंदी टाइपराइटिंग २—००
१२—हिंदी साहित्य का इतिहास १०—००
१३—घनानंद स्वच्छंद काव्य धारा ८—००
१४—प्रतापनारायण ग्रंथावली १०—००
१५—तुलसीदास ५—५०
१६—हिंदी मुक्तककाव्य का विकास ५—००
१७—रसरतन १०—००
१८—पुरानी हिंदी ३—००
१९—नाटक के तत्व (मनोवैज्ञानिक अध्ययन) ३—००

———

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला–९७

खालिक बारी

संपादक

श्रीराम शर्मा
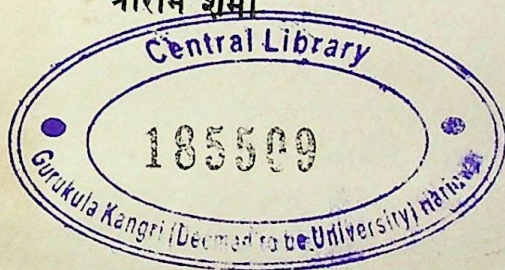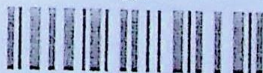
नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

मुद्रक : श्री शंभुनाथ वाजपेयी, राष्ट्रभाषा मुद्रण, वाराणसी

संवत् : २०२१ वि०, प्रथम संस्करण, ११०० प्रतियाँ

मूल्य : २.७५

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी हिंदी की जिन ग्रंथमालाओं के द्वारा हिंदी को श्रीसंपन्न बनाने का प्रयत्न किया है उनमें नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला का विशिष्ट योगदान है। प्राचीन ग्रंथों के खोजकार्य का आरंभ होने पर खोजविवरण के प्रकाशन के साथ ही हिंदी के विशेष लाभ की दृष्टि से सभा ने यह भी अनुभव किया कि खोज में प्राप्त चुने हुए ग्रंथों का प्रकाशन भी हो। उसने संवत् १९५७ बि० (सन् १९०० ई०) से इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये 'नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला' का प्रकाशन आरंभ किया। उस समय इसकी पृष्ठसंख्या ६४ और मूल्य आठ आने स्थिर किए गए। वर्ष में इसके चार अंकों के प्रकाशन का भी निश्चय किया गया था। संवत् १९७६ तक इस ग्रंथमाला के ६४ अंक प्रकाशित हुए। इस समय तक इस ग्रंथमाला के संपादक क्रमशः श्री राधाकृष्णदास (संवत् १९६१ तक), महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी (संवत् १९६५ तक), श्री माधवप्रसाद पाठक (संबत् १९६७ तक) और श्री श्यामसुंदर दास (संवत् १९७६ तक) थे। प्रांतीय सरकार ने इस ग्रंथमाला की उपयोगिता के कारण ३०० रु० बार्षिक की सहायता पाँच वर्षों के लिये संवत् १९६१ में देना स्वीकार किया। फलस्वरूप इसकी पृष्ठसंख्या ८० कर दी गई पर मूल्य आठ आने ही रहने दिया गया। इस ग्रंथमाला में तब तक ग्रंथ खंडशः प्रकाशित होते थे। संवत् १९७७ से इस ग्रंथमाला में पूरे ग्रंथों का प्रकाशन आरंभ हुआ। अलवर नरेश श्रीमंत महाराज सवाई जयसिंह ने इस ग्रंथमाला के लिये ६००० रु० सभा को प्रदान किया तबसे यह ग्रंथमाला निरंतर प्रकाशित हो रही है और हिंदी के भांडार को संपन्न कर रही है।

इस ग्रंथमाला में अबतक ५६ ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। पृथ्वीराजरासो जैसा बृहद् ग्रंथ सभा ने इसी माला में प्रकाशित किया। इसमें छपे अब निम्नांकित ग्रंथ ही प्राप्य हैं :

१–भक्तनामावली, २–हम्मीररासो, ३–भूषण ग्रंथावली, ४–जायसी ग्रंथावली, ५–तुलसी ग्रंथावली, ६–कबीर ग्रंथावली, ७–सूरसागर, ७–खुसरो की हिंदी कविता, ९–प्रेमसागर, १०–रानी केतकी की कहानी, ११–

प्रकाशक : नाग
मुद्रक : श्री शंभु
संवत् : २०२१
मूल्य : २.७५

नासिकेतोपाख्यान, १२–कीर्तिलता, १३–हमीरहठ, १४–नंददास ग्रंथावली १५–रत्नाकर, १६–रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना, १७–हिंदी टाइप राइटिंग, १८–हिंदी साहित्य का इतिहास, १९–घनानंद : स्वच्छंद काव्यधारा २०–प्रतापनारायण ग्रंथावली, २१–तुलसीदास, २२–हिंदी में मुक्तक काव्य का विकास, २३–रसरतन, २४–नाटक के त : मनोवैज्ञानिक अध्ययन।

खालिक बारी इस ग्रंथमाला का ५७वाँ पुष्प है। इसी ग्रंथमाला के २६वें पुष्प के रूप में खुसरो की हिंदी कविता (संपादक श्री श्यामसुंदरदास तथा संकलनकर्ता एवं संपादक—श्री ब्रजरत्नदास) प्रकाशित हो चुकी है जिसके अनेक संस्करण हो चुके हैं। इसमें खालिक बारी को अमीर खुसरो की रचना के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। अमीर खुसरो भारतवर्ष के अंतराष्ट्रीय ख्याति के कवि हैं; अरबी, फारसी, तुर्की तथा हिंदी साहित्य उनके कृतित्व से श्रीसंपन्न एवं प्रतिष्ठित है।

उनका कृतित्व हिंदू मुसलिम सभ्यता के संगम की अनुभूतिमयी अभिव्यक्ति का दृष्टांत है। भाषा एवं भाव सभी क्षेत्रों में यह शिव सत्य उनके कृतित्व को गौरवपूर्ण ऐतिहासिक महत्व प्रदान करता है। यद्यपि मुहम्मद वाहिद मिर्जा (लाइफ एंड टाइम्स आव् अमीर खुसरो, कलकत्ता, १९३५) डा० रामप्रसाद त्रिपाठी और स्व० मौलवी अब्दुल हक जैसे अधिकारी विद्वान् इस कोशग्रंथ को उनकी रचना स्वीकार नहीं करते, तो भी विद्वानों का एक वर्ग इसे उनकी ही कृति स्वीकार करता है। जो भी हो, यह प्राचीन कोशग्रंथ हिंदी फारसी दोनों के साहित्य क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसका हिंदी में प्रकाशन साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये आवश्यक माना जाता रहा है। विश्वास है, सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० श्रीराम शर्मा द्वारा सुसंपादित यह ग्रंथ उक्त अभाव की में पूर्ति करने में सहायक होगा।

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

ज्येष्ठ पूर्णिमा,
संवत् २०२१

सुधाकर पांडेय
प्रकाशन मंत्री

———

विभागीय प्राक्कथन

नागरी लिपि में **खालिक बारी** का यह प्रकाशन विशेष महत्व रखता है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इस ग्रंथ का कोई ऐसा संस्करण नागरी लिपि में उपलब्ध नहीं है जो समालोचनात्मक रीति से और सुव्यवस्थित ढंग से संपादित किया गया हो। यद्यपि इस संपादन का आधार अनेक हस्तलेखों से संकलित नहीं है और प्रायः इसकी आधारभूत पहली पुस्तक भी प्रकाशित है तथापि प्रस्तुत संस्करण का संपादन जिस तत्परता और अवधानता के साथ किया गया है वह अपने आप में कम महत्ता नहीं रखता है।

इस ग्रंथ को अनेक विद्वान् **अमीर खुसरो** की प्रामाणिक रचना नहीं मानते हैं। स्वर्गीय श्री महमूद शीरानी इनमें प्रमुख हैं। श्री शीरानी की विद्वत्ता और व्यापक अध्ययन—उनके कथन में आस्था रखने का संकेत करता है। उनके मत से **खालिक बारी** के रचयिता **अमीर खुसरो** नहीं वरन् कोई **जियाउद्दीन खुसरो** नाम के व्यक्ति थे। इस वक्तव्य की आधारभूत एक हस्तलिखित प्रतिलिपि है जो 'अंजुमन तरक्कीए उर्दू' पुस्तकालय में उपलब्ध है। इसका लेखनकाल ११८७ हि० (लगभग १७७४ ई०) है। इसके आरंभ के वक्तव्य में लेखक ने अपना और पुस्तक का नाम तथा लिपिकाल लिखा है। इसी वक्तव्यात्मक भूमिका के आधार पर श्री शीरानी ने **खालिक बारी** के विषय में कुछ सूचनाएँ उपस्थित की हैं जो प्रस्तुत ग्रंथ के संपादक की भूमिका (पृ० १५) में भी निर्दिष्ट हैं। इसी हस्तलेख के अंतिम पद से पता चलता है कि ग्रंथ का लेखनकाल १०३१ हि० (१६२२ ई०) है। इसी एकमात्र प्रमाण के आधार पर श्री शीरानी का दृढ़ निश्चय है कि आलोच्य कृति **श्री जियाउद्दीन खुसरो** की रचना है जिसका निर्माण मुगल सम्राट् जहाँगीर के शासनकाल में हुआ है।

इस प्रश्न पर प्रस्तुत रचना के संपादक ने अनेक दृष्टियों से विचार किया है। उनकी दृष्टि का झुकाव इसी ओर है कि प्रस्तुत रचना, संभवतः **अमीर खुसरो** की ही है। उक्त संदर्भ के विचार भूमिका (पृ० १६ से २१ तक) में देखे जा सकते हैं। इसी के साथ साथ श्री श्रीराम शर्मा यह भी कहते हैं कि चौदहवीं शताब्दी की रचना होने पर भी भाषाविज्ञान और खड़ी-बोली के

विकास की दृष्टि से ग्रंथ का महत्व कम नहीं कहा जा सकता। फिर भी उनके अनुमान से इस ग्रंथ का निर्माता—संभवतः—**अमीर खुसरो** ही है और इस कोश की रचना १३वीं शती में हुई थी।

इस संदर्भ में एक और अनुमान किया जा सकता है। परंपरा और **खालिक बारी** के संबंध में प्राप्त पुराने उल्लेखों से यह पता चलता है कि **अमीर खुसरो** की यह महाकृति अनेक भागों में रची गई एक बृहदाकार कोशपुस्तक थी। आज उपलब्ध **खालिक बारी** उसी का संक्षिप्त रूप है। इस स्थिति में यह संभव हो सकता है कि **जियाउद्दीन खुसरो** ने (जो संयोगवश द्वितीय खुसरो ही थे) **खालिक बारी** का संक्षिप्त संस्करण संपादित किया हो। इस संस्करण का संक्षेपीकरण बच्चों को दैनिक व्यवहार के फारसी शब्द सिखाने के लिये हुआ था और बाबा इसहाक हलवाई ने इसके लिये आज्ञा दी थी तथा इसका लेखक था **खुसरो** और **लकब जियाउद्दीन**। यहाँ यह भी संभव है कि **खुसरो** मूल लेखक का ही संकेत करता हो और संक्षेपकर्ता **लकब जियाउद्दीन** हो। फिर भी निर्णयात्मक ढंग से कुछ कहा नहीं जा सकता।

श्री श्रीराम शर्मा ने इस संस्करण का संपादन बड़े प्रयास के साथ किया है। निर्दिष्ट प्रतियों के आधार पर—कुछ दूर तक—इसका संपादन वैज्ञानिक भी कहा जा सकता है। आरंभ की २४ पृष्ठों की **भूमिका** और अंत में 'ग्रंथ के हिंदी शब्दों के भाषावैज्ञानिक अध्ययन' तथा शब्दानुक्रमणी से संस्करण की महत्ता बढ़ गई है। श्री शर्मा ने दक्खिनी हिंदी भाषा और उसके साहित्य का महत्वपूर्ण अध्ययन तथा तत्संबद्ध अनेक ग्रंथों का निर्माण और संपादन भी किया है। अतः उनके द्वारा अध्यवसायपूर्वक संपादित इस कृति का विद्वज्जन—अवश्य ही—अध्ययन, आलोचन और परीक्षण करेंगे—ऐसा हमारा विश्वास है। आशा है, हिंदीजगत् में इस चिरप्रतीक्षित पुस्तक का स्वागत होगा।

चै० शु० १५; २०२१ वि० }

करुणापति त्रिपाठी
साहित्य मंत्री

—:०:—

विषयानुक्रमणी

—०—

भूमिका

अमीर खुसरो

अमीर खुसरो के पिता सैफुद्दीन महमूद तुर्किस्तान में एक कबीले के सरदार थे। कुछ इतिहासज्ञ सैफुद्दीन महमूद को बलख का अमीर बताते हैं। इस विषय में कोई मतभेद नहीं है कि चंगेजखाँ के अभियान के कारण सैफुद्दीन महमूद को स्वदेश छोड़ना पड़ा था। वह भारत चला आया। उस समय भारत में कुतबुद्दीन ऐबक (शासनकाल १२०६-१२१० ई०) का देहांत हो चुका था और उसके स्थान पर उसका एक दास शम्सुद्दीन अल्तमश (शासन-काल १२११-१२३६ ई०) राज्य करता था। अमीर सैफुद्दीन महमूद अपने साथियों के साथ अल्तमश की सेवा में नियुक्त हो गया। दिल्ली से कुछ दूर उत्तर प्रदेश के एटा जिले में पटियाली नामक गाँव में उसने अपना घर बनाया था। संभवतः सम्राट् की ओर से पटियाली अमीर सैफुद्दीन को जागीर में मिला था।

भारत आने के पश्चात् अमीर सैफुद्दीन महमूद ने इमादुल मुल्क की बेटी से विवाह किया। इस पत्नी के गर्भ से पटियाली गाँव में ६५१ हि० (११९३ ई०) को अमीर खुसरो का जन्म हुआ। अमीर खुसरो के दो और भाई थे। बड़े भाई का नाम अजीउद्दीन और मझले का हिसामुद्दीन था। खुसरो सबसे छोटे थे। कुछ लोग हिसामुद्दीन को खुसरो से छोटा मानते हैं। खुसरो जब सात वर्ष के थे, तभी उनके पिता का देहांत हो गया। खुसरो तथा उनके भाइयों के पालन पोषण में उनके नाना इमादुल मुल्क ने बहुत योग दिया। खुसरो जब बड़े हो गए तब भी उनके नाना नाना प्रकार से सहायता किया करते थे।

छात्रावस्था में अमीर खुसरो साहित्य में विशेष रुचि लेते थे। बीस वर्ष की आयु में वे साहित्यशास्त्र के अच्छे ज्ञाता हो गए थे और कविता करने लगे थे।

युवावस्था में अमीर खुसरो की मित्रता हसन देहलवी से हुई। हसन भी फारसी में कविता करता था। उसकी नानबाई की दूकान थी। एक दिन हसन अपनी दूकान पर बैठा रोटियाँ बेच रहा था। तँदूर से गरम गरम गदबदी

रोटियाँ थाल में आ रही थीं। ग्राहक हाथों हाथ खरीद रहे थे। अमीर खुसरो दूकान के सामने से गुजरे तो उनकी दृष्टि हसन पर गई। अमीर ख़ुसरो बचपन से ही हँसी मजाक में मजा लेते थे। उन्होंने हसन से पूछा—

'नानबाई, रोटियाँ क्या भाव दीं?'

हसन ने उत्तर दिया—'मैं एक पलड़े में रोटी रखता हूँ और ग्राहक कहता हूँ, दूसरे पलड़े में सोना रख। सोने का पलड़ा झुकता है, तो रोटी खरीदार को देता हूँ।'

'ग्राहक गरीब हो तब?' खुसरो ने प्रश्न किया।

'तब आशीर्वाद के बदले रोटी बेचता हूँ।' हसन ने उत्तर दिया।

इस प्रश्नोत्तर के कारण हसन और खुसरो में ऐसी मित्रता हुई कि जन्म भर वे साथ साथ रहे। शरीर दो थे, आत्मा एक। इस मित्रता के लिये खुसरो को अनेक लांछन सहने पड़े, किंतु मित्रता में कमी नहीं आई। दोनों मित्रों को गयासुद्दीन बलबन के दरबार में स्थान मिल गया। प्रारंभिक दिनों में खुसरो ने बलबन की प्रशंसा में अनेक कसीदे लिखे।

गयासुद्दीन बलबन का पुत्र सुलतान अहमद पंजाब का राज्यपाल बनकर मुलतान गया। वह अपने साथ खुसरो और हसन को भी ले गया। मुलतान में रहते समय राजकुमार सुलतान अहमद को तातारों के साथ युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में राजकुमार काम आ गया। हसन और खुसरो बंदी बनाए गए। दोनों बलख के किले में बंद कर दिए गए। कारागार में रहते समय खुसरो ने अनेक शोकगीत (मर्सिये) लिखे, जिनमें तातारों के साथ युद्ध करते समय राजकुमार सुलतान अहमद की वीरतापूर्ण मृत्यु का उल्लेख था। ये मर्सिये समय समय पर दिल्ली भेजे गए। दो वर्ष कारावास में रहने के पश्चात् खुसरो तथा हसन मुक्त कर दिए गए। दिल्ली लौटकर खुसरो ने राजकुमार की मृत्यु पर अपना एक मर्सिया सुनाया जिसे सुनकर बलबन फूट फूट कर रोया, इतना रोया कि उसे बुखार आ गया।

तातारों के कारावास से मुक्त होने के पश्चात् खुसरो दिल्ली में नहीं रहे। अपनी माँ के पास पटियाली चले गए। वहाँ कुछ समय चिंतन में बिताया। उधर पुत्र की मृत्यु के कारण बलबन को बहुत दुःख हुआ। १२८७ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। बलबन की मृत्यु के पश्चात् अमीर खुसरो के प्रिय राजकुमार सुलतान अहमद के पुत्र को गद्दी पर बैठना चाहिए था, किंतु

सरदारों ने षड्यंत्र रचकर बंगाल के शासक बुगराखाँ के पुत्र कैकबाद को गद्दी पर बैठा दिया। कैकबाद ने खुसरो को अपने दरबार में निमंत्रित किया। था कि खुसरो इस निमंत्रण को स्वीकार नहीं कर सकते थे। खुसरो कुछ समय तक पटियाली में रहकर शाही अमीर खानजहाँ के यहाँ चले गए। खानजहाँ जब अवध का सूबेदार बना तो खुसरो उसके साथ गए।

अवध में खुसरो दो वर्ष से अधिक नहीं रह सके। खुसरो की माँ अपने तीनों पुत्रों में खुसरो को अधिक प्यार करती थी। उसने पटियाली से खुसरो को पत्र लिखा कि मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती। खुसरो इस पत्र को पढ़कर विचलित हो गए। अवध की नौकरी छोड़कर घर चले आए। दो वर्ष के वियोग के पश्चात् माँ ने खुसरो को देखा तो उसकी आँखों से आँसू बरसने लगे।

कैकबाद का पिता बुगराखाँ बंगाल का शासक था। जब उसने सुना कि कैकबाद गद्दी पर बैठने के पश्चात् स्वेच्छाचारी और विलासी हो गया है तो पुत्र को पाठ पढ़ाने के लिये सेना लेकर दिल्ली पहुँचा। बाप को बेटे से हार खानी पड़ी। पिता पुत्र के इस युद्ध को लेकर खुसरो ने 'किरानुस्सादैन' नामक काव्य लिखा। १२९० ई० में इस वंश की सत्ता समाप्त करके फीरोजशाह शाइस्ताखाँ खिलजी जलालुद्दीन खिलजी के नाम से गद्दी पर बैठा। यह कविता का प्रेमी था। इसने अनेक कवियों को आश्रय दिया। खुसरो की काव्य-कला से जलालुद्दीन पहले से परिचित था। उसने बड़ा पद देकर खुसरो को दरबार में बुलाया। दरबार में रहते हुए खुसरो ने जलालुद्दीन की विजयों को 'ताजुल मफतूह' में कविता बद्ध किया।

१२९६ ई० में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा को मारकर दिल्ली का सम्राट् बना। इसने भी विद्वानों और कवियों का बहुत आदर किया। अमीर खुसरो को वेतन में प्रतिवर्ष एक हजार टंके मिलने लगे। अलाउद्दीन खिलजी के प्रसिद्ध अभियानों को लेकर अमीर खुसरो ने 'हस्त बहिश्त' नामक काव्य लिखा। १३१६ ई० में अलाउद्दीन का देहांत हुआ। इसका पुत्र शहाबुद्दीन तीन मास राज्य कर सका। कुत्बुद्दीन मुबारक शाह बिन अलाउद्दीन खिलजी ने शासन अपने हाथ में ले लिया, अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण में देवगिरि के राजा को परास्त किया था। राजा के वंशजों ने फिर छोटा सा राज्य स्थापित कर लिया। कुत्बुद्दीन मुबारक शाह ने देवगिरि (दौलताबाद) पर आक्रमण

किया। अमीर खुसरो भी इस अभियान में मुबारकशाह के साथ थे। इस अभियान के संबंध में खुसरो ने एक कसीदा लिखा जिसमें देवगिरि (दौलताबाद) की बहुत प्रशंसा की गई है। खुसरो का जितना संमान मुबारकशाह ने किया, उतना किसी अन्य सम्राट् ने नहीं किया। कुत्बुद्दीन मुबारकशाह पर खुसरो ने एक काव्य लिखा, जिससे प्रसन्न होकर बादशाह ने हाथी के तोल का रुपया कवि को पुरस्कार में दिया।

खुसरोखाँ नामक मंत्री ने कुत्बुद्दीन का वध कर दिया तो गयासुद्दीन तुगलक नामक सरदार गद्दी पर बैठा। गयासुद्दीन तुगलक (१३२०-१३२५ ई०) के शासनकाल में भी खुसरो का संमान कम नहीं हुआ। गयासुद्दीन के बंग-अभियान में खुसरो साथ थे।

राजनीतिक और साहित्यिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी खुसरो की आध्यात्मिक साधना कभी अवरुद्ध नहीं हुई। उन्हें इस क्षेत्र में दिल्ली के प्रसिद्ध मुस्लिम संत निजामुद्दीन औलिया का सान्निध्य और शिष्यत्व प्राप्त था। आठ वर्ष की आयु में खुसरो को निजामुद्दीन औलिया के चरणों में स्थान प्राप्त हुआ। कुछ समय तक अमीर खुसरो दिल्ली से बाहर रहे। अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में खुसरो का अधिकांश समय दिल्ली में बीता। इसी अवधि में उन्होंने औलिया से विधिवत् दीक्षा ली। कुछ समय पश्चात् शिष्य की साधना इस स्तर तक पहुँची कि उसका अहं पूर्णतया विगलित हो गया। गुरु और शिष्य का द्वैतभाव शेष न रहा। निजामुद्दीन औलिया ने खुसरो से जितना स्नेह किया, उतना स्नेह बहुत कम शिष्यों को मिला होगा। औलिया ने वसीयत की थी कि जब खुसरो का देहांत हो तो उन्हें औलिया के पहलू में दफनाया जाय। औलिया ने भविष्यवाणी की थी कि उनकी मृत्यु के पश्चात् खुसरो छह मास जीवित रहेंगे। औलिया ने खुसरो को 'तुर्क अल्लाह' का विरद दिया था और सदैव कहा करते थे—प्रलय के पश्चात् न्याय के अवसर पर ईश्वर पूछेगा कि तू मर्त्यलोक से क्या लाया है, तो मैं खुसरो को आगे कर दूँगा।

निजामुद्दीन औलिया के निधन के अवसर पर खुसरो बंगाल में थे। गुरु के निधन का समाचार सुनकर वे दिल्ली चले आए। खुसरो ने अपना सर्वस्व गुरु की आत्मा के लिये दान में दे दिया। काले कपड़े धारण कर लिए। दिन रात औलिया की कब्र पर बैठे रहते। गुरु की मृत्यु के ठीक छह मास

पश्चात् १३२६ ई० में अमीर खुसरो का देहांत हुआ। एक विद्वान् ने यह आपत्ति उठाई कि यदि औलिया की इच्छा के अनुसार खुसरो को उनके पहलू में दफनाया गया तो आगे चलकर दोनों की कब्रों में भ्रम होगा, अतः खुसरो को औलिया के चरणों में स्थान दिया गया।

अंतिम दिनों में हसन देहलवी भी अपने मित्र से बिछड़ गया था। संभवतः मुबारक शाह के साथ जब खुसरो दौलताबाद गए थे तो हसन भी उनके साथ रहे होंगे और राजकीय काम से वहीं बस गए होंगे। १३३५ ई० में यहीं उसका देहांत हुआ। दौलताबाद दुर्ग के निकट हसन की कब्र है।

अमीर खुसरो के मलिक अहमद नामक पुत्र था। वह फीरोजशाह का दरबारी बनाया गया। एक बेटी थी। विवाह के पश्चात् जब बेटी बिदा होने लगी तो खुसरो ने उसे उपदेश दिया था—खबरदार, चर्खा कातना कभी न छोड़ना। झरोखे के पास बैठकर इधर उधर न झाँकना।

अमीर खुसरो अनेक भाषाएँ जानते थे। तुर्की उनकी पितृभाषा थी और माँ संभवतः हिंदी बोलती थीं। फारसी भी मातृभाषा के समान थी। अरबी के ज्ञाता थे। संस्कृत से परिचय था। हिंदी से संबंधित कई बोलियों का ज्ञान था। लोकजीवन में उनकी जो स्वाभाविक रुचि थी, उसके कारण वे जहाँ गए वहाँ की प्रचलित बोली और उसके मौखिक साहित्य से उन्होंने परिचय प्राप्त किया। 'जबानदानी में तो शायद ही कोई उन जमाने में उनका मुकाबला कर सकता हो, इसलिये कि वो फारसी के अलावा तुर्की, हिंदी, संस्कृत और हिंदुस्तान की और कई जबानों से वाकिफ थे...[१]।'

खुसरो अनेक युद्धों में संमिलित हुए। जीवन भर दरबार से संबंध रहा। उनके समय में राजनीतिक स्थिरता नहीं थी। मुसलमान भारत के शासक बन चुके थे किंतु उनका अंतर्विरोध चरम सीमा पर था। सत्ता-प्राप्ति के लिये परस्पर प्रतिद्वंद्विता थी। खुसरो को अनेक शासकों की सेवा में रहना पड़ा। उन्होंने सभी के संबंध में कुछ न कुछ लिखा है। इतने कार्यों में व्यस्त रहते हुए और अपने स्वामियों के संबंध में कविता लिखते रहने के कारण उनकी प्रतिभा का समुचित उपयोग नहीं हुआ। फिर भी उन्होंने फारसी में उत्कृष्ट कोटि का साहित्य लिखा। ईरान निवासियों को

---

१. डाक्टर मुहम्मद वहीद मिर्जा—अमीर खुसरो, प्रकाशक हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, भूमिका पृ० ७।

इस बात का गर्व रहा है कि फारसी पर उन्हींका अनन्य अधिकार है। भारतवर्ष के फारसी लेखकों को ईरानी कवि और विद्वानों का आदर प्राप्त नहीं हुआ। केवल अमीर खुसरो इसके अपवाद हैं। गालिब भारतीय फारसी लेखकों में केवल अमीर खुसरो का आचार्यत्व स्वीकार करते हैं—'अहले हिंद (भारतवासियों) में सिवाय खुसरो देहलवी के कोई मुसल्लिमुस्सबूत (प्रामाणिक) नहीं, मियाँ फैजी की भी कहीं कहीं ठीक निकल जाती है[1]।' गद्य और पद्य लिखने में फारसी के बड़े बड़े ईरानी कवि भी परिमाण और गुण किसी भी दृष्टि से खुसरो की समता नहीं करते। 'फिरदौसी मसनवी से आगे नहीं बढ़ सकता, सादी कसीदे को हाथ नहीं लगा सकते, अनवरी मसनवी और गजल को छू नहीं सकता। हाफिज, उर्फी, नजीरी गजल के दाइरे से बाहर नहीं निकल सकते, लेकिन अमीर साहब (खुसरो) की जहाँगीरी (साम्राज्य) में गजल, मसनवी, कसीदा, रुबाई सब कुछ दाखिल है। किसी को उनकी हमसरी (समकक्षता) का दावा नहीं हो सकता। फिरदौसी के अशार (पदों) की तादाद कमोवेश सत्तर हजार है, अमीर साहब ने एक लाख से ज्यादा शेर कहे हैं।'''अक्सर तजकरों में खुद अमीर साहब के हवाले से लिखा है कि उनका कलाम तीन लाख से ज्यादा और चार लाख से कम है, लेकिन इसमें गालिबन (संभवतः) एक गलतफहमी है। अमीर साहब ने 'अबयात (पदों) का लफ्ज लिखा है और कुदमा (प्राचीनों) के मुहावरे में बैत एक सतर को कहते हैं[2]।'

नीति संबंधी फारसी कवियों में शेख सादी के पश्चात् उनका नाम लिया जाता है।

जामी ने लिखा है—खुसरो ने विविध विषयों पर ९२ पुस्तकें लिखी थीं।

खुसरो की भाषा अपने ढंग की है—'सादी और अमीर खुसरो साहब ने खास इसका ख्याल रखा है कि रोजमर्रा और आम बोलचाल को ज्यादा वसअत (व्यापकता) दी जाय, सादी और खुसरो के कलाम में जो रवानी,

---

१. गालिब—गालिब के पत्र, संपादक – श्रीराम शर्मा तथा रामनिवास शर्मा, प्रकाशक हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद (१९४८ ई०), पृ० १४२।

२. शिबली-हयाते खुसरो, जामिआ बर्की प्रेस दिल्ली, (सन् नहीं) पृ० १८।

शुस्तगी और सफाई पाई जाती है, उसका एक बड़ा गुर यही है[१]।' गजल की शब्दावली अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म अर्थ को वहन करती है—'अमीर साहब की गजलें अक्सर उस जबान में होती हैं कि गोया आदमी आपस में बैठकर बिल्कुल बेतकल्लुफ सीधी-सादी बातें कर रहे हैं। इसमें कहीं कहीं खास-खास मुहावरे भी आ जाते हैं[२]।'

खुसरो ने फारसी कविता लिखते समय कई स्थानों पर ऐसे मुहावरों का प्रयोग किया है, जिन पर हिंदी का पर्याप्त प्रभाव है। जैसे आवाज करदन = पुकारना। गुफ्तार मी गोयम=यों ही बात कहता हूँ। किंतु इस प्रकार के प्रभाव के कारण खुसरो की भाषा में कहीं अप्रांजलता नहीं आने पाई। इसी प्रकार उन्होंने अपनी फारसी रचना में ऐसी उपमाओं का प्रयोग किया है जो भारतीयता का परिचय देती हैं।

भारतीय साहित्य में, विशेष रूप से हिंदी साहित्य में उनकी विशेष रुचि का एक कारण यह भी है कि वे उत्तर भारत के शास्त्रीय और लोकसंगीत से बहुत परिचित थे। ईरानी और तुर्की संगीत में भी उनकी रुचि थी। इस संबंध में स्वर्गीय श्यामसुंदरदास लिखते हैं—'लोकोत्तर प्रतिभाशाली, अद्भुत मर्मज्ञ और सहृदय अमीर खुसरो को इस नवीन परंपरा के सृजन का श्रेय प्राप्त है। उसने अपनी विलक्षण बुद्धि द्वारा भारतीय रागों को फारस के रागों से मिलाकर १५-२० नये रागों की कल्पना की, जिनमें से ५-६ आज भी हिंदुस्तानी संगीत में प्रचलित हैं। ईमन और शहाना आदि ऐसे ही राग हैं। ख्याल परिपाटी का गाना इन्होंने निकाला था[3]।'

खुसरो के संगीतज्ञान के संबंध में एक कथा प्रचलित है। उन दिनों नायक गोपाल उत्तर भारत का प्रमुख गायक था। उसके १२ सौ शिष्य थे। शिष्य लोग नायक को सिंहासन पर बैठाकर कहार की तरह ढोते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने एक दिन गोपाल नायक को दरबार में बुलाया। सभा जमने से पहले अमीर खुसरो ने बादशाह से अनुरोध किया कि मैं गायन के समय सिंहासन के पीछे छिपना चाहता हूँ। नायक गोपाल ने छह भिन्न भिन्न

---

१. शिबली—हयाते खुसरो, जामिआ बर्की प्रेस, दिल्ली, पृ० ४६।

२. वही पृ० ४६।

३. श्यामसुंदरदास—हिंदी भाषा और साहित्य, इंडियन प्रेस, प्रयाग (१९९४ वि०) पृ० २११।

सभाओं में अपनी गायकी से सम्राट् और सामंतों को चकित कर दिया। सातवीं सभा में अमीर खुसरो भी अपने शिष्यों के साथ उपस्थित हुए। नायक गोपाल खुसरो की संगीतज्ञता से परिचित था। उसने खुसरो से कुछ गाने के लिये कहा। अमीर खुसरो टाल गए। बोले—'मैं मुगल हूँ, हिंदुस्तानी संगीत का मेरा ज्ञान अल्प है। पहले आप सुनायें फिर मैं सुनाऊँगा।' नायक ने गाना गाया तो खुसरो बोले—'मैं यह राग गा चुका हूँ।' अमीर ने वह राग गाकर सुना दिया। गोपाल ने दूसरा राग गाया। खुसरो ने वह भी गाकर सुना दिया। अंत में खुसरो ने नायक से कहा—'अब तक आपने बाजारू और घिसे पिटे गाने गाए हैं। मेरा गाना सुनिए।'

खुसरो ने गीत गाया। नायक गोपाल मुग्ध हो गया।

अमीर खुसरो ने तुर्की, ईरानी और भारतीय संगीत के समन्वय से अनेक रागों की उद्भावना की; जिनमें कौल, तराना, खयाल, नक्श, निगार, बसीत, तलाना और सोहेला मुख्य हैं। वाद्यों में समन्वय का प्रयत्न किया गया। वीणा को सितार में परिवर्तित करने का श्रेय खुसरो को दिया जाता है।

कव्वाली के विन्यास का श्रेय भी खुसरो को है। कव्वाली की विशेषता यह है कि उसमें अरबी, ईरानी और उत्तर भारतीय संगीत का अच्छा मिश्रण हुआ है। कव्वाली में श्रोता एक क्षण लोकधुन सुनता है तो दूसरे ही क्षण शास्त्रीय ढंग का आलाप।

फारसी के महान् कवि होते हुए भी खुसरो ने हिंदी का महत्व स्वीकार किया था। खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र खिज्रखाँ और उसकी प्रेमिका देवल देवी के संबंध में 'खिज्रनामः'—प्रेमकाव्य लिखा है। इसमें एक स्थान पर खुसरो ने हिंदी की प्रशंसा लिखी है। इस प्रशंसा का सार इस प्रकार है—

'मैं भूल में था, पर अच्छी तरह सोचने पर हिंदी भाषा फारसी से कम नहीं ज्ञात हुई। अरबी के सिवा, जो प्रत्येक भाषा की मीर और सबों में मुख्य है, रई (अरब का एक नगर) और रूम की प्रचलित भाषाएँ समझने पर हिंदी से कम मालूम हुईं।···हिंदी भाषा भी अरबी के समान है, क्योंकि उसमें भी मिलावट का स्थान नहीं है।'

हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं के साहित्येतिहास में अमीर खुसरो को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। श्यामसुंदरदास के विचार में खुसरो खड़ी बोली के

आदि कवि हैं—···अमीर खुसरो खड़ी बोली के आदि कवि ही नहीं हैं, वरन् उन्होंने हिंदी तथा फारसी-अरबी में परस्पर आदान प्रदान में भी भरसक सहायता पहुँचाई है[1]।'

रामचंद्र शुक्ल ने इनकी हिंदी कविता के संबंध में लिखा है—'ये बड़े विनोदी, मिलनसार और सहृदय थे, इसी से जनता की सब बातों में पूरा योग देना चाहते थे। जिस ढंग के दोहे, तुकबंदियाँ और पहेलियाँ आदि साधारण जनता की बोलचाल में इन्हें प्रचलित मिलीं, उसी ढंग के पद्य और पहेलियाँ आदि कहने की उत्कंठा इन्हें भी हुई। इनकी पहेलियाँ और मुकरियाँ प्रसिद्ध हैं। इनमें उक्तिवैचित्र्य की प्रधानता थी, यद्यपि कुछ रँगीले गीत और दोहे भी इन्होंने कहे हैं[2]।'

मौलाना शिबली ने एक तजकिरे का उल्लेख किया है—'अमीर साहब का कलाम जिस कदर फारसी में है, उस कदर बिरज भाषा में है। किस कदर अफसोस है कि इस मजमूए का आज नामोनिशान भी नहीं है[3]।'

फारसी के विद्वान् और उर्दू के पुराने लेखक व्रजभाषा और खड़ी बोली को एक ही मानते रहे हैं, जब कि दोनों में पर्याप्त अंतर है। शिबली के उपर्युक्त उद्धरण में व्रज भाषा से खड़ी बोली का तात्पर्य है। मुहम्मद हुसेन आजाद के इस कथन में भी खड़ी बोली और व्रज भाषा की अभेदता प्रकट होती है—'अमीर खुसरो ने जिनकी तबीयत इख्तिरांअ (आविष्कार) में आला दर्जा सनअत (अलंकार) व ईजाद का रखती थी, मुल्के सुखन (काव्यप्रदेश) में बिरज भाषा की तरकीब से एक तिलस्म खाना इंशापरदाजी (गद्यलेखन) का खोला[4]।'

अमीर खुसरो खड़ी बोली के आदि कवि हैं या नहीं, यह विवादास्पद बात है। अमीर खुसरो के नाम पर प्रचलित दोहों, पहेलियों और मुकरियों

---

१. श्यामसुंदरदास—हिंदी भाषा और साहित्य, इंडियन प्रेस लि० प्रयाग, (सं० १९९४ वि०), पृ० ८७।

२. रामचंद्र शुक्ल—हिंदी साहित्य का इतिहास, काशी नागरीप्रचारिणी सभा (सं० १९९६ वि०), पृ० ६०-६१।

३. शिबली—हयाते खुसरो, जामिया बर्की प्रेस, दिल्ली, पृ० १८।

४. मुहम्मद हुसेन आजाद, आबेहयात, लाहौर, चौदहवाँ संस्करण (सन् मुद्रित नहीं), पृ० ७१।

के आधार पर उनके कविकर्म और तत्कालीन भाषा के संबंध में कुछ लिखना उस समय तक संभव नहीं है, जब तक कि किसी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक में प्रचुर मात्रा में उदाहरण उपलब्ध नहीं होता। अलीगढ़ से प्रकाशित 'जवाहरे खुसरवी' नामक पुस्तक[1] में खुसरो के नाम पर प्रचलित रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। इसके प्रथम खंड में खालिक बारी है, और दूसरे खंड में बूझ और अनबूझ पहेलियाँ, कहमुकरियाँ, दो सुखने अनमेलियाँ या ढकोसले आदि, तीसरे खंड में एक गजल है जिसका एक चरण फारसी में और दूसरा चरण हिंदी में। चौथे खंड में हिंदी के दोहे और पाँचवें खंड में एक गीत है।

उक्त सकलन अथवा अन्य पुस्तकों में अमीर खुसरो की जो रचनाएँ प्रचलित हैं उनकी भाषा विश्वस्त नहीं है। लगभग सात सौ वर्ष से कहते-सुनते समय जनता ने खुसरो की मूल रचनाओं में बहुत से परिवर्तन कर दिए हैं।

अब तक जो सामग्री उपलब्ध हुई है, उसमें गोलकुंडा के लेखक वजही की रचना 'सबरस' (रचनाकाल—१६३६ ई०) में उद्धृत खुसरो का निम्नलिखित दोहा प्राचीनता की दृष्टि से बहुत विश्वस्त है। इसके आधार पर खुसरो द्वारा व्यवहृत हिंदी का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। 'सबरस' का उद्धरण इस प्रकार है—

'केतक मर्दां बहुत गदरी अछते हैं, नाकदरी अछते हैं। कद्र नहीं जानते, महनत नहीं पछानते। ज्यूँ खुसरो कता है—

पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव
मुज जलती जनम गयी तेरे लेखन बाव।'[2]

खालिक बारी

खालिक बारी के संबंध में बहुत से आधुनिक और प्राचीन विद्वानों का विचार रहा है कि यह अमीर खुसरो की रचना है। जब कहीं से इस संबंध में संदेह व्यक्त किया गया तो विद्वानों ने भ्रम निवारण करने का यत्न भी किया है। खालिक बारी के संबंध में उर्दू के एक विद्वान् का कथन है—'खालिक-

---

१. संपादक—मौलाना रशीद अहमद 'सालम', प्रकाशक-इंस्टिट्यूट अलीगढ़ कालेज, अलीगढ़ (सन् १९१८ ई०)।
२. वजही—सबरस, संपादक—श्रीराम शर्मा, प्रकाशक—दक्खिनी प्रकाशन समिति (१९५५ ई०), पृ० १२६।

बारी अरबी-फारसी हिंदी के लुगात (शब्दों) में मुख्तलिफ बहरों (छंदों) में है। ये पहले कई बड़ी बड़ी जिल्दों में थी, आजकल जो आमतौर पर रायज है, ये असल किताब का बहुत मुख्तसर (संक्षिप्त) सा इंतिखाब (संकलन) है। मशहूर है कि अमीर खुसरो ने इसको किसी भटयारी की फरमाइश पर उसके लड़के के वास्ते लिख दी थी। जब बिरज भाषा ने वसते अखलाक (उदारता) से अरबी फारसी अलफाज के मेहमानों को जगह दी तो एक नई जबान पैदा होनी शुरू हुई, लेकिन वह मुद्दत तक दोहरों के रंग में जुहूर करती रही याने फारसी की बहरें (छंद) और फारसी के खयालात उसमें न आते थे। सबसे अव्वल इसी खालिक बारी में फारसी बहरों ने अपनी झलक दिखाई है[1]।'

मुहम्मद अमीन अयागी ने खालिक बारी और खुसरो की अन्य रचनाओं का गंभीर अध्ययन करने के पश्चात् लिखा है—'...किताब की कदामत (प्राचीनता) साफ ये पता बतलाती है कि ये किताब अहदे हजरत अमीर खुसरो के मुत्तसिल जमाने की तसनीफ (रचना) है, जैसे चीतल[2] कि हजरत अमीर खुसरो के अहदे जिंदगी तक में एक हिंदी सिक्के का नाम था और हजरत के करीब अहद में ये मतरूक (त्यक्त) हो चला था। यहाँ तक कि उनके बाद तारीख में उसका नाम भी नहीं आता, क्यों सलातीने हिंद (भारत के शासक) की कदीम सादगी जिस तरह ऐश व दौलत के सामानों से आरास्ता हो गई थी, सिक्कों के सादा नाम भी अशरफी और अख्तरे जर वगैरा वगैरा तकल्लुफात से बदल गए थे। बहरहाल 'चीतल' का चलन अहदे खुसरवी से आगे नहीं पाया जाता, या मुहावराते कदीम जैसे मैं तुझ कहिया (मैंने तुझसे कहा), तू कित रहिया (तू कहाँ रहा) बाव उडानी (हवा चली), आखना (देखना[3]), भाखना (कहना), चाव (शौक) वगैरा अलफाज की गवाही से खालिक बारी का जमानए तसनीफ (रचना-

---

१. मुहम्मद सईद अहमद मारहरवी—हयाते खुसरो, आगरा (सन् मुद्रित नहीं)। पृ० १२६-१२७

२. चीतल से संबंधित खालिक बारी का पद इस प्रकार है—

जर बुवद सोना सीम चीतल तुकः रूपा
जामः कप्पड़ टाट तप्पड़ दव्वः कूपा ॥१८॥

३. आखना का अर्थ देखना नहीं, कहना है।—संपादक।

काल) अहदे खुसरो (खुसरो का युग) में कतई तौर पर मुकर्रर...... हो सकता है[1]।'

'हिंदी और संस्कृत की उन तरकीबों पर हजरत अमीर खुसरो के सिवा और किसी के कलम को ये रवानी साबित नहीं। पस, इसमें शक करने की बहुत कम वजूह (कारण) हैं कि खालिक बारी हजरत अमीर खुसरो की तसनीफ है[2]।'

ऊपर जो तर्क दिए गए हैं, वे भाषाविज्ञान तथा इतिहास की दृष्टि से कोई महत्व नहीं रखते। जो उद्धरण दिए गए हैं, उनका तात्पर्य केवल इतना ही है कि खालिक बारी के कर्ता के संबंध में विद्वान् क्या सोचते रहे हैं। मुहम्मद अमीन अब्बासी चिरियाकोटी ने 'खालिक बारी' के उद्देश्य के संबंध में लिखा है- हम इस मुख्तसर (संक्षिप्त) को देखकर यही समझते हैं कि बच्चों को मुतरादिफ अलफाज याद कराने के लिये एक चीज है, लेकिन इस जखीम किताब की तदवीन (संकलन) से हजरत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अले का मंशा इससे कुछ ज्यादा था। उन्होंने यह किताब ऐसे वक्त में लिखी थी जब कि मुसलमान जौक दर जौक बराहे खैबर बलख व बुखारा व ईरान व तूरान व तुर्किस्तान से मुगलों के हाथों तर्के वतन करके हिंदुस्तान आ रहे थे और यहाँ पहुँचकर जबान न जानने की दुश्वारियों से शब रोज उनका मुकाबिला था और अहले हिंद इन ताजा विलायत मेहमानों का माफी उज्जमीर (अंतःकरण) समझने से आजिज व परेशान थे। इन अजनबियों में बाहम तार्रुफ (परस्पर परिचय) कराने की गर्ज से हजरत अमीर ने उन तमाम लुगात (शब्द) व अलफाज को जो एक दूसरे की जबानों पर मौजूद और कारआमद थे इस खूबसूरती के साथ मुंसलिक (संबद्ध) कर दिया और बेशक वह तमाम मजमुआ उन कई बड़ी बड़ी जिल्दों में तमाम हुआ होगा, जिनके न मिलने पर आज हमें हसरत है[3]।'

इस मंतव्य का समर्थन उर्दू के आलोचक मसऊद हुसेन रजवी ने किया है—'खालिक बारी गालिबन (संभवतः) बच्चों के लिये नहीं लिखी गई थी।

---

१. मुहम्मद अमीन अब्बासी चिरियाकोटी—जवाहरे खुसरवी, संपादक रशीद अहमद 'सालम', अलीगढ़ (१९१८ ई०) पृ० ५।

२. वही, पृ० ६।

३. वही, भूमिका, पृ० १०

अमीर खुसरो के जमाने में चंगेजियों की ताख्त व ताराज (आक्रमण) ने ईरान व तूरान को जेर व जबर कर दिया था। उनकी जदाल व कताल (मारकाट) से तंग आकर हजारहा ईरानियों और तूरानियों ने हिंदुस्तान में पनाह ली थी। इन लोगों को हिंदुस्तानियों से बातचीत करने में बड़ी दिक्कत पड़ती थी। न वह इनकी बात समझते थे न ये उनकी। कयास कहता है कि इसी दिक्कत को दूर करने के लिये अमीर खुसरो ने फारसी और हिंदी के जरूरी हममानी (समानार्थी) यकजा करके नज्म कर दिये होंगे[1]।'

उर्दू में आधुनिक आलोचना के प्रवर्तक मुहम्मद हुसेन आजाद ने लिखा है—

'खालिक बारी जिसका इख्तिसार (संक्षिप्त रूप) आज तक बच्चों का वजीफा है, कई बड़ी बड़ी जिल्दों में थी। इसमें फारसी की बहरों ने अव्वल असर किया और इसी से ये भी मालूम होता है कि उस वक्त कौन कौन से अलफाज मुस्तेमिल थे जो अब मतरूक (त्यक्त) हैं। इसके अलावा बहुत-सी पहेलियाँ अजीबो गरीब लताफतों से अदा की हैं। जिनसे मालूम होता है कि फारसी के नमक ने हिंदी के जाइके में क्या लुत्फ पैदा किया है[2]।' मुहम्मद हुसेन आजाद ने लिखा है—'भटियारी के लड़के के लिये खालिक बारी लिख दी[3]।'.

इस संबंध में एक प्राचीन और विश्वस्त प्रमाण भी हमें प्राप्त है। औरंगजेब के शासनकाल में मीर अब्दुल वासेह हाँसवी ने 'गरायबुल्लुगात' नामक कोश तैयार किया था। हिंदीशब्दों के संबंध में इस कोश से बहुमूल्य जानकारी मिलती है। सिराजुद्दीन अलीखाँ (जो खान आरजू के नाम से प्रसिद्ध हैं) की मृत्यु १७५६ ई० में हुई। इन्होंने हाँसवी के कोश में अनेक परिवर्धन और संशोधन किए। कुछ स्थलों पर खान आरजू ने हाँसवी से मतभेद प्रकट किया। हिंदी के 'उनों' शब्द के संबंध में खान आरजू ने जो कुछ लिखा है, वह हमारे काम का है। खालिक बारी की प्रतियों में इस शब्द के पाँच रूप मिलते हैं—उनों, ऊनों, उन्नों, उनमन, आनमन। इस शब्द

---

१. मसऊद हुसेन रजवी-हिंदुस्तानी पत्रिका, हिंदुस्तानी एकेडमी-प्रयाग, जनवरी १९३१ ई०।

२. मुहम्मद हुसेन आजाद —आबेहयात, लाहौर, १४ वाँ संस्करण, पृ० ७१।

३. वही, पृ० ८६।

का वास्तविक रूप 'उन्मन' है। उन्मन के संबंध में जान प्लेट्स ने लिखा है-'उन्मन=(सं० उद्+मन) बादल, घटाएँ[1]।' फैलन ने इस शब्द का अर्थ दिया है-अभ्र, घटाएँ। फैलन ने एक उदाहरण भी दिया है-'उगमन कानी उन्मन उभरा पाणी मूलन बरसेगा[2]।'

फैलन ने अपने उदाहरण के सिलसिले में इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि इस पंक्ति का संबंध किस बोली से है। उद्धृत पंक्ति का 'कानी' (=ओर) और 'बरसेगा' से प्रतीत होता है कि यह मेवाती और हरियाणी से संबंधित है। खालिक बारी में इस शब्द का प्रयोग निम्न पद में हुआ है—

खंजरो शम्शीरो समसामस्त तेग।
हिंदवी खाँडा कहावे उन्मन मेग ॥१६॥

खान आरज़ू ने अपने कथन की पुष्टि में इस पद की ओर संकेत किया है—

'मौल्लिफ गोयद के ईं गल्तस्त चरा के 'उनों' दर हिंदी अब्रे बुलंद शुदः रा गोयंद के अब्र शवद हिंदियाँ गोयंद—'बादल उठे,' याने अब्र पैदा शुद व सबब गलत ईं अस्त के अमीर खुसरो वलइर्रहमता दर रिसालए खुद 'उनों' मेग गुफ्तः व दर अक्सर लुगते फर्स मेग बमानी बुखार मज-कूर आवुर्दः व हालाँ के मेग बमानी अब्र नीज आमदः।'

'उनों' की भाँति 'छुरे' शब्द के प्रसंग में भी खालिक बारी की चर्चा की गई है। खालिक बारी का संबंधित पद इस प्रकार है —

जारोब सोहनी के सबदस्त टोकरा।
मिक़राज कतरनी के बुत्रद उस्तरा छुरा ॥२८॥

खान आरज़ू ने 'छुरा' के लिये लिखा है—'दर रिसालः मंजूमः अमीर खुसरो छुरा बमानी उस्तरः अस्त व मशहूर दर कसबात हिंदुस्तान नीज हमीं अस्त।'

---

१. जान प्लेट्स-ए डिक्शनरी आव् उर्दू, क्लासिकल हिंदी ऐंड इंग्लिश, प्रकाशक-सैंपसन लो मार्स्टन ऐंड कंपनी लि० लंदन, पब्लिशर टु दी इंडिया आफिस, प्रथम संस्करण १८८४ ई०।

२. फैलन एस. डब्लू-हिंदुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी-मुद्रण-दी मेडिकल हाल प्रेस बनारस, विक्रेता- ट्रबनर ऐंड कंपनी लंदन-१८७६ ई०।

खान आरज़ू से पहले भी लोगों का यह विश्वास था कि खालिक बारी अमीर खुसरो की रचना है। 'अल्लाह खुदाई' नामक पुस्तक की समाप्ति १६५० ई० में हुई। इसके रचयिता तजल्ली ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है—

शायद अज लुत्फे रहमत बारी।
रूहे खुसरो तमामीदम यारी॥

इसमें 'बारी' शब्द से खालिक बारी की ओर संकेत है। लेखक ने अमीर खुसरो की आत्मा से सहायता चाही है।

इन प्रमाणों के विरुद्ध केवल स्वर्गीय महमूद शीरानी ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि खालिक बारी अमीर खुसरो की रचना नहीं है। स्वर्गीय शीरानी अपनी विद्वत्ता के कारण जीवन भर समादृत रहे, अतः एक वर्ग ने शीरानी की बात स्वीकार कर ली। महमूद शीरानी ने खालिक बारी का रचयिता जियाउद्दीन खुसरो को माना है। शीरानी का मंतव्य मुख्य रूप से अंजुमन तरक्कीए उर्दू के पुस्तकालय में उपलब्ध खालिक बारी की पुरानी हस्तलिखित प्रति पर आधारित है। इस प्रति का लिपिकाल ११८७ हि० (१७७४ ई०) है। प्रति के आरंभ में छोटी सी भूमिका है, जिसमें लेखक ने अपना नाम, पुस्तक का नाम और लेखनतिथि का उल्लेख किया है। शीरानी ने इस भूमिका के तथ्यों को निम्नलिखित ढंग से सूचिबद्ध किया है—

(१) बच्चों को फारसी सिखाने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है।

(२) दैनिक व्यवहार के शब्द इस कोश में दिए गए हैं। पुस्तक में अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है। पुस्तक का नाम हिफ्जुल्लिसान है।

(३) बाबा इसहाक हलवाई के कहने पर यह कोश प्रस्तुत किया गया।

(४) लेखक का नाम खुसरो और लकब जियाउद्दीन है।

(५) लेखनकाल १०३१ हि० (१६२२ ई०) पुस्तक के अंतिम पद से पता चलता है। अंतिम पद इस प्रकार है—

खालिक बारी भई तमाम
दोहूँ जग रहिया खुसरो नाम

इस हस्तलिखित पुस्तक के अतिरिक्त शीरानी के पास कोई दूसरा प्रमाण नहीं है। खालिक बारी में प्रयुक्त 'दाम' और 'दमड़ा' शब्द के आधार पर उन्होंने इसकी रचना जहाँगीरकालीन मानी है। शीरानी लिखते हैं—

'यहाँ 'दाम' और 'दमड़ा' जिनका रिवाज अकबरी अहद में शुरु होता है, काबिले गौर है। अकबर के हाँ मालिया (राजस्व) की वसूली चाँदी के रुपये के बजाय ताँबे के जदीदुल रायज (नवप्रचलित) सिक्के 'दाम' के जरिये से होती थी।...दाम का वजन एक तोला आठ माशे और सात रत्ती या पाँच टाँक था। एक रुपये के चालीस दाम शुमार होते[1]।'

इसी लिये शीरानी इस निर्णय पर पहुँचते हैं—'बहरहाल दाम और दमड़ा अकबरी दौर से कब्ल नामालूम थे। जब खालिकबारी में ये अलफाज मौजूद हैं तो जाहिर है कि अकबर के बाद इसकी तालीफ (रचना) अमल में आई होगी। इसलिये दीबाचे (भूमिका) का ये बयान १०३१ हि० में तालीफ हुई मेरे नजदीक काबिले कुबूल है[2]।'

ऐतिहासिक दृष्टि से शीरानी की यह बात उसी तरह प्रामाणिक नहीं है, जिस प्रकार चिरियाकोटी की 'चीतल' या 'जैतल' वाली बात। कौड़ी अथवा दमड़ी का प्रचलन मुद्राओं में सबसे पुराना है।

शीरानी ने इस बात पर बल दिया है कि खालिक बारी नवागत ईरानियों और तूरानियों के लिये नहीं लिखी गई। उन्होंने अपनी बात की पुष्टि में यह तर्क दिया है कि चंगेजखाँ के आक्रमण के कारण अल्तमश के कार्यकाल में अनेक तूरानी-ईरानी परिवार भारत आए। चंगेजखाँ ६२४ हि० में मरा और खुसरो का जन्म ६५२ में हुआ। चंगेजखाँ की मृत्यु से पहले ईरानी-तूरानी परिवार भारत आ चुके थे। इस स्थिति में नवागंतुकों को खालिक बारी से क्या लाभ हुआ? शीरानी असंदिग्ध रूप से कहते हैं—'इधर खालिक बारी के सरसरी मुताले (अध्ययन) से वाजे (स्पष्ट) होता है कि ये तालीफ (रचना) हिंदुस्तानी बच्चों को फारसी-अरबी अलफाज सिखाने के वास्ते लिखी गई है।'[3] इस प्रकार के सरसरी मुताले के कारण ही शीरानी खालिक बारी को अधिक महत्व नहीं दे सके—'मेरा खयाल है कि हमने खालिक बारी को जरूरत से ज्यादा अहमियत दी है। तारीख व अदब में कहीं इसका जिक्र नहीं आता[4]।' इस पुस्तक के रचयिता के संबंध में उनका विचार है—'जियाउद्दीन खुसरो

---

१. मुहम्मद शीरानी-हिफ्जुल्लिसान, अंजुमन तरक्की-ए उर्दू, भूमिका पृ० ४८।
२. वही, पृ० ४८।
३. वही, पृ० १६।
४. वही, पृ० २८।

अगरचे शाइरी का दम भरता है, वह किसी खास शोहरत का मालिक नहीं। न उसका जिक्र किसी तजकिरे में आता है।...खालिकबारी के मुतालै से ये बात कयास में आती है कि इसका मुसन्निफ (लेखक) बाकमाल (कुशल) और साहबे फजीलत (प्रतिष्ठाप्राप्त) शख्स नहीं।...बजाहिर हालात एक मुअल्लम (अध्यापक) मालूम होता है।'[1] शीरानी ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि कुछ फारसी अरबी और हिंदी के पर्याय ठीक नहीं हैं। कहीं कहीं छंद की त्रुटियाँ हैं, यद्यपि शीरानी ने स्वयं स्वीकार किया है—'फारसी ओजान व बहरों (लय और छंद) का इस तरह यकायक हिंदी में रिवाज पा जाना अमलन (व्यावहारिक रूप से) दुश्वार है[2]।'

खालिक बारी के रचयिता के संबंध में परस्पर विरोधी तथ्यों के उल्लेख के पश्चात् अब बहुत सी बातों पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है। शीरानी ने खालिक बारी को निकृष्ट कोटि की महत्वहीन पुस्तक और उसके रचयिता को एक सामान्य अध्यापक तथा अकुशल कवि घोषित किया है। इस प्रकार की घोषणा उन आलोचनात्मक ग्रंथों के अनुरूप है जो हिंदी और उर्दू में ३०-३५ वर्ष पूर्व लिखे गए और जिनमें इधर या उधर निर्णय देने का आग्रह प्रबल दिखाई देता है। पर्याप्त सामग्री के अभाव में इस प्रकार की निर्णयात्मक आलोचना खतरनाक है। वास्तविकता यह है कि यदि खालिक बारी अमीर खुसरो की रचना न होकर जहाँगीरकालीन किसी खुसरो की रचना है, तब भी उसका महत्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। निस्संदेह इस प्रकार की पुस्तकों का या बड़े से बड़े आधुनिक शब्दकोश का काव्यात्मक महत्व नहीं होता, किंतु आज से चार सौ वर्ष पहले या सात सौ वर्ष पहले तीन विभिन्न भाषाओं के पर्याय एकत्रित करना सरल कार्य नहीं था। भाषाविज्ञान की दृष्टि से हिंदी और उर्दू दोनों के लिये खालिक बारी का समान महत्व है। खड़ी बोली के संज्ञा रूपों, विशेषणों और सर्वनाम के अतिरिक्त क्रिया के कालगत रूपों के संबंध में भी यह पुस्तक प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करती है। यदि इस पुस्तक की रचना जहाँगीर के समय में किसी व्यक्ति ने की है, तब भी खड़ी बोली के विकासक्रम को जानने

१. महमूद शीरानी—हिफ्जुल्लिसान, अंजुमन तरक्कीए उर्दू, पृ० ५६।
२. वही, पृ० १२।

में इससे सहायता मिलती है और यदि अमीर खुसरो ने इस पुस्तक को लिखा है तब तो महत्व बहुत बढ़ जाता है।

छंदों में कहीं कहीं जो लयभंग दिखाई देता है, वह संभवतः इसलिये कि फारसी छंदों में हिंदी के शब्द ग्रहण करने की क्षमता नहीं है। प्रत्येक भाषा के अपने छंद होते हैं। फिर खालिक बारी का प्रयास सबसे पहला था। तब भी अधिकांश छंद निर्दोष हैं। बहुत से छंदों में जिस प्रकार का नादसौंदर्य विद्यमान है, क्या वह उसके रचयिता को काव्यप्रणेता सिद्ध नहीं करता ? जिन शब्दों के पर्याय ठीक नहीं हैं, उनकी संख्या छह सात से अधिक नहीं है। इस बात का उल्लेख संबंधित शब्द के साथ किया गया है। लगभग छह सौ शब्दों में यह त्रुटि, विशेष रूप से उस काल के लिये नगण्य है। क्या इसके लिये लेखक प्रशंसा का पात्र नहीं है ?

सर्वप्रथम हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि खालिक बारी किस भाषा में लिखी गई है। इस पुस्तक में बहुत से पद फारसी में हैं। कुछ पद हिंदी में हैं। अधिकांश पदों को फारसी में देखकर यह संभावना की जा सकती है कि मूल पुस्तक फारसी में रही होगी। जब इस पुस्तक का प्रचलन भारतीय बच्चों में हुआ तो कुछ पद्यों की कठिन फारसी को हिंदी में परिवर्तित कर दिया गया। यह बात उल्लेखनीय है कि जो पद फारसी में हैं, वे सभी प्रतियों में अपरिवर्तित मिलते हैं। उनमें पाठभेद बहुत कम हुआ है। हिंदी में लिखे गए पदों में पाठभेद अधिक है और उनमें से कुछ सभी प्रतियों में उपलब्ध नहीं हैं। यह भी हो सकता है कि हिंदी के अधिकांश पद प्रक्षिप्त हों। प्रश्न यह है कि यदि यह पुस्तक भारतीय बालकों को फारसी सीखने के लिये लिखी गई है तो क्या यह संभव है कि अक्षरबोध होते ही कोई बालक इसकी भाषा को समझ सकता था ? वास्तविकता यह है कि खालिक बारी का लेखक सर्वत्र फारसी शब्द के पर्याय के लिये हिंदी शब्द खोजता है, वह हिंदी के लिये फारसी पर्याय खोजता दिखाई नहीं देता। यहाँ निम्नलिखित पद उदाहरण के लिये प्रस्तुत किए जाते हैं—

वले बिनौला बेदाँ चूँ बहिंदी अंदाजो ॥५६॥
दरख्तो शजर रा तुम रूख भाखो ॥६१॥
बहिंदी जबाँ खानः हम बैत घर है ॥७१॥

नहारो दिगर यौम रोजस्त जानो
बहिंदी जवाँ दिवस दिन रा पछानो ॥७७॥
हिमार ऊ गर तुरा पुरसंद चीस्त खरस्त
बहिंदवी बुवद गधा के बारबरस्त ॥१०१॥

इस बात का महत्व भी कम नहीं है कि हम खालिक बारी में प्रयुक्त शब्दों की सूची पर ध्यान दें। ये शब्द किन विषयों से संबंधित हैं? एक भारतीय बालक फारसी क्यों पढ़ता था? अधिकांश लोग राजकाज के लिये फारसी पढ़ते थे। कुछ लोग फारसी के साहित्य से प्रेम रखते थे? क्या खालिक बारी में प्रयुक्त फारसी शब्द इस उद्देश्य को पूरा करते हैं? भारतीय बालक अरबी से क्यों परिचित होना चाहता था? धार्मिक ग्रंथों से परिचय पाने के लिये। खालिक बारी इस आवश्यकता को पूरा नहीं करती। उसमें अधिकांश शब्द गृहोद्योगों, पशुओं और खेती बाड़ी से संबंधित हैं। एक भारतीय विद्यार्थी चर्खा, कपास, बिनौला, तकला, सूत आदि के लिये फारसी-अरबी पर्यायों को याद करके उनका प्रयोग कहाँ कर सकता था? खालिक बारी में प्रारंभिक पद को छोड़कर अरबी का एक भी शब्द धर्म से संबंधित नहीं है। फारसी का एक शब्द भी साहित्य से संबंधित नहीं, जुलाहे और किसान तो यहाँ अरब और ईरान से आए न थे जिनसे भारतीय लोगों को काम पड़ता।

यह बात अधिक तर्कसंगत प्रतीत होती है कि जो ईरानी और अरब तथा तुर्क भारत में आए थे, उनमें से कुछ का संबंध यहाँ के धंदों में लगे हुए लोगों और किसानों से पड़ता था। इसी लिये इन क्षेत्रों के व्यावहारिक शब्दों के लिये हिंदी के पर्याय प्रस्तुत किए गए।

खालिक बारी में प्रयुक्त हिंदी शब्द दिल्ली और उसके पास बोली जानेवाली भाषा से लिए गए हैं। आकारांत संज्ञाएँ ही नहीं आकारांत विशेषण भी प्रयुक्त हुए हैं, जो खड़ी बोली की विशेषता है। क्रिया के वर्तमान और भूतकालीन रूप भी आकारांत हैं। खालिक बारी के कुछ शब्द पंजाबी के प्रभाव को व्यक्त करते हैं, किंतु पंजाबी, सिंधी और लहँदी के विपरीत कुछ शब्दों में स्वरदीर्घता की प्रवृत्ति है जो राजस्थानी के प्रभाव को प्रकट करती है। खड़ी बोली में धीरे धीरे इस प्रवृत्ति का ह्रास होता गया। खालिक बारी में प्रयुक्त शब्दों में यह प्रवृत्ति क्षतिपूर्ति के कारण भी है—

काँकर (कंकर), ढाँकना (ढकना), पाथर (पत्थर) आदि।

मुंडा (बालक) और कुकड़ी (मुर्गी) खड़ी बोली में प्रयुक्त नहीं होते। ऐसे शब्द पंजाबी के प्रभाव को सूचित करते हैं। कुछ शब्द खड़ी बोली (ग्रामीण) से लिए गए हैं—जैसे उन्मन (बादल)।

कुछ शब्द पूर्वी प्रभाव के द्योतक हैं—ईठ, तोर मनुस, दुवार।

हिंदी शब्दों के विश्लेषण के लिये पुस्तक के अंत में एक परिशिष्ट दिया गया है। वहाँ इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इस विवेचन से यह बात स्पष्ट होती है कि खालिक बारी का रचयिता हिंदी की विविध शैलियों से परिचित था। खालिक बारी में कुछ शब्द—ईठ, बसीठ, डीठ—अपभ्रंश के निकट हैं, किंतु अधिकांश शब्द इस मत के परिचायक हैं कि इस पुस्तक के लेखन के समय भाषा का रूप स्थिर हो चुका था। बहुत थोड़े शब्दों पर क्षेत्रीय प्रभाव शेष रह गया था।

शीरानी ने जहाँगीरकालीन जिस खुसरो की चर्चा की है, क्या उसे अरबी, फारसी, तुर्की के अतिरिक्त हिंदी का इतना अच्छा ज्ञान प्राप्त था कि वह इनके ठीक ठीक पर्याय (तीन चार को छोड़कर) निर्धारित कर सके ? हिंदी से संबंधित बोलियों का जिसे ठीक ठीक ज्ञान हो ? यदि ये सब बातें उस आदमी में थीं तो फिर इस पुस्तक के अतिरिक्त उसकी अन्य रचना उपलब्ध क्यों नहीं है ? हम लोग जहाँगीरकालीन खुसरो के इस प्रकार के ज्ञान से अपरिचित हैं। जहाँगीरकालीन खुसरो का उल्लेख केवल अंजुमन तरक्कीए उर्दू की एक हस्तलिखित प्रति में मिलता है जब कि जनश्रुति और अन्य प्रमाण अमीर खुसरो को खालिक बारी का रचयिता सिद्ध करते हैं। औरंगजेब के शासनकाल में भी खालिक बारी अमीर खुसरो की रचना मानी जाती थी। जहाँगीर और औरंगजेब के बीच केवल एक पीढ़ी बीती थी। क्या इतनी जल्दी उस काल के खुसरो को भुला दिया गया ? कम से कम जनश्रुति इस बात की पुष्टि करती है कि अमीर खुसरो हिंदी से संबंधित बोलियों और लोकसाहित्य में रुचि लेते थे। एटा जिले का पटियाली गाँव खड़ी बोली के क्षेत्र से कुछ दूर पड़ता है। वहाँ की कुछ पूर्वीपन ली हुई हिंदी खुसरो की एक प्रकार से मातृभाषा थी। दिल्ली में उनका बहुत सा समय बीता था। कुछ समय वे मुलतान में रहे। अवध में दो वर्ष तक रहे। इन सब क्षेत्रों की भाषा का प्रभाव किसी न किसी रूप में खालिक बारी में विद्यमान है। फिर

खुसरो कुछ समय के लिये दौलताबाद भी आए जहाँ मराठी के संपर्क में खड़ी बोली की एक शाखा दक्खिनी विकसित हो रही थी। खालिक बारी में हेड़ा (मांस) शब्द का प्रयोग हुआ है, जो दक्खिनी में बहुत प्रयुक्त होता है। यह संभव है कि इस बहुप्रचलित पुस्तक में लोगों ने कुछ हेरफेर किया हो, कुछ पद बाद में चलकर मिला दिए गए हों, किंतु यह बात युक्तियुक्त प्रतीत होती है कि इसके अधिकांश पद अमीर खुसरो जैसे व्यक्ति के लिखे हुए हों। शीरानी ने पुस्तक के अंत का जो पद उद्धृत किया है, वह अधिकांश प्रतियों में इस प्रकार है—

मौलवी साहब सरन पनाह।
गदा भिकारी खुसरो शाह ॥११४॥

खालिक बारी—खालिकबारी में मुख्य रूप से फारसी और हिंदी के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। कहीं कहीं अरबी पर्याय हैं। केवल दो शब्दों का संबंध तुर्की से है। शब्दों की संख्या इस प्रकार है—

अरबी —२३७ तुर्की—२ फारसी—४८२ हिंदी—४७५

कुछ शब्द एक से अधिक बार आए हैं। कुछ पर्याय शब्द न होकर वाक्य खंड हैं। केवल फारसी के वाक्यखंडों को हिंदी के वाक्यखंडों में परिवर्तित किया गया है। फारसी धातुओं और क्रियापदों के हिंदी पर्याय दिए गए हैं, किंतु अरबी की कोई धातु, क्रियापद अथवा सर्वनाम नहीं है। इससे स्पष्ट है कि लेखक का ध्यान मुख्य रूप से फारसी हिंदी पर केंद्रित था। प्रसंगवश कहीं कहीं अरबी के पर्याय दे दिए गए हैं। अंत्यानुप्रास को ध्यान में रखकर शब्दचयन हुआ है। कहीं कहीं एक विषय से संबंधित एक साथ कई शब्द दिए गए हैं। प्रायः एक भाषा के लिये दूसरी भाषा का पर्याय दिया गया है, किंतु कहीं ऐसा नहीं भी किया गया है। कहीं तीनों भाषाओं के पर्याय हैं। इस कथन को निम्न सूची के आधार पर समझा जा सकता है—

अरबी	तुर्की	फारसी	हिंदी
खंजर समसाम	×	शम्शीर तेग	खाँडा

अरबी	तुर्की	फारसी	हिंदी
×	×	मेग	उन्मन
×	कजगीन	×	कडाही
रायत लिवा	×	नैजः	×
×	×	×	मूसल

कहीं एक ही शब्द के अधिक पर्याय हैं, कहीं कोई पर्याय दिया ही नहीं गया—

अरबी	तुर्की	फारसी	हिंदी
+	+	चीर सख्त	+
+	+	कोस दमामः	+
÷	+	कदू	+
+	+	खरबूजः	+

पर्याय देते समय किसी एक भाषा को आधार नहीं बनाया गया है। कहीं मुख्य शब्द फारसी का है, कहीं हिंदी का। कहीं पर्यायों का क्रम अ०—फा०—हिं०— है तो कहीं फा०— अ०— हिं०— और कहीं हिं०— फा०— अ०—।

प्रायः एक शब्द के लिये पर्याय में एक ही शब्द रखा गया है। दो तीन स्थलों पर हिंदी पर्याय के स्थान पर हिंदी में शब्दार्थ दिया गया है अथवा समासित शब्दों का उपयोग किया गया है। वाक्यांश के लिये वाक्यांश दिया गया है—

अ०	फा०		हिं०
+	किर्मे शबताब	=	कीड़ा चमकनाँ
+	बुरीदः	=	कटा हुआ
+	वेनिशीं मादर	=	बैठ री माई
+	कुजा मेमाँदी	=	तू कित रहिया

भारत में अंतर्भाषायी शब्दकोशों की समृद्ध परंपरा है। बेवर ने 'पारसी-प्रकाश' नामक ग्रंथ का संपादन किया है। 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' बहुत पुरानी पुस्तक है। प्रसिद्ध भाषाविद् मुनि जिनविजय ने प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत से संबंधित कुछ इसी प्रकार की पुस्तकों का पता चलाया है। खालिक बारी के अनुकरण पर उर्दू में कई फारसी-हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश लिखे गए जिनमें अल्लाह खुदाई (लेखक—तजल्ली,), हम्दबारी (लेखक—अब्दुल वासह, इस कोश में विषय के अनुसार शब्दावली है), निसाब मुस्तफा आदि का अध्ययन हिंदी को लक्ष्य में रखकर होना चाहिए। खड़ी बोली के प्राचीन लिखित रूपों का परिचय इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त हो सकेगा। इन कोशों के अतिरिक्त हिंदी (= उर्दू) में अंतर्भाषायी अध्ययन से संबंधित पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन भी होना चाहिए।

खालिक बारी में प्रयुक्त छंदों का अध्ययन अपने आप में स्वतंत्र विषय है। खुसरो संगीत में कितनी रुचि रखते थे, यह पहले बताया जा चुका है। उन्होंने फारसी छंदों में हिंदी शब्दों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। कुछ छंदों की लय और गीतात्मकता मुग्ध कर देती है। कुछ लंबे छंद हैं, कुछ छोटे।

मूल पाठ के लिये चार पुस्तकों से सहायता ली गई है। आधाररूप में पुस्तकसंख्या १ ग्रहण की गई।

चारों पुस्तकों के पाठांतर यथास्थान दिए गए हैं। जो पद संख्या १ में नहीं है, उसे पादटिप्पणी में दे दिया गया है। पुस्तकसंख्या २ के मूल पाठ का संपादन स्वर्गीय महमूद शीरानी ने बड़े परिश्रम से किया था। इसके संपादन में उन्होंने दस बारह प्रतियों से सहायता ली थी। पुस्तकसंख्या ४ का संपादन भी बहुत श्रम के साथ किया गया है। चारों प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

(१) खालिक बारी, प्रकाशक—मुहम्मद अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद रोशनखाँ। प्रकाशन का वर्ष १२४६ हि०, प्रेस का उल्लेख नहीं है।

(२) मजमूअए फारसी, प्रकाशक—काजी अब्दुल करीम बिन काजी नूर मुहम्मद, प्रकाशन के स्थान का उल्लेख नहीं। प्रकाशन वर्ष १३१८ हि०। इस संकलन में निम्नलिखित पुस्तकें हैं—

आमदन, करीमा, नामे हक, महमूद नामा, ऐनकाद नामा, खालिक बारी, दस्तूरुल सबीयान, तुगाते सईद, निसाबुल सबियान।

(३) हिफ्जुल्लिसान—मारूफ ब खालिक बारी, संपादक—प्रोफेसर हाफिज

महमूद शीरानी। प्रकाशक–अंजुमन तरक्कीए उर्दू, दिल्ली, प्रथम संस्करण (१९४४ ई०)।

(४) जवाहिरे खुसरवी–यानी मजमूअए रसायल हजरत अमीर खुसरो देहलवी, संपादक–मौलाना रशीद अहमद 'सालम', प्रकाशक–इंस्टिट्यूट अलीगढ़ कालेज, १९१८ ई०।

जिन पुस्तकों से सहायता ली गई है, उनका उल्लेख यथास्थान किया गया है। इन ग्रंथों की सहायता के लिये कृतज्ञ हूँ।

हैदराबाद में शाली बंडा नामक मुहल्ले में 'भारत गुणवर्द्धक संस्था' का एक बहुत उपयोगी पुस्तकालय है, जिसमें हिंदी, उर्दू, फारसी, मराठी, अँगरेजी आदि भाषाओं के नए पुराने अनेक मूल्यवान शब्दकोश हैं। खालिक बारी को इस रूप में प्रकाशित करने में इन कोशों से सहायता ली गई है। संस्था के संचालकों, विशेष रूप से श्री महबूब नारायण का मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने पुस्तकालय से संबंधित सभी सुविधाएँ मुझे प्रदान कीं।

घासी बाजार
हैदराबाद-२

श्रीराम शर्मा

खालिक बारी

खालिक बारी सिरजनहार।
वाहिद[1] एक बदा करतार ॥ १ ॥

रसूल[2] पैगंबर जान बसीठ।
यार[3] दोस्त बोले जा[4] ईठ ॥ २ ॥

१—वाहिद एक बड़ा करतार । पु० ३ ।
२—पदसंख्या २ के स्थान पर पद सं० ३ और पद सं० ३ के स्थान पर पद सं० २ । पु० ३ ।
३—यारो । पु० ३ ।
४—जो । पु० ४ ।

खालिक = उत्पत्तिकर्ता । बारी = स्रष्टा । वाहिद = एक, ईश्वर का नाम (ईश्वर एक है)। बदा = प्रारंभ, ईश्वर (प्रारंभकर्ता)। रसूल = ईश्वर का दूत (ईश्वरीय पुस्तक का वाहक)। पैगंबर = ईश्वर का संदेशग्राहक । जा = जिसे । बसीठ = दूत । ईठ = इष्ट, मित्र ।

खालिक बारी—अ०; सिरजनहर-हिं० । वाहिद – अ०; एक-हिं० । बदा—अ०; करतार – हिं० । रसूल—अ०; पैगंबर—फा०; बसीठ –हिं० । यार—अ०; दोस्त-फा०; ईठ—हिं० ।

इस्मे अल्लाह खुदा का नाँवँ।
गर्मा[1] है धूप सायः है छाँवँ॥३॥
राह तरीक सबील पछान[2]।
अर्थ तिहूँ[3] का मारग जान॥४॥
ससि[4] है मह नय्यिर खुरशीद।
काला उजला सियाह सफीद[5]॥५॥
पीला[6] नीला जर्द कबूद।
तानाँ[7] बानाँ तारो पूद।६॥

१—गर्मा धूप सायः है छाँवँ। पु० २, पु० ४।
गर्मा धूप सायः छाँ (व)। पु० ३।
२—पहचान। पु० १। पछान। पु० ३, पु० ४।
३—तिहू। पु० २, पु० ४।
४—ससीर मह नय्यर खुरशीद। पु० ३।
५—सपीद। पु० ३।
६—नीला पीला जर्द कबूद। पु० २, पु० ३, पु० ४।
७—ताना बाना तनस्तो पूद। पु० १।

इस्मे अल्लाह = ईश्वर का नाम, अल्लाह = सर्वगुणयुक्त ईश्वर। खुदा = ईश्वर, स्वयंभू। गर्मा = गर्मी, ताप। सायः = छाया। राह = मार्ग, ढंग। तरीक = मार्ग, ढंग, नियम, उपाय। सबील = मार्ग, ढंग, उपाय। मह = चाँद, 'माह' का संक्षिप्त रूप। नय्यिर = सूर्य (अत्यधिक प्रकाशक), चमकदार, स्पष्ट, चंद्रमा। खुरशीद = सूर्य। सियाह = काला। सफीद = श्वेत, शुभ्र, उजला। जर्द = पीला, पीत। कबूद = हल्का नीला रंग। तार = ताना, धागा, सूत, रूपा चाँदी आदि धातुओं का तार। पूद = बाना।

इस्म – अ०; नाँवँ – हिं०। अल्लाह – अ०; खुदा – फा०। गर्मा – फा०; धूप – हिं०। सायः – फा०; छाँवँ – हिं०। राह – फा०; तरीक, सबील – अ०; मारग – हिं०। ससि – हिं०; मह – फा०। नय्यिर – अ०; खुरशीद – फा०; काला – हिं०; सियाह – फा०। उजला – हिं; सफीद (सफेद) – फा०। ताना – हिं०; तार – फा०। बाना – हिं०; पूद – फा०।

कुव्वत[1] नीरू जोर बल आन।
सारिक दुज्द चोर है जान॥ ७॥
मर्द मनुष[2] जन है इस्तरी।
कहत[3] काल बवा है मरी॥ ८॥
दोश कालह[4] रात जो गई।
इम्शब आज रात जो भई॥ ९॥
तुरा बेगुफ्तम मैं तुज कहिया[5]।
कुजा बेमाँदी तूँ[6] कित रहिया[7]॥१०॥*

१—कुव्वत नीरू जोर परान। पु० ३।
२—मनस। पु० २, पु० ३, पु० ४।
३—कहत दुकाल वबा है मरी। पु० ३।
कहत अकाल वबा है मरी। पु० ४।
४—काल। पु० २, पु० ३। ५—कह्या। पु० २।
६—तू। पु० ४। ७—रह्या। पु० २।
* पदसंख्या ९-१२ के स्थान पर निम्नलिखित पद हैं—
अकरा बखाँ बेबीं तूँ देख
बेनवीस ईं रा इसकूँ देख। ९। पु० ३।
खुद परीदः रफ्त आपीं उड़ गया
सीस सर तन हिंदवी आमद किया। ११। पु० ३।

नीरू = शक्ति। आन = दूसरा। सारिक = चोरी करनेवाला। दुज्द = चोर। जन = स्त्री। काल = अकाल, दुर्भिक्ष। वबा = संसर्गजन्य रोग। मरी = महामारी, मृत्यु, मारना, प्लेग, विनाश। दोश = गत रात्रि, स्वप्न, संस्कृत दोषा = रात। इम्शब = आज की रात (इम् = अब, यह; शब = रात)। तुरा = तुझे बेगुफ्तम = मैंने कहा। कुजा = कहाँ। बेमाँदी = रहा (मांदन = रहना, थकना)। कित = कहाँ।

कुव्वत – अ०; नीरू,, जोर – फा०; बल – हिं०। सारिक – अ०; दुज्द – फा०; चोर – हिं०। मर्द – फा०; मनुष – हिं०। जन – फा०; इस्तरी – हिं०। कहत – अ०; काल – हिं०। वबा – अ०; मरी – हिं०। दोश – फा०; जो रात गई – हिं०। इम्शब – फा०; जो रात आज भई – हिं०। तुरा बेगुफ्तम – फा०; मैं तुज कहिया – हिं०। कुजा बेमाँदी – फा०; तूँ कित रहिया – हिं०।

बेया बिरादर आव रे भाई।
बेनिशीं[1] मादर बैठ[2] री माई ॥११॥*

वालिद बाप बेटा फर्जंद।
दुख्तर बेटी सिख है पंद ॥१२॥

सावः सरीचः ममोला जान।
कव्वा जाग कुलाग पछान[3] ॥१३॥

आतिश आग आब है पानी।
खाक धूल जो बाव उड़ानी ॥१४॥

---

* पु० २ में पद सं० ११, १२ नहीं हैं।

१—बेनिश। पु० ४।

२—बैस। पु० ३।

३—पहचान। पु० २।

बेया = तू आ (आमदन = आना)। बिरादर = भाई। बेनिशीं = तू बैठ (निशिस्तन = बैठना)। मादर = माँ। सिख = सीख। दुख्तर = पुत्री, दुहिता। पंद = उपदेश। सावः = एक पक्षी, ममोला। सरीचः = ममोला, एक पक्षी। जाग = कौआ। कुलाग = जंगली कौआ। बाव = वायु।

बेया बिरादर – फा०; आव रे भाई – हिं०। बेनिशीं मादर – फा०; बैठ री माई – हिं०। वालिद – अ०; बाप – हिं०। बेटा – हिं० फर्जंद – फा०। दुख्तर – फा०; बेटी – हिं०। सिख – हिं० पंद – फा०। सावः – अ०; सरीचः – फा०; ममोला – हिं०। कव्वा – हिं०; जाग, कुलाग – फा०। आतिश – फा०; आग – हिं०। आब – फा०; पानी – हिं०। खाक – फा०; धूल – हिं०।

मुश्को[1] काफ़ूरस्तो[2] कस्तूरी कपूर ।
हिंदवी आनंद शादी ओ सुरूर ॥१५॥[3]

अस्प घोड़ा फील हाथी शेर सीह ।
गोश्त हेड़ा चर्म चमड़ा शह्म पीह ॥१६॥

१—मुश्क। पु० २, पु० ४।
२—काफ़ूरस्त। पु० ४।
३—मुश्क और काफ़ूर है कस्तूरी कपूर, हिंदी का आनंद शादी और सुरूर। पु० २।

मुश्क = कस्तूरी। काफ़ूर = कपूर, सं० कर्पूर के तद्भव रूप कपूर को फारसी तथा अरबी दोनों ने ग्रहण किया है। कुरान में जो भारतीय शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उनमें 'काफ़ूर' शब्द भी है[1]। शादी = हर्ष। सुरूर = हर्ष, हलका नशा। अस्प = घोड़ा। हेड़ा = मांस, शरीर। दक्खिनी में इस शब्द का प्रयोग हुआ है।[2] चर्म = चर्म, फारसी में संस्कृत 'चर्म' शब्द का तत्सम रूप प्रचलित है। शेर = व्याघ्र। सीह = सिंह। शहम = चरबी। पीह = चरबी।

मुश्क—फा०; कस्तूरी – हिं०। काफ़ूर – अ०, फा०; कपूर – हिं०। आनंद – हिं०; शादी – फा०; सुरूर – अ०; अस्प – फा०; घोड़ा – हिं०। फील – फा०; हाथी – हिं०। शेर – फा०; सीह – हिं०। गोश्त – फा०; हेड़ा – हिं०। चर्म – फा०; चमड़ा – हिं०। शह्म – अ०; पीह – फा०।

१—मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी—अरब और भारत का संबंध, प्रकाशक—हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृ० ५८,५९।

२—अपना 'हेडा' अपै खाना, अपना लहू अपै पीना, तो दुनिया में भला आदमी होकर जीना। बुरे आदमी बहा-फुसला भला जानते, दगा दे जानते। वजही—सबरस, पृ० ३९।

शीर[1] जुगरात आमदः दूगो[2] दही।
रौगन आमद घी ओ दोग आमद मही ॥१७॥

जर[3] बुबद सोना सीम चीतल नुक्रः रूपा।
जामः कप्पड़[4] टाट तप्पड़[5] दब्बः[6] कूपा। १८॥

१—शीरो। पु० ३।
२—दूदो। पु० ३।
३—जर बुबद सुन्ना व सीमो नुक्रः रूप, जामः कप्पड़ टाट तप्पड़ दब्ब कूप। २०। पु० ३।
४—कपड़ा। पु० ४।
५—टप्पड़। पु० ४।
६—दिब्बा। पु० ४।

शीर=दूध। जुगरात=दही। रौगन = घी। दोग=छाछ। मही=छाछ। जर = स्वर्ण। बुवद=हुआ। सीम = चाँदी। चीतल = चाँदी, एक सिक्का, (संस्कृत में 'चित्र' शब्द का अर्थ चमकदार, स्पष्ट, उज्ज्वल, चकाचौंध करनेवाली वस्तु। 'रूप' शब्द की भाँति 'चित्र' शब्द भी चाँदी के लिये प्रयुक्त)। नुक्रः = चाँदी। जामः = वसन (पहनने का कपड़ा)। टाट = सन का कपड़ा, बोरिया। तप्पड़ = टाट की गद्दी। दब्बः = चमड़े का बर्तन, घी या तेल रखने का चमड़े का कूपा। कूपा = घी तेल रखने का चर्मपात्र।

शीर – फा०; दूध – हिं०। जुगरात – फा०; दही – हिं०। रौगन – अ०; घी – हिं०। दोग – फा०; मही – हिं०। जर – फा०; सोना—हिं०। सीम, नुक्रः – फा०, चीतल, रूपा – हिं०। जामः – फा०; कप्पड़ – हिं०। टाट – हिं०; तप्पड़ – हिं०। दब्बः – फा०, कूपा – हिं०

खंजरो शम्शीरो[1] समसामस्त तेग[2] ।
हिंदवी खाँडा कहावे उन्मन[3] मेग ॥१६॥

खाल तिल बाशद गिलेवाजो जगन ।
चील्ह[4] है दरगोश कुन गुफ्तारे मन ॥२०॥

अर्ज धरती फारसी बाशद जमीं ।
कोह दर हिंदी[5] पहाड़ आमद यकीं ॥२१॥

१—शम्शीर । पु० ४ ।
२—समसामस्तो तेग । पु० २ ।
३—आनमन । पु० १ ।
४—चील्ह । पु० २, पु० ३, पु० ४ ।
५—हिंदी । पु० ३ ।

खंजर = छुरी, बड़ा चाकू, भुजाली । शम्शीर = कृपाण, खड्ग, ऐसी तलवार जो बीच में झुकी हुई हो । समसाम = ऐसी तलवार जो झुके नहीं, काटदार तलवार । तेग = कृपाण, खड्ग । खाँडा = खड्ग । उन्मन = बादल, मेघ[1] । मेग = मेघ । बाशद = हो । गलेवाज = चील । जगन = चील । दरगोश कुन गुफ्तारे मन = मेरी बात सुनो । अर्ज = पृथ्वी । कोह = पर्वत । दर हिंदी = हिंदी में । आमद = आगत, यकीं = निश्चित ।

खंजर, समसाम – अ०, शम्शीर, तेग - फा०; खाँडा – हिं० । उन्मन – हिं०; मेग – फा०; खाल – अ०; तिल – हिं० । गिलेवाज, जगन – फा०; चील्ह – हि० । अर्ज – अ०; – धरती – हिं०; – जमीं – फा० । कोह – फा०; पहाड़ – हिं० ।

१—उन्मन—(सं० उद + मान) बादल घटाएँ—जान प्लेट्स्
उन्मन—अँबर, घटाएँ—उमगन कानी उन्मन उभरा पाणी मूलन बरसेगा—फैलन ।

काहो[1] हैज़ुम घास काठी जानिये।
ईंट माटी खिश्तो[2] गिल पहचानिये[3] ॥२२॥

देग हाँडी कफचः डोई बेखता।
ताबः कजगानस्त[4] कड़ाही[5] ओ तवा ॥२३॥

संग पाथर जानिये बर कुन उठाव।
अस्पे मीराँ हिंदवी घोड़ा चलाव ॥२४॥

१—काह। पु० ३, पु० ४।
२—खिश्त। पु० ३।
३—पछानिये। पु० ३।
४—कजगानस्तो। पु० ३। कजकानस्त। पु० ४।
५—कड़ाई। पु० ३।

काह = घास, तृण। हैज़ुम = जलाने की लकड़ी, इंधन। काठी = काठ, लकड़ी। खिश्त = ईंट। गिल = मिट्टी। देग = छोटे मुँह और बड़े पेट का ताँबे का बर्तन – इसमें चाँवल, खिचड़ी आदि पकाते हैं। कफचः = चमचा, एक प्रकार का चमचा जिसमें छेद होता है। डोई = दर्वी, चम्मच। ताबः = तवा, लोहे का बर्तन, जिसे हमाम पर लगाते हैं (ताफ्तन = जलाना)। कजगान = बड़ी देगची, कड़ाही (शुद्ध—कज़गान)। संग = पत्थर। बरकुन = ऊपर उठाओ (बर कर्दन = उठाना)। अस्पे मीराँ = श्रेष्ठ घोड़ा।

काह – फा०; घास – हिं०। हैज़ुम – फा०; काठी – हिं०। ईंट – हि० = खिश्त – फा०। माटी – हिं०; गिल = फा०। देग—फा०; हाँडी – हिं०। कफचः – फा०; डोई – हिं०। ताबः – फा०; तवा – हिं०। कजगान (शुद्ध—कज़गान) – तु०; कड़ाही – हिं०। संग – फा०; पाथर – हिं०। बरकुन – फा०; उठाव (उठाओ) – हिं०। अस्पे मीराँ – फा०; घोड़ा – हिं०।

मूश चूहा गुर्बः[1] बिल्ली मार नाग।
सोजनो रिश्तः बहिंदी सुई[2] ताग ॥२५॥
चालनी[3] गिर्बाल चाकी आसिया।
देगदाँ चूल्हा[4] व कंदू कोठिया ॥२६॥
सर्द सीला गर्म ताता चीर[5] सख्त।
नर्म कँवला नेश डंक[6] औरंग तख्त ॥२७॥

१—गव्रः। पु० ३।
२—सूई ओ। पु० ३।
३—छालनी। पु० ४।
४—चूला। पु० ३।
५—चीरु। पु० ३।
६—डंख। पु० ३।

मूश = मूषण, चूहा। गुर्बः = बिल्ली। मार = सर्प। सोजन = सुई। रिश्तः = तागा, संबंध, नाता, काता हुआ। गिर्बाल = चलनी। आसिया = चक्की। देगदान = चूल्हा। कंदू = कोठी। *कोठिया = अन्न रखने का कोठ, मिट्टी का बना हुआ एक बड़ा बर्तन, कुठला। सर्द = ठंडा, शीतल। सीला = शीतल। गर्म = उष्ण। ताता = तप्त, उष्ण, गरम। चीर (चीरः) = शक्तिशाली, वीर। कँवला = कोमल। नेश = डंक। औरंग = राजसिंहासन। तख्त = बड़ी चौकी, राज्य, चारपाई।

मूश—फा०; चूहा – हिं०। गुर्बः – फा०; बिल्ली – हिं०। मार – फा०; नाग – हिं०। सोजन – फा०; सुई – हिं०। रिश्तः – फा०; ताग – हिं०। चालनी – हिं०। गिर्बाल – अ०। चाकी – हिं०; आसिया – फा०। देगदान – फा०; चूल्हा – हिं०। कंदू – फा०; कोठिया – हिं०। सर्द – फा०; सीला – हिं०। गर्म – फा०; ताता – हिं०। चीर (चीरः) फा०; सख्त – फा०; नर्म – फा०; कँवला – हिं०। नेश – फा०; डंक – हिं०। औरंग – फा०; तख्त – फा०।

---

*—मिट्टी का बना हुआ बड़ा बर्तन, जिसमें अनाज रखा जाता है; प० ई० डि०।

३

जारोब[१] सोहनी के सबदस्त टोकरा।
मिक्राज कतरनी के बुवद उस्तरा छुरा ॥ २८ ॥

उम्मीद आस बाशद नाउमीद[२] है निरास।
चर्खो[३] फलक सिपह्र बुवद आसमाँ अकास ॥२९॥

रानो फखिज[४] के जाँघ बुवद नाज लाड़ला।
उस्तुखाँ हाड़ बाशद[५] दीवानः बावला[६] ॥३०॥

१—जारोब सोहनी ओ सबदहस्त टोकरा। ३३। पु० २।
२—नौमीद। पु० ३।
३—चर्खो सिपहर हम फलको आस्माँ अकास। ३५। पु० ३।
४—मखिज। पु० २।
५—बाशदो। पु० ४।
६—इसके स्थान पर यह पाठ उचित प्रतीत होता है—
नै नेजः बस चोब-लकड़ उस्तुखाँ हाड़।
दीवानः बावला (व) दिगर गम्ज-नाज लाड़। ३८। पु० ३।

जारोब = झाड़ू, बुहारी। सोहनी = झाड़ू, बुहारी। सबद = डलिया। अस्त = है। मिक्राज = कैंची, कतरनी। कतरनी = कैंची। बुवद = हुआ। उस्तुरा (अस्तुरः) हजामत बनाने का छुरा। बाशद = हो, संभवतः। नाउमीद = निराश। चर्ख = आकाश, चक्र, चक्कर, रहट, चाक। फलक = आकाश। सिपह्र = आकाश। आस्माँ (आस्मान) = आकाश। रान = जंघा। फखिज = जंघा। बुवद = हुआ। नाज = हाव भाव, अभिमान, गर्व। उस्तुखाँ = हड्डी। दीवानः = दीवाना, पागल।

जारोब – फा०; सोहनी – हिं०। सबद – फा०; टोकरा – हिं०। मिक्राज – अ०; कतरनी – हिं०। उस्तुरा – फा०; छुरा – हिं०। उम्मीद – फा०; आस – हिं०। नाउमीद – फा०; निरास – हिं०। चर्ख, सिपह्र, आस्माँ – फा०; फलक – अ०; अकाश – हिं०। रान – फा०; फखिज – अ०; जाँघ – हिं०। नाज – फा०; लाड़ला – हिं०। अस्तुखाँ – फा; हाड – हिं०। दीवानः – फा०; बावला – हिं०।

बादः शराबो रावको[1] सह्बा मयस्तो[2] मद।
***गर जुर्अः जाँ खुरी तू कुनी कारे नेक[3] बद ॥३१॥**
रायत[4] लिवाए नैजः बुवद् सिपरस्त ढाल।
लबे आब नदी हौज दिगर सरवरस्त ताल ॥३२॥
ताऊस[5] मोर बाशदो दुर्राज तीतरा।
खूबो निको भला व बदो जिश्त है बुरा ॥३३॥

१—रावक। पु० २!
२—मयस्त। पु० ४।
३—नेको। पु० २, पु० २।
४—रायत लवा अलम बुवदो नैजः दस्त भाल। ३७। पु० ३। रायत लिवाए ओ नेजः बुवद सिपरस्त ढाल। पु० ४।
५—ताऊस मोर (कहिए) दुर्राज तीतरा। ३६। पु० ३।

बादः = मदिरा, सुरा। शराब = मदिरा। रावक = मद्य, मदिरा। सह्बा = लाल रंग की सुरा, मदिरा। मय = मदिरा। मद = सुरा, मद्य। *यदि तू उसकी—मदिरा की—एक घूँट पीएगा तो अच्छा काम भी बिगाड़ देगा। रायत = पताका। लिवा = ध्वजा। नैजः = बर्छी, भाला, एक प्रकार की ध्वजा—इस ध्वजा में बाँस की लंबी छड़ी में रंगीन झंडे बँधे होते हैं। सिपर = ढाल, कवच। अस्त = है। लबे आब = नदी, कुंड। हौज = कुंड। दिगर = दूसरा, अन्य। सरवर = सरोवर, तालाब। ताल = तालाब, बड़ा जलकुंड। ताऊस = मयूर। बाशद = हो। दुर्राज = तीतर। तीतरा = तीतर। खूब = सुंदर, उत्तम, शुभ, अच्छा, सुदर्शन। निको = सुंदर, उत्तम। बद = बुरा, निकृष्ट, अशुभ, दुराचारी। जिश्त = निकृष्ट, हीन, बुरा।

बादः, रावक मय – फा०; शराब, सह्बा – अ०; मद – हिं०। रायत, लिवा – अ०; नैजः – फा०। सिपर – फा०; ढाल – हिं०। लबे आब – फा०; नदी – हिं०। हौज – अ०; सरवर – हिं०। ताल – फा०। ताऊस – अ०; मोर – हिं०। दुर्राज – अ०। तीतरा – हिं०। खूब, निको – फा०; भला – हिं०। बद, जिश्त – फा०; बुरा – हिं०।

दैहीमो ताजो अफ्सर दर हिंदवी मुकट।
जागे बुरीदः पर रा तु[1] जान काग कट ॥३४॥
गैहानो[2] दहरो गेती दुनिया दिगर जहाँ।
दर हिंदवी तू प्रिथमी[3] संसार जग बेदाँ ॥ ३५ ॥
शबगीरो[4] लैल[5] शब तू बेदाँ रात रैन निस।
फानीजो कंदो शक्कर[6] गुड़ जान जहर[7] बिस ॥ ३६ ॥

१—तूँ।
२—गैहानो दहर दुनिया गेती दिगर जहाँ। ४१। पु० ३।
३—प्रिथी। पु० ३। पृथवी पु० ४।
४—शब्रगीर। पु० ३।
५—लैलो। पु० ४।
६—शक्कर। पु० ४।
७—जहरो। पु० ३।

दैहीम = राजमुकुट। ताज = मुकुट। अफ्सर = मुकुट, सरदार, पदाधिकारी। दर हिंदवी = हिंदी में। जागे बुरीदः परं रा = पर कटे कौए का। जाग = कौआ। बुरीदः कटा हुआ। पर रा = पंख का। गैहान = संसार। दहर = संसार, युग, काल। गेती = संसार, युग। प्रिथ्मी = पृथ्वी। दुनिया = संसार, मर्त्यलोक। जहाँ = संसार, विश्व। दर हिंदवी = हिंदी में। शबगीर = रात का पिछला पहर, आधी ढलने के बाद की रात। लैल = रात। शब = रात, यामिनी। फानीज = दानेदार शक्कर, सफेद शक्कर। कंद = खाँड़, शक्कर, एक प्रकार की मिठाई, मिस्री। बिस = विष। बेदाँ = तुम जानो।

दैहीम, ताज – फा०; अफ्सर – अ०; मुकट – हिं०। जाग – फा०; कौआ – हिं०। बुरीदः – फा० – कट – हिं०। गैहान, गेती, जहाँ – फा०; दहर, दुनिया – अ०; प्रिथमी, संसार, जग – हिं०। शब्रगीर, शब्र – फा०; लैल – अ०; रात, रैन, निस – हिं०। फानीज, कंद – अ०; शकर – फा०; गुड़ – हिं०। जहर – फा०; बिस – हिं०।

जानो रवान[1] जीव तनो[2] काल्बुद कया।
आदत चो[3] खूए सहज बेदाँ आतिफत मया ॥ ३७ ॥
दिल है हिया ओ खातिरो[4] अंदेशः चीतना।
मेहमानो जैफ रा तू बेदानी के पाहुना ॥ ३८ ॥
उम्मुल किताब फातिहः अलहम्द जाको[5] नाँव।
उम्मुल कुरा तू मक्का बेदाँ कर्यः देह गाँव[6] ॥ ३९ ॥

१—रवानो। पु० २, पु० ३, पु० ४।
२—तन। पु० ३।
३—जो। पु० ३।
४—खातिर। पु० ३।
५—जो कैं। पु० ३।
६—गावँ। पु० २।

जान = प्राण, आत्मा, जीवन, शक्ति। रवान = आत्मा, जीवन। तन = शरीर, व्यक्ति, पुरुष। काल्बुद = शरीर, अस्थिपंजर, ढाँचा। कया = काया, शरीर। चो = जो, यदि, जिस समय। खू = स्वभाव, प्रकृति। बेदाँ = जानो। आतिफत = कृपा, दया। मया = ममता, अपनापन, प्यार। खातिर = विचार, हृदय, सत्कार, निमित्त। अंदेशः = चिंता, शंका, भय। चीतना = सोचना, चिंतन करना। जैफ = आगंतुक, अतिथि। पाहुना = अतिथि। उम्मुल किताब = पुस्तकों की माता (लाक्ष० कुरान)। फातिहः = 'फातिहः' नामक कुरान की पहली सूरत। अलहम्द = अलहम्द नामक कुरान, ईश्वर ही प्रशंसनीय है, पुस्तकों की माता (कुरान) का प्रारंभ 'अलहम्द' नामक सूरे से हुआ है। उम्मुल कुरा = पृथ्वी की माता, नगरों की माता (लाक्ष० मक्का)। कर्यः = गाँव। देह = गाँव।

जान, रवान – फा०; जीव – हिं०। तन, काल्बुद – फा०; कया – हिं०। आदत – अ०; खू – फा०; सहज – हिं०। आतिफत – अ०; मया – हिं०। दिल – फा०; हिया – हिं०। खातिर – अ०; अंदेशः – फा०; चीतना – हिं०। मेहमान – फा०; जैफ – अ०; पाहुना – हिं०। कर्यः – अ०; देह – फा०; गाँव – हिं०।

हिर्बा गिरगिट कजदुम बिच्छू रासू न्यौल[1]।
सग है कुत्ता माही मछली लुक्मः कौल ॥ ४० ॥

दुश्मन बैरी कोस दमामः बाराँ मेंह।
इश्क[2] मुहब्बत आशिक मित्तर[3] जानी नेह ॥ ४१ ॥

ताम[4] सवादो तआम खुरिश जो कहिये खाना।
आलिम दाना हिंदवी बोल जो कहिये स्याना ॥ ४२ ॥

१—नौल। पु० ३।
२—इश्को। पु० ३।
३—मित्थर। पु० ३।
४—आलिम दाना हिंदवी बोल जो कहिये सया (नाँ)।
ताम सवाद तआम खुरिश जो कहिये खानाँ। ४८। पु० ३।

हिर्बा = गिरगिट, कृकलास। कजदुम = बिच्छू, (टेढ़ी पूँछवाला)। रासू = नेवला, नकुल। सग = कुत्ता। माही = मछली। लुक्मः = ग्रास। कौल = कवल, ग्रास। कोस = नगारा, धौंसा। दमामः = बड़ा नगारा। बाराँ = वर्षा, वर्षाजल। आशिक = प्रेमी। मित्तर = मित्र। जानी = घनिष्ठ, गहरा (मित्र)। नेह = स्नेह। ताम = स्वाद, जायका। सवाद = स्वाद। तआम = भोजन, खुराक। आलिम = विद्वान्। दाना = बुद्धिमान।

हिर्बा – फा०; गिरगिट – हिं०। कजदुम – फा०; बिच्छू – हिं०। रासू – फा०; न्यौल – हिं०। सग – फा०; कुत्ता – हिं०। माही – फा०; मछली – हिं०। लुक्मः – अ०; कौल – हिं०। दुश्मन – फा०; बैरी – हिं०। कोस – फा०; दमाम – फा०। बाराँ – फा०; मेंह – हिं०। इश्क – अ०; मुहब्बत – अ०; नेह – हिं०। आशिक – अ०; मित्तर – हिं०। ताम – अ०; सवाद – हिं०। तआम– अ०; खुरिश – फा०; खाना – हिं०। आलिम – अ०; दाना – फा०; स्याना – हिं०।

सीनः छाती पिस्ताँ चूची बीनी नाक।
जाहिर पैदा परगट[1] दीसे[2] ताहिर पाक ॥ ४३ ॥

तप लर्जः दर हिंदवी आमद जूड़ी ताप।
दर्दे सरामद सिर की पीड़ा तग है धाप ॥ ४४ ॥

हामः काचक माँझा[3] कपार[4] जा कहिये ठाँवँ।
चूँ दर हिंदवी मरा बेपुर्सी खोपड़ी नाँवँ[5] ॥ ४५ ॥

१—परघट। पु० २, पु० ४।
२—डीठे। पु० २। डीटे। पु० ४।
३—मंजः। पु० ३। माँझ। पु० ४।
४—कपाल। पु० ३।
५—हामः काचक मंजः कपाल जाए है ठाँउ।
चूँ तू बहिंदवी मरा बेपुर्सी खोपड़ बताँउ। ५१। पु० ३

सीनः = वक्षस्थल, छाती, स्तन। पिस्ताँ = उरोज, छाती। बीनी = नासिका। जाहिर = व्यक्त, प्रत्यक्ष, प्रकट। पैदा = प्रसूत उत्पन्न, प्राप्ति। परगट = प्रकट। ताहिर = पवित्र, पुनीत। पाक = पवित्र। तप लर्ज = जाड़े का ज्वर, मलेरिया। दर्दे सर = सिरदर्द। आमद = आया। तग = भाग-दौड़। धाप = एक ही साँस में जिस दूरी को पार किया जाय। लगभग आधा मील की दूरी, अंतर (दूरी)। हामः = कपाल, माथा। काचक = खोपड़ी (अस्थि)। माँझा = माथा, कपाल (इस अर्थ में माँझ का प्रयोग अन्यत्र अप्राप्त)। जा = जगह। चूँ दर हिंदी मरा बेपुर्सी = जब तुम मुझसे पूछते हो।

सीनः – फा; छाती – हिं०। पिस्ताँ (पिस्तान) – फा०; चूची–हिं०। बीनी – फा०, नाक – हिं०। जाहिर – अ०, पैदा – फा०; परगट–हिं० ताहिर – अ०; पाक – फा० तपलर्जः – फा०; जूड़ीताप – हिं०। दर्देसर – फा०; सिर की पीड़ा – हिं०। तग – फा०; धाप (धाय)–हिं०। हामः – अ०; काचक – फा०; माँझा, कपार – हिं०। जा – फा०; ठाँवँ – हिं०।

दुद[१] काजल सुर्मः अंजन कीमत मोल।
चाकर सेवक बंदः[२] चेरा[३] कौल सो बोल ॥ ४६ ॥
मिस है ताँबा रोईं कासः[४] आहन लोह।
तेशः बसोला तबर कुल्हाड़ा[५] उज्र[६] दिरोह[७] ॥ ४७ ॥
गार[८] मगाक जो गड्ढा कहिये कुँव्वाँ चाह।
दरिया बहर समंदर कहिये जाकी नाँही थाह ॥ ४८ ॥

१—दूध। पु० ३।
२—बंदा। पु० ३।
३—चेला। पु० ३।
४—काँसा। पु० ३। काँसः। पु० ४।
५—कुल्हारा। पु० ३।
६—गदर। पु० ४।
७—दुरोह। पु० ४।
८—गोग मुगाक जो गहरा कहिये कुव्वा चाह।
दरिया बहर समंदर (कहिये) जिसकी ना हैं थाह। ५६। पु० ३।

दूद = धुँआ, धुंद। सुर्मः = सुर्मा। बंदः = बंदा, सेवक, भक्त, दास। कौल = बचन, कथन। मिस = ताम्र। रोईं = काँसे का बना हुआ। कासः = प्याला। आहन = लोहा। तेशः = कुदाल। तबर = कुल्हाड़ा, फरसा। उज्र = आपत्ति, एतराज। दिरोह = द्रोह। गार = गहरा गड्ढा, गर्त, पर्वत की कंदरा। मगाक = गर्त, गड्ढा। कुव्वा = कूप। चाह = कुआ, कूप, गर्त। दरिया = नदी, समुद्र। बहर = समुद्र। समंदर = समुद्र।

दूद – फा०; काजल – हिं। सुर्मः – फा०; अंजन – हिं०। कीमत – अ०; मोल – हिं०। चाकर – फा०; सेवक – हिं०। बंदः – फा०; चेरा – हिं०। कौल – अ०; बोल – हिं०। मिस – फा०; ताँबा – हिं०। रोईं – फा०; कासः – फा०। आहन – फा०; लोह – हिं०। तेशः – फा०; बसोला – हिं०। तबर – फा०; कुल्हाड़ा – हिं०। उज्र – अ०; दिरोह (द्रोह)–हिं०। गार – अ०; मगाक – फा०; गड्ढा–हिं०। कुँव्वाँ – हिं०; चाह – फा०। दरिया – फा०; बहर – अ०; समंदर – हिं०।

गंदुम गेहूँ नखुद चना शाली है धान।
जुर्रत जूनरी[1] अदस मसूर[2] बर्ग है पान ॥ ४९ ॥
अब्रू भौएँ[3] सबलत मूछें[4] दंदाँ दाँत।
रीश मुहासिन डाढ़ी[5] कहिये रोदः आँत ॥ ५० ॥
खद रुख्सार हिंदवी बोल जो कहिये गाल।
आज इम्रोज बेदाँ फर्दा रा तू बेगोई काल ॥ ५१ ॥

१—जवानी। पु० ३।
२—मसूरी। पु० ३।
३—भुँवाँ। पु० ३।
४—मूछाँ। पु० ३।
५—दाड़ी। पु० ३।

गंदुम = गेहूँ। नखुद = चना। शाली = धान। जुर्रत = जवार। जूनरी= जवार - जौंडी, जूनरी, जुन्हार, जुँहारी सब जवार के पर्यायवाची। अदस = मसूर। बर्ग = पत्ता। अब्रू = भौंह। सबलत = मूँछ, डाढ़ी-मूछ। दंदाँ = दाँत। रीश = डाढ़ी। मुहासिन = डाढ़ी-मूछ, सौंदर्य, आकर्षण। रोद = ताँत, तंतु, आँत। खद = कपोल, गाल। रुख्सार = कपोल, गाल। इम्रोज = आज, आज का दिन, यह दिन। बेदाँ = जानो। फर्दा रा = आनेवाले दिन को। बेगोई = कहो। काल = कल।

गंदुम – फा; गेहूँ – हिं०। नखुद – फा०; चना – हिं०। शाली – फा०; धान – हिं०। जुर्रत – फा०; जूनरी – हिं०। अदस – फा०; मसूर – हिं। अब्रू – फा०; भौएँ – हिं०। सबलत – अ०; मूँछें – हिं०। दंदाँ – फा०; दाँत – हिं०। रीश – फा०; मुहासिन – अ०; डाढ़ी – हिं०। रोदः – फा०; आँत – हिं०। खद – अ०; रुख्सार – फा०; गाल – हिं०। आज – हिं०; इम्रोज – फा०। फर्दा – फा०; काल – हिं०।

मिंजलस्तो दास दाँती[१] जाको[२] नाँवँ।
तुर्ब मूली दार सूली जाए[३] ठाँवँ[४] ॥ ५२ ॥
सर्द[५] सीतल गर्म ताता चीरः सख्त।
नर्म पोला नेश डंक औरंग तख्त ॥ ५३ ॥
गल्लः[६] अफ्शाँ छाज है अफ्शाँ पछोर[७]।
शोए शौहर हिंदवी है मनस तोर[८] ॥ ५४ ॥
ढाकनी[९] सरपोश चपनी जानिये।
है धुआँ दूदो दुखाँ पहचानिये ॥ ५५ ॥

१—दराँती। पु० ३।
२—जो के। पु० ३।
३—जा है। पु० ३। जाए। पु० ४।
४—ठाँव। पु० ३।
५—यह पद पहले आ चुका है। देखिए पद सं० २७।
६—गल्लः अफ्शाँ छाज मी अफ्शाँ पछोड़।
जोइ शौहर हिंदवी है मनस लोड़। २५। पु० ३।
७—पछोड़। पु० २।
८—तोड़। पु० २।
९—ढपनी सरपोशो चपनी जानिये। २६। पु० ३।

मिंजल = हँसिया। दास = दराँती। दाँती = दराँती। तुर्ब = मूली। दार = सूली, फाँसी। जा = जगह। गल्लः अफ्शाँ = अनाज पछोरनेवाला (छाज)। अफ्शाँ = झाड़नेवाला, छिड़कनेवाला। शोए = पति। शौहर = पति। मनस = मनुष्य। तोर = तेरा। ढाकनी = ढकनेवाली, ढक्कन। चपनी = हंडी का ढक्कन, कटोरी, कटोरा। दूद = धुआँ, धुंद। दुखाँ (दुखान) = धुँआ, भाप।

मिंजल – अ०; दास – फा०; दाँती – हिं०। तुर्ब – फा०; मूली – हिं०। दार – फा०; सूली – हिं०। जा – फा०; ठाँवँ – हिं०। गल्लः अफ्शाँ – फा०; (गल्लः–अ० + अफ्शाँ – फा०); छाज – हिं०। अफ्शाँ – फा०; पछोर – हिं०। शोए – फा०; तोर, मनस – हिं०। ढाकनी, चपनी – हिं०। सरपोश – फा०। धुआँ – हिं०। दूद – फा०; दुखाँ – अ०।

तू पंबःदानः बेदाँ हब्बे कुतन दर ताज़ी।
वले बिनौले बेदाँ चूं बहिंदी[1] अंदाजी ॥ ५६ ॥

मूसलस्त मारूफ हावन ओखली।
हीज इन्नीन फह्ल[2] नर आमद लली[3] ॥ ५७ ॥

फारसी[4] रूबाह हिंदवी लोखड़ी[5]।
माकियाँ रा नीज मीखाँ कूकड़ी ॥ ५८ ॥

१—बहिंद। पु० ४।
२—मुखिल। पु० ४।
३—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद है—

पारसी आवंग छींका हिंदवी।
लेक मुकमीलस्त जबाने पहलवी॥ २८॥ पु० ३।

अथवा—लेक मन्कूलस्त जबाने पहलवी। पु० ४।
४—पारसी रूब बहिंदवी लोंकड़ी। पु० ३।
५—लोकड़ी। पु० ४।

पंबःदानः = कपास का बीज, बिनौला। हब्बे कुतन = कपास का बीज, बिनौला। दरताजी = अरबी भाषा में। वले = लेकिन। चूँ बहिंदी अंदाजी = जब हिंदी में अनुमान लगाया। मूसलस्त = मूसल है। मारूफ = प्रसिद्ध। हावन = लकड़ी की ऊखली, दवा आदि के कूटने का लोहे का बर्तन। हीज = हीजड़ा, नपुंसक। इन्नीन = नपुंसक, नामर्द। फह्ल = नर, मनुष्य, मर्द। आमद = आगत। लली = लला, लड़का, नपुंसक। रूबाह = लोमड़ी, कायर पुरुष। लोखड़ी = लोमड़ी। माकियाँ (माकियान) = मुर्गी। नीज = और, भी। मीखाँ = तू बोल। कूफड़ी = मुर्गी।

पंबःदानः – फा०; हब्बे कुतन – अ०; बिनौला – हिं०। मूसल – हिं। हावन – फा०; ओखली – हिं०। हीज – फा०; इन्नीन – अ०। फह्ल – अ०; नर – हिं०। रूबाह – फा०; लोखड़ी – हिं। माकियाँ – फा०; कूकड़ी – हिं०।

कूकड़ा[1] मीखाँ खुरूसे सुबहखाँ।
नीज मीखाँ दीक दर ताजी जबाँ॥ ५६॥
कस्र[2] कोशक हिस्न दर ताजी हिसार।
हुजरः कोठा बाम अटारी दर दुवार॥ ६०॥
अज्ब शीरीनस्त मीठा चाख[3] देख।
तल्ख कड़वा तुर्श खट्टा आख[4] देख॥ ६१॥
जफ्त पेंठन चर्ब चीकन[5] शोर खार।
तेज चरपर जीभ[6] जाने ये विचार[7]॥ ६२॥

१—कुक्कड़ा। पु० ४।
२—कस्रो कोशको हिस्न कोट आमद हिसार।
हुजरः कोठरी बाम माड़ी दर दुवार॥ ६१॥ पु० ३
३—खाय। पु० ३।
४—चाख। पु० ३।
५—चिक्कन। पु० ३।
६—जीव। पु० ३।
७—बिचार। पु०।

कूकड़ा = मुर्गा। मीखाँ = तुम बोलो। खुरूस = मुर्गा। सुबहखाँ = प्रातःकाल गानेवाला। खुरूसे सुबहखाँ = प्रातःकाल गानेवाला मुर्गा। नीज = और। दीक = मुर्गा। दर ताजी जबाँ = अरबी भाषा में। कस्र = महल, प्रासाद, भवन। कोशक = महल, प्रासाद। हिस्न = दुर्ग, किला, रक्षास्थल। हिसार = दुर्ग, चक्र, परिधि। हुजरः = कोठरी, कमरा, मस्जिद की कोठरी। बाम = छत, अटारी। दर = दरवाजा, भीतर। दुवार = द्वार। अज्ब = मधुर, स्वादिष्ट। तल्ख = कड़वा, अरुचिकर। तुर्श = खट्टा, अम्ल। आख = कह। जफ्त = मोटा, स्थूल, पृथूदर। चर्ब = चिकना, स्निग्ध। शोर = खारा, नमकीन। खार = क्षार, खारा। तेज = तीव्र।

कूकड़ा – हिं०; खुरूस – फा०; दीक – अ०। कस्र – अ०; कोठा – हिं०। बाम – फा०; अटारी – हिं०। दर – फा०; दुवार – हिं०। अज्ब – अ०; शीरीं – फा०; मीठा – हिं०। तल्ख – फा०; कड़वा– हिं०। तुर्श – फा०; खट्टा – हिं०। जफ्त – फा०; ऐंठन – हिं०। चर्ब – फा; चीकन – हिं०। शोर–फा०; खार–हिं०। तेज–फा०; चरपर–हिं०।

कागजो किर्तास कागज[1] एखिये[2]।
कम कलम हम खामः लेखन लेखिये[3] ॥ ६३ ॥
दुर्रो[4] मरवारीद मोती जानिये।
हम सदफ सीपी समंदर आनिये ॥ ६४ ॥
सौर सुतूर गाव है बलद।
खाहे लादो[5] खाहे अलद[6] ॥ ६५ ॥
जंब[7] गुनाह जो कहिये दोस[8]।
खिश्मो गजब दर हिंदवी रोस[9] ॥ ६६ ॥

१—कागद। पु० २। कागल पु० ३।
२—आखिये। पु० २। लेखिये। पु० ३।
३—पेखिये। पु० ३।
४—हम लबद राती कली पहचानिये। ३४। पु० ३।
गुंचः जुहरः है कली पहचानिये। ६५। पु० ३।
५—लादन। ६—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—
शहदो अंगबीं असल कहीजे। सो मद हिंदुस्तान भींजे ॥ ६७ ॥ पु० ३
७—जंब गुनाह सो दोस हिंदवी।
खिश्मो गजब सो रोस हिंदवी ॥ ६८ ॥ पु० ३
८—दोष। पु० ४। ९—रोष। पु० ४।

किर्तास = कागज, कागज-पत्र। एखिए = आखिए, कहिए। हम = साथ, भी। कलम = लेखनी। खाम = लेखनी। लेखन लेखिए = लिखना, लिखिए। दुर = मोती। मरवारीद = मोती। सदफ = सीपी, शुक्ति। समंदर आनिए = समुद्र से लाइए। सौर = बैल, वृषभ, साँड़। सुतूर = चौपाया, बैल, घोड़ा, गधा आदि। गाव = बैल, वृषभ, गाय। बलद = बैल। खाहे लादो खाहे अलद = चाहे लादो, चाहे मत लादो। जंब = पाप। दोस = दोष। खिश्म = क्रोध, कोप। गजब = प्रकोप, दैवी कोप, अत्यधिक क्रोध। दर हिंदवी = हिंदी में। रोस = रोष।

कागज, किर्तास—अ०; कागज – फा० (अरबी का तत्सम शब्द)। दुर, मरवारीद – फा०; मोती – हिं०। सदफ – अ०; सीपी – हिं०। सौर, सुतूर – अ०; गाव – फा०; बलद – हिं०। जंब – अ०; गुनाह – फा; दोस – हिं०। खिश्म – फा०; गजब – अ; रोस – हिं०।

सरगीं गोबर फलः है पेवसी।
कुदाल[1] कलंद जो कहिये कस्सी ॥ ६७ ॥
बुजुर्गी बड़ाई व पीरी बुढ़ापा[2]।
निकोई भलाई जवानी तनापा ॥ ६८ ॥
लिसानो[3] जबाँ फारसी जीभ आखो।
दरख्तो शजर रा तुम रूख[4] भाखो[5] ॥ ६९ ॥
दरोगो दिगर किज्ब तुम झूठ जानो।
बुजुर्गो कलाँ रा बड़ा जान मानो ॥ ७० ॥

१—जान कुलंद जो कहिए कस्सी। ६९। पु० ३।
२—बुड़ापा। पु० ३।
३—लिसानो जबाँ रा तुमें जीव आखों ॥ ७२ ॥ पु० ३।
४—रूँख। पु० ३।
५—दरख्तो शजरदार रा रूख भाखो ॥ ७२ ॥ पु० ३।

सरगीं=गोबर (विशेष रूप से गाय का गोबर)। फलः=जमाया हुआ दूध। पेवसी = गाय का दूध (प्रसव के पश्चात् सात दिन तक) स्निग्ध पदार्थ। कलंद=खुर्पी, हल के नीचे का फाल। बुजुर्गी = बड़प्पन, बड़ाई। पीरी = वृद्धावस्था, पीर का पद, धूर्तता। निकोई = उत्तमता, अच्छाई, सुंदरता। तनापा = जवानी। लिसान = भाषा, बोली, जीभ। जबाँ=भाषा, बोली, कथन, जीभ, प्रतिज्ञा। आखो = बोलो। दरख्त = पेड़। शजर = पेड़। रूख = वृक्ष। भाखो = कहो। दरोग = झूठ, असत्य, गलत। दिगर = दूसरा। किज्ब = झूठ, असत्य, व्यर्थ, असार। बुजुर्ग = श्रेष्ठ, बयोवृद्ध, पूर्वज (लाच० बड़ा) कलाँ = ज्येष्ठ, बड़ा।

सरगीं – फा०; गोबर – हिं०। फल – फा०; पेवसी – हिं०। कुदाल, कस्सी-हिं०; कलंद – फा०। बुजुर्गी – फा०; बड़ाई – हिं०। पीरी – फा०; बुढ़ापा – हिं०। निकोई – फा०; भलाई – हिं०। जवानी–फा०; तनापा – हिं०। लिसान – अ०; जबाँ – फा०; जीभ – हिं०। दरख्त – फा०; शजर अ०; रूख – हिं०। दरोग – फा०; किज्ब – अ०; झूठ – हिं०। बुजुर्ग – फा०; कलाँ – फा; बड़ा – हिं०।

बहिंदी[1] जबाँ खानः हम बैत घर है।
जो[2] खौफो खतर बीम हम तर्स डर है[3] ॥ ७१ ॥
तमन्ना व हम आर्जू चाव कहिये।
यदो दस्तो हाथो कदम पाँव कहिये ॥ ७२ ॥
चरागस्त दीया[1] फतीलस्त बाती।
बुवद जद्द[2] दादा नबीरस्त[3] नाती ॥ ७३ ॥
कदू खरपुजः हर दो मारूफ मी दाँ।
खियारस्त[4] ककड़ी ओ खीरा हमी खाँ ॥ ७४ ॥

१—बहिंदी जबाँ खान ओ बैत घर है। ७४। पु० ३।
२—जो। पु० ४।
३—जो खौफो दिगर बीमो हम तर्स डर है। ७४। पु० ३।
१—दीवा। पु० ३। दिय्या। पु० ४।
२—जद्द। पु० १।
३—नबीर : अस्त। पु० ३।
४—खियारस्त ककड़ी व हम खीरा मी खाँ। ७७। पु० ३।
खियारस्त गलड़ी (?) ओ खीरा हमी खाँ। पु० ४।

बहिंदी जबाँ = हिंदी भाषा में। खान = घर। हम = साथ। बैत = घर, मकान, स्थान। खौफ = भय, त्रास, संदेह। खतर = भय, त्रास, संदेह। बीम = भय, त्रास, निराशा। तर्स = भय, डर। तमन्ना = कामना, लालसा, आकांक्षा। आर्जू = इच्छा, उत्कंठा। यद = हाथ। दस्त = हाथ। चराग = दीप। फतील = दीपक की बत्ती। जद्द = दादा, नाना। नबीर = पौत्र, नवासा। कदू = लौकी, घिया, कद्दू। खरपुजः = खरबूजा। खियार = खीरा। मी खाँ = तुम कहो।

खनाः – फा०; बैत – अ०; घर – हिं०। खौफ, खतर – अ०; बीम, तर्स – फा०; डर – हिं०। तमन्ना – अ०; आर्जू – फा०; चाव – हिं०। यद – अ०; दस्त – फा०; हाथ – हिं०। कदम – अ० पाँव – हिं०। चराग – फा०; दीया – हिं०। फतील – अ०; बाती – हिं०। जद्द – अ०; दादा – हिं०। नबीर – फा०; नाती – हिं०। कदू – फा०; खरपुजः – फा०; खियार – अ०; ककड़ी, खीरा – हिं०।

दरोबार[1] दहलीज रा बार जानो।
शुतुर[2] ऊँट घोड़ा[3] फरस अस्प मानो ॥ ७५ ॥
गिरिह अक्द बाशद बताजी व लेकिन।
बहिंदी बुवद गाँठ बिश्नो तो अज मन ॥ ७६ ॥
नहारो दिगर यौम रोजस्त जानो।
बहिंदी जबाँ दिवस[5] दिन रा पछानो[6] ॥ ७७ ॥
कसीरो फिरावानो बिस्यार अफ्जूँ।
बसा[7] बहुत कहिये सभी जानियो तूँ[8] । ७८ ॥

१—दरो बाबो। पु० ३।
२—शुतुर ऊँट भाको फरस अस्प मानो। पु० ३।
३—वार। पु० ४।
४—बहिंदी बुवद गाँठ अज शक रामन (?)। ७६। पु० ३
५—द्यौस। पु० २।
६—बहिंदी जबाँ दीस मन घर पछानो। ८०। पु० ३।
७—बसे। पु० २, पु० ४।
८—बहुत (कूँ) जो कहिये सही (जानियो) तूँ। ८१। पु० ३।

दरोबार = द्वार। देहलीज = देहली। वार = द्वार। शुतुर = ऊँट। फरस = घोड़ा। अस्प = घोड़ा। गिरिह = गाँठ, समस्या, उलझन। अक्द = गाँठ, प्रतिज्ञा, विवाह। गिरिह...अज मन = यदि तुम मुझसे पूछो तो अरबी में गिरह अक्द है, किंतु हिंदी में (उसके लिये) 'गाँठ' शब्द होगा। नहार = दिन। दिगर = दूसरा। यौम = दिन। रोज = दिन। बहिंदी जबाँ...पछानो = हिंदी भाषा में दिन को दिवस पहचानिए। कसीर = अधिक, प्रचुर। फिरावान = अधिक, प्रचुर। बिस्यार = अधिक, प्रचुर। अफ्जूँ = अत्यधिक, प्रचुर। बसा = बहुत, अधिक, प्रायः।

दरोबार, देहलीज – फा०; बार – हिं०। शुतुर – फा०; ऊँट – हिं०। घोड़ा – हिं०; फरस – अ०; अस्प – फा०। गिरिह – फा०; अक्द – अ०; गाँठ – हिं०। नहार, यौम – अ०; रोज – फा०; दिवस, दिन – हिं०। कसीर – अ०; फिरावाँ, बिस्यार, अफ्जूँ, बसा – फा०; बहुत – हिं०।

समंदर[1] रहे आग में जीव कीड़ा।
चो बुअदस्त दूरो चो नजदीक नीड़ा ॥ ७६ ॥
नमक मिलूह है लोन[2] शीरीन् मीठा[3]।
बहिंदी[4] जबाँ बदमजः अस्त सीठा[5] ॥ ८० ॥
पिदर बाप बाशद चो उम्मस्त[6] मादर।
सिनाँ भाल बरगुस्तवानस्त पाखर ॥ ८१ ॥

१—समंदर बुवद आग में जीव कीड़ा।
बुवद दूर मारूफो नजदीक नीड़ा। ८८। पु० ३।
२—नून। पु० ३। पु० ४।
३—लोन शीरीं है मीठा। पु० ४।
४—बहिंदवी। पु० २।
५—फीको। पु० ३।
६—माहस्त। पु० ३।

समंदर = अग्निकीट, पारसियों का विश्वास है कि निरंतर प्रदीप्त अग्नि में दीर्वकाल के पश्चात् समंदर नामक कीट उत्पन्न होता है। वह भी अग्नि के समान दाहक और सतेज रहता है। चो = यदि। बुअद = दूरी, अंतर। नीड़ा = निकट। मिलूह = नमक, लवण। लोन = लवण। शीरीन् = मधुर, मीठा। बदमजः=जिसका स्वाद बुरा है। सीठा = नीरस। पिदर = पिता। बाशद = हो। चो = यदि, जो। उम (उम्म) = माँ। मादर = माता। सिनाँ = भाला, बाण की नोक, अनी। भाल = भाला। बरगुस्तवान = जीन, युद्ध के समय घोड़े पर उढ़ाई जानेवाली लोहे की झूल, घोड़े को उढ़ाई जानेवाली रेशम की झूल। पाखर = लड़ाई के समय रक्षा के हेतु हाथी तथा घोड़े पर डाली जानेवाली झूल, घोड़े अथवा हाथी का लोहे की जालियों का कवच, झूल।

समंदर – फा०; आग में जीव कीडा – हिं०। बुअद – अ०; दूर – हिं०। नजदीक – फा०; नीडा – हिं०। नमक – फा०; मिलूह – अ०; लोन – हिं०। शीरीन – फा०; मीठा – हिं०। बदमजः – फा०; सीठा – हिं०। पिदर – फा०; बाप–हिं०। उम्म – अ०; मादर – फा०। सिनाँ – फा; भाल – हिं०। बरगुस्तवान – फा०; पाखर – हिं०।

४

जुबाबो मगस माखी ओ पश्शः माँछर।
बुवद रेग बालू ओ[1] संगरेजः[2] काँकर ॥ ८२ ॥
बेया आव नशीं बैठ बेरौ जा।
बेबीं देख बेदह दे[3] बेखुर खा ॥ ८३ ॥
बेसा[4] पीस बेकश खींच बेचश चाख।
बेजन मार बेदर फाड़ बेनेह राख[5] ॥ ८४ ॥

१—बेलूओ। पु० ३।
२—संगरेज। पु० २।
३—देओ। पु० २।
४—दर आ बैठ (?) बेकश खींच बेचश चाख। ६५। पु० ३।
५—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद है—
बेदम फूंक बेमाँ अछ बेजौ लोइ।
बेशो धो (बेदौ दौड़) बेहल छोड़। ६६। पु० ३।

जुबाब = मक्खी। मगस = मक्खी। पश्शः = मच्छर। माँछर = मच्छर। बुवद = हुआ। रेग = बालू, रेत। संगरेज = कंकड़। काँकर = कंकड़। बेया = आ। निशीं = बैठ (निशिस्तन = बैठना)। बेरौ = जा (रफ्तन = जाना)। बेबीं = देख (दीदन = देखना)। बेदह = दे (दादन = देना)। बेखुर = खा (खुर्दन = खाना)। बेसा = पीस (साइ-दन = पीसना)। बेकश = खींच (कशीदन = खींचना)। बेचश = चाख (चशीदन = चाखना)। बेजन = मार (जदन = मारना)। बेदर = फाड़ (दरीदन = फाड़ना)। बेनेह = रख (नेहादन = रखना)।

जुबाब – अ०; मगस – फा०; माखी – हिं०। पश्शः – फा०; माँछर – हिं०। रेग – फा०; बालू – हिं०। संगरेजः – फा०; काँकर – हिं०। बेया – फा०; आ – हिं०। निशीं – फा०; बैठ – हिं०। बेरौ – फा०; जा – हिं०। बेबीं – फा०; देख – हिं०। बेदह – फा०; दे – हिं०। बेखुर – फा०; खा – हिं०। बेसा – फा०; पीस – हिं०। बेकश – फा०; खींच – हिं०। बेचश – फा०; चाख – हिं०। बेजन – फा०; मार – हिं०। बेदर – फा०; फाड़ – हिं०। बेनेह – फा०; राख – हिं०।

गुलू हल्क़ दहन मुख सखुन बोल।
शिकम पेट नजर डीठ दुहुल ढोल ॥ ८५ ॥

तबीबो हकीमस्त बैद अै बिरादर।
बुवद बाद[1] बावो[2] दिगर आग आजर ॥ ८६ ॥

दिगर गोश कुन[3] वाजो अंदर्जो पंद[4]।
बहिंदी बुवद सीख दरकार बंद ॥ ८७ ॥

१—बाव। पु० ४।
२—बादो। पु० ४।
३—कुनो। पु० २।
४—नक़ीहृत दिगर वाजो अंदर्ज पंद। १००। पु० ३।

गुलू = कंठ, गला। हल्क = कंठ, गला। दहन = मुख, छिद्र। सखुन = कथन, बात, वार्तालाप, कविता। शिकम = पेट, आमाशय, उदर। नजर = दृष्टि, निगाह, ध्यान, परख, कुदृष्टि। डीठ = दृष्टि, कुदृष्टि। दुहुल = ढोल, धौंसा, नगारा। तबीब = वैद्य, चिकित्सक, उपचारक। हकीम = वैद्य, चिकित्सक, दार्शनिक, मीमांसक। बैद = वैद्य। अै बिरा-दर = हे भाई। बाद = वायु, बात, हवा। बाव = वायु, हवा *। आजर = अग्नि। दिगर गोशकुन = दूसरी बात सुन ले। वाज = धर्मोपदेश। अंदर्ज = हितोपदेश, सीख। पंद = हितोपदेश, सीख, सलाह।

गुलू – फा०; हल्क़ – अ०। दहन – फा०; मुख – हिं०। सखुन – फा०; बोल – हिं०। शिकम – फा०; पेट – हिं०। नजर – अ०, डीठ–हिं०। दुहुल – फा०; ढोल – हिं०। तबीब, हकीम – अ०; बैद – हिं०। बाद – फा०; बाव – हिं०। आग – हिं० आजर – फा०। वाज – अ०; अंदर्ज, पंद – फा०; सीख – हिं०।

---

* इस दीवे पर बाव काम नहीं करती। इस दीवे की जोत कधीं नहीं जाती।—वजही-सबरस, पृ० १४७।

खराबस्त[1] बीराँ तू उजड़ा हमो खाँ।
तू मामूर आबाद बसता[2] हमीदाँ ॥ ८८ ॥
हस्त इब्नुललैल माहे आस्माँ।
चाँद बेटा रात का ताजी जबाँ ॥ ८९ ॥
लैल[3] शब दैजूर दर ताजी जबाँ।
रात अँधियारी[4] तू नेकोतर बेदाँ[5] ॥ ९० ॥
दादन देना दाद दिया फेल कार।
कर्जो वामो देन दर हिंदी उधार ॥ ९१ ॥

१—खराब्रस्त वीराँ तू ऊजड़ बेखानी।
तू मामूर आबाद बस्ता बेदानी। १०१। पु० ३
२—बसता। पु० २।
३—लैल उल लैलस्त दर ताजी जबाँ। १०२। पु० ३।
४—अँधारी। पु० ३।
५—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद है—
मुर्ग मारूफस्त हुद हुद ऐ जवाँ।
पहलूए गोयंद पो पो हम वेदाँ। ११७। पु० ३।

खराब = निर्जन स्थल, खंडहर, वीरान। वीराँ = निर्जन स्थल, जंगल, खंडहर। उजड़ा = निर्जन, बरबाद। हमीखाँ = कहो। मामूर = बसा हुआ, आबाद, परिपूर्ण। हमीदाँ=जानो। हस्त = है। इब्नुललैल= रात का बेटा। माह = चंद्रमा। लैल = रात, यामिनी। शब = रात। दैजूर = अँधेरी रात, अमावस्या। लैल शब…जबाँ = अमावस्या की रात को अरबी में लैल कहते हैं। बेदाँ = जान। फेल = कार्य, क्रिया (व्याकरण)। कार = कार्य, काम, कला। कर्ज = ऋण। वाम = ऋण, रंग।

खराब, वीराँ – फा०; उजड़ा – हिं०। मामूर – अ०; आबाद – फा०; बसना – हिं०। माह – फा०; चाँद – हिं०। लैल – अ०; रात अँधियारी – हिं०। दादन – फा; देना – हिं०। दाद – फा०; दिया – हिं०। फेल – अ०; कार – फा०। कर्ज – अ०; वाम – फा०; देन, उधार – हिं०।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आफतो आसेब है रंजो बला।
हय्यी[1] जिंदः जानियो तुम जीवता ॥ ६२ ॥

शान[2] ओ मिश्तस्त दर हिंदी जबाँ।
कंघी आमद पेश तू करदम बयाँ ॥ ६३ ॥

किर्मे शबताबस्त कीड़ा चमकनाँ।
नीज गोयंद आतशक ऊ रा[3] बेदाँ ॥६४॥

नान बताजी खुब्ज रोटी हिंदवी।
पंबओ महलूज रा मी दाँ रुई ॥६५॥

१—हय्यी-ओ। पु० ३।
२—शानओ मिश्तस्त दर हर दो जबाँ।
के मन पेश तू करदम बयाँ। १०४। पु० ३
३—ईं हम। पु० ३।
४—हिंदवी महलू रा मीदाँ रुई। पु० ३।

आफत = आपत्ति, कष्ट। आसेब = अनिष्ट, प्रेतबाधा, भूतप्रेत। रंज = कष्ट, दुःख, विपत्ति, पीड़ा। बला = दैवी आपत्ति, प्रेतबाधा। आसेब = भूतप्रेत, भयानक। हय्यी = जीवित। जिंदः = जीवित, नवीन। शानः = कंघा, जुलाहों की कूँची, स्कंध। मिश्त = कंघी। करदम बयाँ = मैंने वर्णन किया है। किर्मे शबताब=जुगनू। नीज = भी, अन्य, और। आतशक = जुगनू, चिनगारी, आग। ऊ रा = उसे। बेदाँ = जान। नान=रोटी, खमीरी रोटी। बताजी = अरबी में। पंबः = कपास, रुई। महलूज = जिसके बीज निकाले गए। मी दाँ = जानो।

आफत, रंज – फा०। आसेब – फा०; बला – अ०। हय्यी – अ०; जिंदः – फा०; जीवता – हिं०। शानः – फा०; मिश्त – अ०; कंघी – हिं०। किर्मे शबताब, आतशक – फा०; कीड़ा चमकनाँ – हिं०। नान – फा०, खुब्ज – फा०; रोटी – हिं०। पंबओ महलूज – फा०; रुई – हिं०।

पस बहिंदी[1] पंबः रा मी दाँ कपास।
नस्र करगस बूम उल्लू बूए[2] बास ॥ १६ ॥
बाद बेजन बाद कश पंखा[3] बुखाँ।
गूको[4] जिफ्दे मेंडकी बेशक बेदाँ[5] ॥ १७ ॥
साग सब्जी बहज शाद सुर्ख सोहा लाल।

१—बहिंदी। पु० ३।
२—बूई। पु० ४।
३—पंख। पु० ३।
४—गूक। पु० २, पु०।
५—इस पद के बाद निम्नलिखित पद हैं—

दाँ सुवर छेली तू खूको गोस्पंद।
भेड़ मेषामद दिगर हम कैद बंद ॥ २०१ ॥
चहारपाई खट (व) पस कश आदवाँ।
बान रा हम गुफ्तः अंद चूँ रेस्माँ ॥ २०२ ॥
बाँह बाजू जिब्रः पेशानी कपाल।
कारव बगलो दाद दुश्नामस्त गाल ॥ २०३ ॥
मस्खरी ओ खंदः हाँसी रा बेदाँ।
हम अर्क हम खूई रा पुरसेव खाँ ॥ २०४ ॥
चीचरी मी दाँ कुनः ओ गोश खव्क।
कन सलाई है यकीं मी दाँ न शक ॥ २०५ ॥
नाव दाँ मोरी ओ दीवारस्त दिवाल।
गवाह शाहिद साखिया ओ कल्लः गाल ॥ २०६ ॥

नस्र=गीध, करगस। करगस=गीध, कुकदास। बूम = उल्लू, मूर्ख। बू = गंध। बाद बेजन = फर्शी पंखा। बादकश = छत का पंखा, धौंकनी। बुखाँ = तू जान। गूक = मेंढक। जिफ्दे = मेंढक। बेशक बेदाँ = निस्संदेह जानो।

पंब – फा०; कपास – हिं०। नस्र – अ०; करगस – फा०। बूम – फ़ा०; उल्लू – हिं०। बू – फा०; बास – हिं०।

सब्ज हरिया दाश्त घरिया माँद रहिया दाम जाल[1] ॥ ६८ ॥

दौलत आहे आथ ना बूदन अनाथ।
सुहबती साथी ओ सुहबत हस्त साथ ॥ २०७ ॥
फारसी अरजीज हिंदवी है कथीर।
बगल आमद लगलगाँ बशिगाफ चीर ॥ २०८ ॥
काम तालू नाफ टूँटी नाम नाँव।
सागरो जामस्त प्यालः जाई ठाँव ॥ २०९ ॥
दोलः है डोली कहारश दूलःकश।
पालखी मारूफ छतरी सायः कश ॥ २१० ॥
मौज केला अंबः नग्जक (दारिमो रुम्माँ) अनार।
जौज मग्जक खोपरा (ओ तकियः) दर हिंदी उधार ॥ २११ ॥
दादनी देना दिया दादः दोस्त यार।
कर्ज देनो वाम दर हिंदी उधार ॥ २१२ ॥

१—साग सब्जी सुर्ख रतरा लाल लाल।
सब्ज हरिया दाश्त धरिया दाम जाल ॥ २१३ ॥ पु० ३।

सब्जी = शाक, भाजी, हरियाली, भंग। बहज = सौंदर्य, विशेषता, ठाटबाट, प्रसन्नता, आनंद। शादी = हर्ष, आनंद, विवाह। सुर्ख = लाल रंग में रँगा हुआ। सोहा=सोभित हुआ। लाल = लाल रंग का, लाल, छोटा बच्चा, प्रिय। सब्ज = हरा। हरिया = हरा। दाश्त (दाश्तः) = रखा हुआ। माँद = रहा हुआ, अवशिष्ट। रहिया = रहा, शेष, अवशिष्ट। दाम = फंदा, पाश, जाल।

वाद बेजन, बादकश – फा०; पंखा – हिं०। गूक – फा०; जिफ्दे – अ०; मेंडकी – हिं०। साग – हिं०; सब्जी – फा०; बुहज – अ०; शादी – फा०। सुर्ख, लाल – फा०।

फज्र सुबहो जुह्र पेशीं अस्र दीगर शाम साँज।
दाँ जने जाइंदः जनती है अकीमः जो ये[1] बाँज ॥ ९९ ॥
सेर अघाना कूर काना भेद राज।
गुरस्नः भूका[2] पियासा तश्नः बाज[3] ॥१००॥

१—जोय। पु० २।
२—भूखा। पु० ३।
३—इस पद से पहले निम्नलिखित पद हैं—

तख्त बाशद पारसी (ओ) लोह दर ताजी जवाँ।
हिंदवी गोयंद पाटी नाम तख्ती बाव दाँ ॥१९०॥
मक्तबो दीगर दबिस्ताँ दर हर दो लिसान।
ठाँव पढ़ने की कहे पौशाल दर हिंदी जबान ॥१९१॥
फारसी रू वजः ताजी चेहरः (X) दाँ।
होंठ दर हिंदी शफत लब है पछान ॥१९२॥
अंगुली अंगुश्तो नाखुन नख वेदाँ।
लेक फीरोजी जफर रा जीत खाँ ॥१९३॥
बूजः बगनी गोज पाद आरोग डकार।
भंग बंगो मस्त माता (काम) कार ॥१९४॥
पुश्तवारः हस्त भारा जुम्लः सारा आध नीम।
साफ आछा तीरः गदला (पीप) रीम ॥१९५॥
नीम शब आधी रात दोपहर म्याना रोज।
मतरः अब्रीको मिज्मर ऊद सोज ॥१९६॥ पु० ३।

फज्र = प्रातःकाल, भोर, सवेरे की नमाज। सुबह = प्रातःकाल, प्रभात, भोर। जुह्र = दोपहर, दोपहर की नमाज का समय। जुहर पेशीं अस्र = अस्र से पहले जुह्र आता है। पेशीं = पहला, प्रथम, पुराना। अस्र = समय, सूर्यास्त से पहले का समय। शाम = संध्या, संध्याकाल। साँज = संध्या। दाँ = जानो। जन = स्त्री। जाइंदः = मा, जननी। अकीमः = बंध्या। सेर = तृप्त, अघाया हुआ। कूर = अंधा, नेत्रहीन।

फज्र, सुबह – अ०। जुह्र – अ०। शाम – फा०; साँज – हिं०। जाइंदः – फा०; जनती है – हिं०। अकीमः – अ०; बाज – हिं०। सेर – फा०; अघाना – हिं०। कूर – फा०; काना – हिं०। भेद – हिं०;

हिमार अगर तुरा पुरसंद चीस्त खरस्त[1]।
बहिंदवी[2] बुवद गधा के बारबरस्त ॥१०१॥
खरगोश[3] खरहा बाशद आहू बुवद हिरन।
अंगुश्तरी अँगूठी पैरायः आभरन[4] ॥१०२॥
बिश्नो तू नाम चर्खए बेचारः पीर जन।
गोयंद नाम रहटा[5] दर हिंदवी बचन[6] ॥१०३॥

१—खर इस्त। पु० २।
२—बहिंदी। पु० २।
३—अंगुश्तरी अँगूठी पैरायः आभरन।
खरगोश ससा बाशदो आहू बुवद हिरन ॥१३८॥ पु० ३।
४—अभरन। पु० २।
५—रैंटा। पु० ३।
६—सखुन। पु० ३।

राज = रहस्य, मर्म, भेद। गुरस्नः = भूखा, क्षुधातुर। तश्नः = प्यासा, तृषित। बाजः = पुनः, फिर। हिमार अगर···खरस्त = अगर तुझसे कोई पूछे 'हिमार' क्या है, तो तू कह दे खर (गधा) है। हिमार = गधा। खर = गधा। बहिंदवी ··· बारबरस्त = हिंदी में (खर) गधा है जो बोझ ढोता है। बाशद = हो, संभवतः। आहू = मृग। अंगुश्तरी = अँगूठी। पैरायः = आभूषण, सजावट, वस्त्र। आभरन = आभरण। बिश्नो तू···हिंदवी बचन = यदि तू बुढ़िया से चर्खे का नाम पूछे (तो वह) कहेगी हिंदी भाषा में (उसे) रहटा कहते हैं। चर्ख = चर्खा, हाथ से सूत या ऊन कातने का यंत्र। रहटा = कुए से पानी निकालने का यंत्र (चर्खे के अर्थ में इसका प्रयोग उपलब्ध नहीं)।

राज – फा०। गुरस्नः – फा०; भूका – हिं०। पियासा – हिं०; तश्नः – फा०। हिमार – अ०; खर – फा०; गधा – हिं०। खरगोश – फा०; खरहा – हिं०। आहू – फा०; हिरन – हिं०। अंगुश्तरी – फा०; अँगूठी – हिं०। पैरायः – फा०; आभरन – हिं०। चर्ख – फा०; रहटा – हिं०।

पेचक बेदाँ तू पूनी पागुंद[1] गाला दाँ।
दूकस्त नाम तकला आवुर्दी[2] अम बयाँ[3] ॥१०४॥

आईनः आरसी के दरू रूए बेनगरी।
सेवा बहिंदी तू बेदाँ नामे चाकरी ॥१०५॥

सिंदा अलात अहरन फित्तीस तुपक रा।
मी दाँ[4] हतोड़ बाशदा बेचूनो बेचरा ॥१०६॥

१—पागुंद। पु० ४।

२—आवुर्दः। पु० ४।

३—दूकस्त नाम तकला आवुर्दः अम बयाँ।
पेचक बेदाँ तू पूनी ओ पागुंद गाला दाँ॥

४—मी दाँ हतोड़ा नाम तू बेचूनो बेचरा। ८३। पु० ३

पेचक = सूत की कुकडी, पक्के सूत की गोली। पूनीं = कातने के लिये विशेष रूप से बनाई गई रुई की गोली। पागुंद (पागुंदः) = धुनकी हुई रुई का गोला। दूक = चर्खे का तकला। आवुर्दी अम बयाँ = मैं कथन में लाया हूँ। आईनः = दर्पण। आरसी = दर्पण। दरू रूए बेनगरी = उसमें तू अपना चेहरा देखे। चाकरी = दासता, नौकरी, सेवा। सेवा···चाकरी = हिंदी में चाकरी का नाम सेवा है। सिंदा (सिंदान) = निहाई, अहरन। अलात - निहाई, अहरन। अहरन = निहाई, अहेरना। फित्तीस = बड़ा हथौड़ा। तुपक = तोप। मी दाँ···बेचरा = निस्संदेह तुम उसे हथौड़ा जानो।

पेचक – फा०; पूनी – हिं०। पागुंद – फा०; गाला – हिं०। दूक – फा०; तकला – हिं०। आईन – फा०; आरसी – हिं०। चाकरी – फा०; सेवा – हिं०। सिंदा – फा०; अलात – अ०; अहरन – हिं०। फित्तीस – अ०; हतोड़ – हिं०।

चींटीस्त नाम मोरचः पिस्सूस्त नामे कैक।
आँ को[1] पयामो[2] नामःबरो कासिदस्तो[3] पैक ॥१०७॥
बेदार बेदाँ के जागता है।
हम खुफ्तः वेदाँ के सोयता[4] है ॥१०८॥
मीदाँ सुबू घड़ा व सुबूचः वेदाँ घड़ी।
चूँ तीरे सक्फ बाशद दर हिंदवी कड़ी ॥१०९॥
तगर्गस्त[5] हम संगचः जालः ओला।
चो जीरक सयाना ओ नादान भोला ॥११०॥

१—वाँ को। पु० ३।
२—पयाम। पु० २।
३—कासिदस्त। पु० २, पु० ३।
४—सो (व) ता। पु० ३।
५—तगर्गस्तो। पु० ३।

मोरचः (मोर) = चींटी। कैक = पिस्सू। आँ को = इसका। पयाम = समाचार। पयामबर = संदेशवाहक। नामःबर = पत्रवाहक, डाकिया। कासिद = पत्रवाहक, दूत। पैक = पत्रवाहक, हरकारा, दूत। बेदार = सचेत, जाग्रत। हम = साथ ही, भी। खुफ्तः = सोया हुआ, सुप्त। मी दाँ = तुम जानो। सुबू = घड़ा, मटका। सुबूचः = छोटा घड़ा, मटकी। तीरे सक्फ = छत की कड़ी (लकड़ी की)। तगर्ग = ओला, हिमोपल। संगचः = ओला, हिमोपल। जालः = ओला, हिमोपल। चो = यदि, जब। जीरक = प्रवीण, चतुर। नादान = अनभिज्ञ, नासमझ।

मोरचः (मोर) – फा०; चींटी – हिं०। पिस्सू – हिं०; कैक – फा०। पयामबर, नामःबर, पैक – फा; कासिद – अ०। बेदार – फा०; जागता है – हिं०। खुफ्तः – फा०; सोयता है – हिं०। सुबू – फा०; घड़ा – हिं०। सुबूचः – फा०; घड़ी – हिं०। तीरे सक्फ – फा०; कड़ी – हिं०। तगर्ग संगचः जालः – फा०; ओला-हिं०। जीरक – फा०; सयाना – हिं०। नादान – फा०; भोला–हिं०।

तू अखरोट रा[1] जौजे खुरासाँ बेदाँ।
दिगर नारियल जौजे हिंदी बेखाँ ॥१११॥

हिजब्रस्त नाहर पलंगस्त[2] चीता।
चो गुर्गस्त भेढा[3] ओ करगस्त गैंडा ॥११२॥

दीगर कलावः कुकड़ी[4] हम रेस्माँ सूत।
इन्साँ शुमार मानसो मी दाँ तू देव भूत ॥११३॥

कुफुल किलीद जो[5] ताला किल्ली[6]।
गुर्बः[7] खैतल जो कहिये बिल्ली ॥११४॥

१—'रा' नहीं है। पु० २, पु० ४।
२—पलंगस्तो। पु० २। पलंग यूज। पु० ३।
३—भेड़िया। पु० २।
४—आँटी। पु० ३। कुक्कड़ी। पु० ४।
५—सो। पु० ३।
६—किली। पु० ३।
७—खैतल गुर्बः जो कहिये बिल्ली। १४२। पु०।

जौजे खुरासाँ = अखरोट। जौजे हिंदी = नारियल। हिजब्र = व्याघ्र। पलंग = तेंदुआ। गुर्ग = भेड़िया। भेढा = भेडिया। करग = गैंडा। कलाव = चर्खे पर काती जानेवाली कूकड़ी, रील। कुकड़ी = कूकड़ी (सूत की), सूत का लच्छा। रेस्माँ = डोरी, रस्सी। इन्सा = मनुष्य शुमार = गिगो, समझो। मानस = मनुष्य। देव = राक्षस, भूत, पिशाच। कुफुल = ताला। किलीद = कुंजी, ताली। किल्ली = ताली। गुर्बः = बिल्ली। खैतल = बिल्ली, कुत्ता।

अखरोट – हिं०; जौजे खुरासाँ – अ०। नारियल – हिं; जौजे हिंदी – अ०। हिजब्र – अ०; नाहर – हिं०। पलंग – फा०; चीता – हिं०। गुर्ग – फा०; भेढा – हिं०। करग – फा०, गैंडा – हिं०। कलावः – फा०; कुकड़ी – हिं०। रेस्माँ – फा; सूत – हिं०। इन्साँ – अ०; मानस – हिं०। देव – फा०; भूत – हिं०। कुफुल – अ०; ताला – हिं०। किलीद – फा०; किल्ली – हिं०। गुर्ब – फा०; खैतल – अ०; बिल्ली – हिं०।

शर्म[1] लाज पोशीदन ढाँकना।
कार है काज खास्तन माँगना[2] ॥ ११५ ॥
कैवाँ जुहल सनीचर आमद।
ऊदैत[3] बफारसी खुर आमद[4] ॥ ११६ ॥
मिर्रीख[5] बजबाने हिंदवी मंगल।
राई बजबाने फारसी खर्दल ॥ ११७ ॥

१—शर्म है लाज पोशीदन ढापना। १४३। पु० ३।

२—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—

रीद लीद घोड़े की आहै।
कहूँ पारसी जे को चाहै ॥ १४४ ॥
मनी ओ खायत बोल जो को है।
गूह मूत ये हिंदवी होवे ॥ १४५ ॥ पु० ३।

३—आदीत बपारसी खूर आमद। १५५। पु० ३, पु० ४।

४—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद है—

मह सोम शुदस्त ऐ दिलाराम।
बिश्नो ज मन ईं सखुन बयाराम ॥ १५५ ॥ 'ब'। पु० ३।

५—मिर्रीख बहिंदी अस्त मंगल। १५६। पु० ३।

पोशीदन = ढँकना। ढाँकना = ढँकना। खास्तन = माँगना, चाहना, इच्छा करना। कैवाँ = शनि, सातवाँ आसमान। जुहल = शनि। ऊदैत = आदित्य, सूर्य। खुर = सूर्य। मिर्रीख = मंगल। खर्दल = राई।

शर्म – फा०; लाज – हिं०। पोशीदन – फा०; ढाँकना – हिं०। कार – फा०; काज – हिं०। खास्तन – फा०; माँगना – हिं०। कैवाँ – फा०; जुहल – अ०; – सनीचर – हिं०। ऊदैत – हिं०। खुर – फा०। मिर्रीख – अ०; मंगल – हिं०। राई – हि०।

बुध[1] है उतारिद गर तू बेदानी।
ऊ रा तू दबीरे चर्ख बेखानी[2] ॥ ११८ ॥
बिरजीस[3] मुश्तरी बिरस्पत।
काजीए सिपहर दर सआदत ॥ ११६ ॥

१—इस पद के स्थान पर निम्नलिखित पद है—
शुद सुक्र (बहिंदी) जुहरः रा नाम।
खुन्यागर आस्माँ दिलाराम ॥ १५६ ॥ पु० ३ ।

२—बुधस्त उतारिद अरबेखानी।
ऊ रा तू दबीर चर्ख दानी ॥ १५७ ॥ पु० ३ ।
इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—
खाहम गुफ्त कहूँगा हौं। खाही गुफ्त कहेगा तूँ ॥ १६० ॥
खाहम कर्द करूँगा हौं। खाही कर्द करेगा तूँ ॥ १६१ ॥
खाहम आमद हौ आऊँगा। खाही आमद तूँ आवेगा ॥ १६२ ॥
खाहम रफ्त जाऊँगा हौं। खाही रफ्त जावेगा तूँ ॥ १६३ ॥
खाहम निशिस्त बैठूँगा हौं। खाही निशिस्त बैठेगा तूँ ॥ १६४ ॥
खाहम शिस्त धोऊँगा हौं। खाही शिस्त धोवेगा तूँ ॥ १६५ ॥
खाहम जद हौं मारूँगा। खाही जद तूँ मारेगा ॥ १६६ ॥
खाहम दीद हौं देखूँगा। खाही दीद तूँ देखेगा ॥ १६७ ॥
खाहम दाद देऊँगा हौं। खाही दाद देवेगा तूँ ॥ १६८ ॥
खाहम दवीद दौड़ूँगा हौं। खाही दवीद दौड़ेगा तूँ ॥ १६६ ॥
यारे मनी तूँ सिरीजन मेरा। जाने मनी तूँ जीवड़ा मेरा ॥ १७० ॥
चश्मे मनी तूँ मेरी आँख। बाजे मनी तूँ मेरी पाँख ॥ १७१ ॥
दीरोज जो काल गया है (गा)। फर्दा रोज जो काल आवेगा ॥ १७२ ॥
और परीर जो परसो कहिये। बस फर्दा जो परसों भइये ॥ १७३ ॥

३—बिरजीस चो मुश्तरी बिरस्पत। १५८। पु० ३।

उतारिद = बुध। ऊ रा तू बेदानी = यदि तू जाने। ऊ रा = उसे। ऊ रा तू…बेखानी = उसे तू आकाश का लेखक मान। बिरजीस = बृहस्पति। मुश्तरी = बृहस्पति, खरीदार। काजीए…सआदत = शुभ होने के कारण आकाश का काजी (= न्यायकर्ता, विवाह संपन्न करनेवाला) है।

खर्दल – अ०। बुध – हिं०, उतारिद – अ०। बिरजीस, मुश्तरी – अ०, बिरहस्पत – हिं०।

शुद सुक्र[1] हिंदवी जुह्रः[2] नाम।
खुन्यागरे आस्माँ दिलाराम ॥ १२० ॥
हिंदवी पीपल बुवद फिलफिल दराज।
मिर्च[3] फिलफिल गिर्द रा गोइंद बाज़ ॥ १२१ ॥
जौजबोया जायफल बेशक वेदाँ।
हम करन्फुल लौंग रा किकरी[4] बेखाँ ॥ १२२ ॥

१— शुक्र। पु० ४।
२—जुहरः रा। पु० ४।
३—मिर्च रा गोइंद फिलफिल गिर्द बाज। १४६। पु० ३।
४—जौजबोया जाइफल खुशबूईदाँ।
हम करंफुल लौंग (रा हिंदी) बेखाँ। १४७। पु० ३।
५—कीकर। पु० ४।

शुद = हुआ। सुक्र = शुक्र। जुह्रः = शुक्र। खुन्यारे···दिलाराम = आकाश का प्रिय गायक। फिलफिल दराज = लंबी मिर्च (पीपल का पर्याय ठीक नहीं)। फिलफिल गिर्द = गोल मिर्च, काली मिर्च। बाज = पुनः। जौजबोया = जायफल। जायफल = जायफल (हिंदी का फल, फारसी में फल)। करन्फुल = कान का आभूषण, कान में पहना जानेवाला पुष्पाकृति का आभूषण, संस्कृत शब्द कर्णफुल्ल, अरब में यह शब्द पिछले डेढ़ हजार वर्ष से प्रचलित है। लौंग = लौंग की आकृति के कारण कान का एक आभूषण लौंग कहाता है। किकरी = कीकर, बबूल, बबूल के पत्ते की आकृति का, संभवतः इस प्रकार की आकृति के कारण विशेष तरह की लौंग किकरी कहाती हो। बेखाँ = तू जान।

सुक्र – हिं०; जुह्रः – अ०। पीपल – हिं०; फिलफिल दराज–अ०। मिर्च – हिं०; फिलफिल गिर्द – अ०। जौजबोया – अ०, फा०; जायफल – हिं०। करन्फुल – अ०; लौंग, किकरी – हिं०।

हिंदी गोइंद खुर्मा रा खजूर।
दाख रा तू फारसी मी दाँ अँगूर[१] ॥ १२३ ॥
जंजबीलस्त सिंधी[२] आमद सोंठ नीज।
छानिये औ मीत तू याने बेबीज[३] ॥ १२४ ॥
बीमार[४] मरीज दुखिया जान।
बरगीर उठाओ बाज है दान[५] ॥ १२५ ॥
अंधा नाबीना व बीना देखता।
कब्र[६] बाशद गोर गल्ताँ लेटता ॥ १२६ ॥

१—हिंदवी मो गो तू खुर्मा रा खजूर।
दाख (रा) दर फारसी मी दाँ अंगूर। १४०। पु० ३।
२—शुंठी। पु० ४।
३—गंजबीलो सिंधी आमद शिगवीज।
सूँठ आहै पूँछ लीजें ऐ अजीज। १४८। पु० ३।
४—बीमारो मरीज सो दुखी जान। १५०। पु० ३।
५—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—
होशदार सँभाल खाब है नींद।
होशयार सो चेत फिक्र है जींद ॥ १५१ ॥
चो पुरसी खुसर पूरः (कीस्त मी दाँ) जोई का भाई।
दिगर अज खुसर पुरसी जोइ का (है) बाप जिन जाई ॥ १५२। पु० ३।
६—कूबड़ा आहे कूज गल्ताँ ढलकता। १६७। पु० ३।

खुर्मा = खजूर, हरा छुहारा। जंजबील = सोंठ, सूखी अदरक। सिंधी आमद = सिंधी से आया। नीज = और। बेबीज = छानो। बरगीर = तू उठा (गिफ्तन)। बाज = खिराज, आय का चौथा भाग, राज्यांश, चौथ। नाबीना = नेत्रयुक्त। गल्ताँ = लुढ़कता हुआ, लेटता हुआ (गल्तीदन = लेटना, लोटना)।

खुर्मा – फा०; खजूर – हिं०। दाख – हिं०; अंगूर – फा०; जंजबील – अ०; सोंठ – हिं०। छानिये – हिं०; बेबीज – फा०। बीमार – फा०; मरीज – अ०; दुखिया – हिं०। बरगीर – फा०; उठाओ – हिं०। अंधा – हिं०; नाबीना – फा०। बीना – फा०; देखता – हिं०। कब्र – अ०; गोर – फा०।

पैकानो जिरिह बक्तरस्त गाँसी।
हम खंदः कहकहः हस्त हाँसी ॥ १२७ ॥
जिराअ[1] गज मीजाँ तराजू वजन तोल।
दम नफस दफ्तर जरीदः दलो डोल ॥ १२८ ॥
मश्रिक जो कहँ पूरब का नावँ[2]।
मग्रिब दर हिंदवी पछावँ ॥ १२९ ॥
है जनूब दक्खन का ओर।
हम शुमाल उत्तर का छोर ॥ १३० ॥

१—दरअ । पु० ४ ।
२—नाँवँ । पु० २ ।

पैकान = बाण की नोक, भाले की अनी। जिरिह = कवच। बक्तर = कवच। गाँसी = बाण का लोह फलक, भाले की अणी। खंदः = मुस्कान, अट्टहास। कहकहः = अट्टहास। जिराअ = एक हाथ की नाप। गज = नापने का परिमाण, १६ गिरह का एक गज। मीजाँ = तुला, तराजू। दम = साँस, छल, समय, बल। नफस = श्वास, क्षण। दफ्तर = कार्यालय, किसी पुस्तक का एक भाग, खंड (पुस्तक), कोई लंबी-चौड़ी बात। जरीदः = समाचार पत्र, बही खाता, पुस्तक, पुस्तक का एक खंड, एकाकी। दलो = डोल, कुंभ (राशि)। मश्रिक = पूर्व। मग्रिब = पश्चिम। जनूब = दक्षिण। शुमाल = उत्तर।

पैकान – फा०; गाँसी – हिं०। जिरिह, बक्तर – फा०। खंदः, कहकहः – फा०; हाँसी – हिं०। जिराअ – अ०; गज – फा०। मीजाँ – अ० तराजू – फा०। दम – फा०; नफस – अ०। दफ्तर – फा०; जरीदः – अ०। दलो – अ०; डोल – हिं०। मश्रिक – अ०; पूरब – हिं०। मग्रिब – अ०; पछावँ – हिं०। जनूब – अ०; दक्खन – हिं०। शुमाल – अ०; उत्तर–हिं०।

हम फराज़ो पेश आगा जानिये।
हम अक्ब पाछे[1] यकीं पहछानिये[2] ॥१३१॥
[3]अक्रब बताज़ो बिच्छू कजदुम बुर्जे फलक।
बिश्मुर तू सुरोशो फिरिश्तः मलक ॥१३२॥
हम नमूनः बानगी अटकल कियास।
इत्र खुशबूयो शमीमो बूय[4] बास ॥१३३॥
बल्दः शहरामद नगर कूचः गली।
खार काँटा फूल गुल गुंचः कली ॥१३४॥

१—पाछे। पु० ४।
२—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद है—
बालस्त शौहर मनस कहिये जोय का।
तूती बकौल हिंद दाँ है पोपटा ॥१७४॥ पु० २।
३—अक्रब ताजी कजदुम बिच्छू बुर्जे फलक।
बिश्मुर सुरोशो हम फिरिश्तः रा तू मलक ॥१७५॥ पु० २।
४—खुशबूई। पु० ४। २—बूई। पु०।

फराज = ऊँचाई। पेश = संमुख। अक्ब = अनुगमन, अनुसरण। पाछे = पीछे। अक्रब=बिच्छू, वृश्चिक राशि। कजदुम = बिच्छू। बुर्जे फलक = राशि। बिश्मुर = तू समझ ले। सुरोश = जिब्रील, फिरिश्ता, देवदूत। फिरिश्तः = देवता, देवदूत, सज्जन। मलक = देवता, देवदूत। नमूनः = नमूना, आदर्श, बानगी। कियास = अनुमान, विचार। इत्र = सुगंध, इत्र। खुशबू = सुगंध। शमीमः = सुगंध। बू = गंध। बल्दः = नगर। शहरामद = शहर के लिये आगत। कूचः = गली, तंग गली। खार = कंटक, काँटा। गुल = फूल। गुंचः = कली।

फराज, पेश – फा०; आगा – हिं०। अक्ब – अ०; पाछे – हिं०। अक्रब – अ०; बिच्छू – हिं०; कजदुम – फा०। सुरोश, फिरिश्तः – फा०; मलक – अ०। नमूनः – फा०; बानगी – हिं०। अटकल – हिं; कियास – अ०। इत्र, शमीमः – अ०; खुशबू, बू – फा०; बास – हिं०। बल्दः – अ०; शहर – फा०; नगर – हिं०। कूचः – फा०; गली–हिं०। खार – फा०; काँटा – हिं०। फूल – हिं०; गुल – फा०। गुंचः – फा०; कली – हिं०।

आकिबत[1] अंजाम आखिर काम है।
हम पियालः नामे सागर जाम है ॥१३५॥
रास्तो चप हम यमीनस्तो यसार।
हिंदवी तु दाहिना बायाँ बिचार ॥१३६॥
कपारस्तो पेशानियो हम जबीं।
चो इकबालो दौलत बुवद लच्छमीं ॥१३७॥

१—आकिबत अंजाम आखिर कार हम।
(×) दर हिंदवी ये मुहतरम ॥१०६॥ पु० ३।

इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—

दस्तूरो जेर दस्त परधान।
बिश्नो तू (के) अदन (अजन ?) गोश है कान ॥ ११० ॥
कुंजारः असारः खल है जान।
अक्लो खिरदस्त बुध पछान ॥१११॥
कालेव (व) अहमकस्त नादान।
मूरक बजबान हिंदी अजान ॥११२॥ पु० ३।

आकिबत = यमलोक, मृत्यु, अंत, परिणाम। अंजाम = परिणाम, अंत, पूर्ति। आखिर = अंत, अंतिम, अंततः। पियालः = पानपात्र, मधुप्याला, चषक, कटोरा। सागर = चषक, मधुप्याला। जाम = प्याला, पानपात्र, चषक। रास्त = दाहिना, सीधा, दक्षिण (पार्श्व), सत्य। चप = वाम, बाँया। यमीन = दाहिनी ओर, दाहना, शपथ, श्रेष्ठता, भव्यता। यसार = बाँई ओर, वामपक्ष, बाँया हाथ, अमीरी। कपार = कपाल, भाल, भाग्य। पेशानी = भाल, मस्तक, ललाट, भाग्य। जबीं = माथा, भाल, ललाट। चो = जब, यदि। इकबाल = भाग्य, प्रताप, समृद्धि। दौलत = धन, संपत्ति, सत्ता, भाग्य।

आकिबत, आखिर – अ०; अंजाम – फा०। पियालः, सागर, जाम – फा०। रास्त – फा०; यमीन – अ०; दाहिना – हिं०। चप – फा०; यसार – अ०; बायाँ – हिं०। कपार – हिं०; पेशानी, जबीं – फा०। इकबाल, दौलत – अ०; लक्ष्मी – हिं०।

बेदाँ मर्दुमक पूतली[1] अम्न चैन।
दिगर ऐन हम चश्म हम दीदः नैन ॥१३८॥

बुवद होंट लब जानू हम रक्बः दाँ।
दिगर नाफ रा नामे तूँदी बेखाँ ॥१३९॥

जिगर[2] दाँ कलेजा सुपर्जस्त तिल्ली।
के पहलू बुवद हिंदवी पाँसली ॥१४०॥

बैज सेः शब हस्त यकीं दाँ जमः।
सेज दहुम चार दहुम पाँज दह ॥१४१॥

१—पुतली ओ। पु० २।
२—जिगर हस्त कलेजा सुपर्जस्त तिल्ली।
ओ पहलू बुवद बहिंदवी पाँसली। ६६। पु० ३।

मर्दुमक = आँख की पुतली। पूतली = पुतली (आँख की)। चश्म = नेत्र, आशा। दीदः = आँख, साहस। लब = अधर, ओष्ठ, तट, किनारा। जानू = घुटना, जानु। रक्बः = गर्दन, परिधि, अहाता। नाफ = नाभि। तूँदी = नाभि, तुंदिका। जिगर = यकृत, साहस। सुपर्ज = प्लीहा, तिल्ली। तिल्ली = प्लीहा। पहलू = पसली, पार्श्व, बगल, कोख, तरफ। बैज...पाँज दह = निश्चित रूप से जानो कि तीन रातें प्रकाशमान हैं—तेरहवीं, चौंदहवीं और पंद्रहवीं। बैज (बैजा) = चाँदनी। सेज दहुम = तेरहवीं। चार दहुम = चौदहवीं। पाँज दह = पंद्रह।

मर्दुमक — फा०; पूतली — हिं०। अम्न — अ०; चैन — हिं०। ऐन — अ०; चश्म, दीदः — फा०; नैन — हिं०। होंट — हिं०; लब — फा०। जानू—फा०। रक्बः — अ०; नाफ — फा०; तूँदी — हिं०। जिगर — फा०; कलेजा — हिं०। सुपर्ज — फा०; तिल्ली —हिं०। पहलू — फा०; पाँसली — हिं०। बैज (बैजा) — अ०; चाँदनी — हिं०। सेज दहुम — फा०; चार दहुम — फा०; पाँज दह — फा०।

तीन[1] रात है कहें चाँदनी।
तेरहीं[2] चौदहीं[3] पंद्रहीं[4] ॥१४२॥[5]
[6]हम तरः साग आमदः तंबूल पान।
जाफराँ केसर हिना मेंहदी बेदाँ ॥१४३॥

१—चैज कहूँ तीन रैन चाँदनी । ११९ । पु० ३ ।
२—तेरवीं । पु० ३ । तेरहीं । पु० ४ ।
३—चौंदवीं । पु० ३ । चौदहीं । पु० ४ ।
४—पंद्रवीं । पु० ३ । पंद्रहीं । पु० २, पु० ४ ।
५—इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—

पूर पिसर पूत बहिंदी सखुन ।
अच पिदर बाप बेदाँ जाने मन ॥१२०॥
जूअ दिगर गुर्सनगी भूख है ।
नैशकर अज मन बिश्नो ऊख है ॥१२१॥
जनख रा (हिंदवी) ठोड़ी हमी दाँ ।
जकन रा नीज दर ताजी हमी खाँ ॥१२२॥
तू मरा रंज रा कुंहनीं बेदानी ।
जो कब्जः दस्त रा पंजः वेखानी ॥१२३॥
जो साको कल्क पा (पिंडली) सता लंग ।
अहे गर (×) सुरीं चूतड़ खोड लंग ॥१२४॥
तू जानू रा बहिंदी गूँठन खानी ।
फख्ज रान रा वहिंदी जाँग दानी ॥१२५॥ पु० ३ ।

६—इस पद से पहले निम्नलिखित पद हैं—

चो कल्को खामः कलम हिंदवी तूँ लेखन दाँ ।
दवात रा तू बहर सेः जवाँ दवात बेखाँ ॥१३०॥

तरः = शाक, तरकारी । आमदः = आया । तंबूल = पान* । जाफराँ (जाफरान) = केसर, कुंकुम । हिना = मेंहदी ।

तीन···पंद्रहवीं – हिं० । तरः–फा०; साग – हिं० । तंबूल – हिं०; पान–हिं० । जाफराँ – अ०; केसर – हिं । हिना – फा०; मेंहदी – हिं० ।

---

* पर्णम्—तांबूलम् संनिधाय सुखे पर्णं पूगं स्वादयते नरः, मतिभ्रंशो दरिद्रः स्यादंते न स्मरते हरिम्—राजनिर्घंट ।

अस्लिहः हतियार बुवद आहर[1] आश्कार।
रज़्म वगा जंग दिगर कारज़ार ॥१४४॥
[2]जज़बीलो सिंधी[3] आमद सोंठ नाम।
हम करन्फुल लौंग आमद रंग फाम ॥१४५॥
तूत फरसादस्त खीरा बादरंग।
छींका आवंग हिंदवी ढोल है दिरंग ॥१४६॥

हिमार अगर पुर्सद चीस्त बेगो खरस्त।
दर हिंदवी खर गधा के बारबरस्त ॥ ३१॥
दर आज गोश हमी गुफ्तः अंद नाम ऊ रा।
के जिन्स ऊस्त शुदः मुरक्कब रसूल खुदा ॥१३२॥पु० ३।

१—आहिर। पु० ४।

२—यह पद पु० ३ को छोड़कर सभी प्रतियों में दूसरी बार आया है। देखिये पद सं० १२४।

३—सुंठी। पु० ४।

अस्लिहः (सिलाह का ब० व०) = अस्त्र, शस्त्र। आहर = समय, काल, दिन, पानी के संग्रह के लिये बनाया गया स्थान। आश्कार = प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट। रज़्म = युद्ध, रण। वगा = युद्ध, लड़ाई। जंग = युद्ध। कारज़ार = युद्ध, संग्राम। तूत = एक पेड़, शहतूत का पेड़। फरसाद = शहतूत। बादरंग = एक प्रकार का खीरा, एक प्रकार की नारंगी। आवंग = अलगनी, छींका। दिरंग = विलंब, देर, आलस्य।

अस्लिहः – अ०; हतियार – हिं०। आहर – हिं०; आश्कार – फा०। रज़्म, जंग, कारज़ार–फा०; वगा – अ०। तूत, फरसाद – फा०; खीरा – हिं०। बादरंग – फा० (बाजरंग – अ०)। छींका – हिं०; आवंग – फा०। ढोल – हिं०; दिरंग – फा०।

[1]हर्द गोई जर्दचोबामद सखुन।
धनिया कशनीजस्त[2] मजलिस अंजुमन ॥१४७॥
दाँ हलैलः हड़ व हम अंगुजः हींग।
आज हाथीदाँत बाशद शाख सींग ॥१४८॥
नामे कँवल[3] रा वेदाँ नीलोफरस्त।
कौकबः जैशो हशम दाँ लश्करस्त ॥१४९॥
कश्तियो जौरक तू वेदाँ नाव है।
जख्मो जराहत तू वेदाँ घाव है ॥१५०॥

१—हरद चोब जर्दी बात आमद सखुन। पु० २।

१—कशनीजस्तो। पु० ४।

१—कँवल। पु० २। केना। पु० ४।

हर्द = हल्दी। गोई = कथन। जर्दचोब = हल्दी। कशनीज = धनिया। मजलिस = सभा, समिति, गोष्ठी। अंजुमन = सभा, गोष्ठी, समिति। हलैलः = हड़, हरीतकी। अंगुजः = हींग। आज = हाथीदाँत। शाख = शृंग, शाखा, डाल, सींग, बाधा, खंड। नामे कँवल रा = कँवल का नाम। कँवल = कमल ('कमल' के इस तद्भव रूप का उल्लेख किसी कोश में नहीं मिलता)। नीलोफर = नीलोत्पल, नील कमल। कौकबः = जनसमूह, भीड़, ठाठ-बाट, शान-शौकत। जैश = सेना, हृदय का वेग। हशम = नौकर-चाकर, वह नौकर जो स्वामी के लिये लड़े। लश्कर = सेना, भीड़, जन समुदाय। कश्ती = नाव, नौका। जौरक = छोटी नाव। जख्म = घाव, आघात, अनिष्ट, हानि। जराहत = घाव, जख्म, चीरफाड़, शल्यक्रिया।

हर्द – हिं०; जर्दचोब – फा०। धनिया – हिं०; कशनीज – फा०। मजलिस – अ०; अंजुमन – फा०। हलैलः – अ०; हड़ – हिं०। आज – अ०; हाथीदाँत – हिं०; शाख – फा०; सींग – हिं०। कँवल (कमल) – हिं०; नीलोफर – फा०। कौकबः, जैश, हशम – अ०; लश्कर – फा०। कश्ती – फा; जौरक – अ०; नाव – हिं०। जख्म – फा०; जराहत – अ०; घाव – हिं०।

जीबको सीमाब पारा जानिये।
हिंदवी गूगिर्द गंधक मानिये ॥१५१॥
जारी[1] बुका हिंदवी है रोज।
हम पै असर सुराग है खोज[2] ॥१५२॥
रंज चो तश्वीश बुवद दर्द पीर।
कौस कमानस्त दिगर सह्म तीर ॥१५३॥
रस्मो आईं बिश्नो अज मन रीत है।
नुस्रतो हम फतह नामे जीत है ॥१५४॥

१—जारी ओ। पु० २, पु० ३; पु० ४।
२—जारी ओ बुका ओ गिर्यः है रोज।
मी दाँ असर (व सुरागो पै) खोज ॥ ११३ । पु० ३।
इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—
रहजनो कातै तरीक ये नामवर।
बटपड़ा बाशद तुरा करदम खबर ॥११४॥
दस्त जुद्दरो पुश्त पीठ ये होशियार।
हौदः हक बेहूदः रा बातिल शुमार ॥११५॥ पु० ३।

जीबक = पारा, पारद। सीमाब = पारा। गूगिर्दः = गंधक। जारी = विलाप, रोना। बुका = रोना, रोदन। रोज = रोना। असर = चिह्न, निशान, गुण। सुराग = पाँव का चिह्न, खोज, पता, अनुसंधान, तलाश। रंज=कष्ट, दुःख, विपत्ति, बाधा। तश्वीश=चिंता, सोच, भय, आतुरता, घबराहट। दर्द = पीड़ा, कष्ट, यातना, टीस। पीर = पीड़ा। कौस = धनुष, धनु (राशि)। कमान = धनुष। सह्म = कमान से छूटा हुआ तीर, भाग, अंश। तीर = बाण। बिश्नो अज मन = मुझ से तुम पूछो। रस्म = परंपरा, रूढ़ि, नियम, विधान, कर, वेतन, संस्कार। आईन = विधान, कानून, नियम, परंपरा। रीत = रीति, ढंग, तरीका। नुस्सरत = विजय, जीत, सहायता, मित्रता, हिमायत। फतह = विजय।

जीबक – अ०; सीमाब – फा०; पारा – हिं०। गूगिर्द – फा०; गंधक – हिं०। जारी – फा०; बुका – अ०; रोज – हिं०। असर – अ०; सुराग – तु०; खोज – हिं०। रंज-फा०; तश्वीश – अ०। दर्द – फा०; पीर – हिं०। कौस – अ०; तीर – फा०। रस्म – अ०; आईन–फा०; रीत – हिं०। नुस्सरत, फतह – अ०; जीत – हिं०।

फारसी सीमुर्गो अन्का हस्त तदर्वो कब्क हंस।
हम चो यरकानस्त काँवरी है जरीरो नस्ल[1] बंस[2] ॥१५५॥

१—नस्लो। पु० २।
२—अन्का ओ सीमुर्ग आख परेवरा।
हम बारकश हम रेस्माँ जेवरा ॥१७६॥
इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—
अज आँ ऊस्त सो उसका है।
अज आँ तस्त सो तेरा है ॥१७७॥
अज आँ ईस्त सो इसका है।
अज आँ मनस्त सो मेरा है ॥१७८॥
अज आँ के बुवद सो उसका था।
... शुदः छीन लिया था ॥१७६॥
वापस दादः पाछा दिया।
खुद सितदः सो आपीं लिया ॥१८०॥
दोस्त गानी वह पियालः दूर अपने का जो देय।
मित्र अपने काज भरिया नेह घर तूँ जान लेय ॥१८१॥
रेख्त अंदर गोश खुद सीमाब वह बहरा भया।
तैर शुद मी दाँ परीदः रफ्त आपीं उड़ गया ॥१८२॥
दाँ निहाली बिस्तरो बालीनस्त बालिश ऐ जवाँ।
गल्त बाला लेट ऊपर है बिछाना गुस्तराँ ॥१८३॥
जाद तोशः हस्त दर गुफ्तार हिंदी सँभला।
हल्क शुदनाई गुलू नरली सो बस्त है गला ॥१८४॥

सीमुर्ग = एक पौराणिक पक्षी, काफ पर्वत का निवासी। अन्का = एक पौराणिक पक्षी, अप्राप्य वस्तु। तदर्वः = चकोर। कब्क = चकोर। हम चो = और साथ ही। यरकान = पीलिया (रोग)। काँवरी = कामली (रोग), पीलिया। जरीर = पीलिया, पित्त। नस्ल = वंश, कुल, संतान। बंस = वंश।

सीमुर्ग – फा०; अन्का – अ०। तदर्व, कब्क – फा०; हंस – हिं०। (हस का यह पर्याय ठीक नहीं है)। यरकान – अ०; काँवरी – हिं०; जरीर – फा०; नस्ल – अ०; बंस – हिं०।

बुलबुलामद अंदलीबो चिड़िया रा गुंजिश्क[1] दाँ।
हिंदवी टीरी[2] मलख जलकुकर[3] मुर्गाबी बेदाँ ॥१५६॥

शबचरा रख्शो तगावर खिंग तौसन है तुरंग।
बब्र जैगम शेर नाहर यूज चीता है पलंग ॥१५७॥

हिरन आहू जानिये आहू बचा कहिये गजाल।
बूजिनः बंदर खिर्स रीछ आन्दः गीदड़ शिगाल ॥१५८॥

अतसः छींको शाख सींगो कफशगर है कफशदोज।
गाजुरो लव्यात (है) धोबी (ओ) दर्जी सुई दोज ॥१८५॥ पु० ३

१—कुंजिश्क। पु० ४।
२—टीडी। पु० ४।
३—जल कूकड़। पु० ४।

अंदलीब = बुलबुल। गुंजिश्क = गौरैया, चिड़िया। टीरी = टिड्डी। मलख = टिड्डी, शलभ। जलकुकर = जलकुक्कुट। मुर्गाबी = (मुर्गाब) पानी का एक पक्षी, जलकुक्कुट। शबचरा = बहुत काला (घोड़ा)। रख्श = घोड़ा, किरण, चमक। तगावर = द्रुतगामी घोड़ा। खिंग = सफेद घोड़ा, श्वेताश्व। तौसन = घोड़ा, अश्व। बब्र = शेर की एक जाति, काल्पनिक पशु जिसे पूँछ नहीं होती, बिल्ली के आकार का किंतु शेर को मार देता है। 'शेर' शब्द के साथ विशेषण के रूप में 'बब्र' अथवा 'बबर' का प्रयोग होता है। जैगम = व्याघ्र। शेर = व्याघ्र। यूज = चीता। पलंग = भेड़िया, हिंसक, चीते के लिये 'पलंग' पर्याय ठीक नहीं। आहू = मृग। आहू बचा = आहू (मृग) का बच्चा। गजाल = मृगशावक। बूजिनः = बंदर। खिर्स = रीछ, भालू। शिगाल = गीदड़, सियार।

बुलबुल – फा०; अंदलीब – अ०। चिड़िया – हिं०; गुंजिश्क – फा०। टीरी – हिं०; मलख–फा०। जलकुकर – हिं०; मुर्गाबी (मुर्गाब) – फा०। शबचरा, रख्श, तगावर, खिंग तौसन – फा०; तुरंग – हिं०। बब्र, जैगम – अ०; शेर – फा०; नाहर – हिं०। यूज, पलंग – फा०; चीता – हिं०। हिरन – हिं०; आहू – फा०। आहूबचा – फा०; गजाल – अ०। बूजिनः – फा०; बंदर – हिं०। खिर्स – फा०; रीछ – हिं०। गीदड़ – हिं०; शिगाल – फा०।

मेश भेड़ो कूच मेंढा हम ससा खरगोश है।
अस्तरामद खच्चरो भैंसा बेदाँ जामूश है ॥१५६॥

माह आमद सोम बेशः जंगलस्त।
हिंदवी मिर्रीख रा गो मंगलस्त ॥१६०॥

हम सुक्र[1] के ज़ुहरः नाम दारद।
असबाबे तरबे मुदाम दारद ॥१६१॥

महबूबो हबीब है पियारा।
हम अंजुमो अख्तरस्त तारा ॥१६२॥

है चंद्रगहन खुसूफ मी दाँ।
हम सूरज गहन कुसूफ मी खाँ ॥१६३॥

१—शुक्र। पु० ४।
१—सुरज। पु० ४।

मेश = (सं० मेष) भेड़। भेड़ी = भेड़। कूच = नर भेड़। मेंढ़ा = भेड़ (पु०)। अस्तर = खच्चर, अश्वतर। जामूश = भैंसा। माह = चाँद। सोम = चाँद। बेशः = जंगल, कछार, शेर की माँद। हिंदवी··· मंगलस्त = 'मिर्रीख' हिंदी में 'मंगल' है। सुक्र = शुक्र। ज़ुहरः = शुक्र। दारद = है। असबाबे तरब = आनंद के साधन, प्रसन्नता के उपकरण। मुदाम दारद = स्थायी रूप से है, सदा बने रहें। महबूब = प्रेमपात्र, प्रियतम। हबीब = प्रिय, प्रेमपात्र, मित्र। अंजुम = तारे (नज्म का ब० व०)। अख्तर = तारा। खुसूफ = चंद्रग्रहण। मी दाँ = तुम जानो। कुसूफ = सूर्यग्रहण। मी खाँ = तुम समझो।

मेश – फा०; भेड़ी – हिं०। कूच – अ०; मेंढ़ा – हिं०। ससा – हिं०; खरगोश – फा०। अस्तर – फा०; खच्चर – तु०। भैंसा – हिं०; जामूश – अ०। माह – फा०; सोम – हिं०। बेशः – फा०; जंगल – हिं०। मिर्रीख – अ०; मंगल – हिं०। सुक्र – हिं०; ज़ुहरः – अ०। महबूब, हबीब – अ०; पियारा – हिं०। अंजुम – अ०; अख्तर – फा०; तारा – हिं०। खुसूफ – अ०; चंद्रगहन – हिं०। कुसूफ – अ०; सूरज गहन – हिं०।

साअत घीड़ी[1] पहर है पास।
शह्‌र आमद माह हिंदवी मास ॥१६४॥
[2]दस्त बिरिंजन कंगन कहिये पायल है खलखाल।

१—घडी। पु० ४।

२—इस पद से पहले निम्नलिखित पद हैं—

दर शिगुफ्तम हौं अचंबा ना शिकेबा ना सबूर।
दाँ शिताब ऊतावला आहिस्तः धीरा बाद दूर ॥२१८॥
जिंदः खँदरी सूफ पश्मो दल्क जामः बेवहा।
पर्नियाँ जामः मुनक्कश हम चू दीबाए खता ॥२१९॥
खोशः है झौंरा ओ खशखश कोकनार।
रोशनाई जोत तीरः अँधार ॥२२१॥ पु० ३।

पद सं० १६५ स्थान पर निम्नलिखित पाठ है—

दस्त बिरिंजन कहिये कंगन पायल है खलखाल।
पाए बिरिंजन पग का चूड़ा पिंगाँ आहे थाल ॥२२२॥ पु० ३।

इस पद के पश्चात् निम्नलिखित पद हैं—

कुर्तः ओ पौराहन पैहरन तिक्कः बंद इजार।
तौक हाँस ताकियः पाग दस्तार ॥२२३॥
दाँग फुलूसं जो आहै पैका जैतल दमड़ा जान।
दामो अरूचः कीसः खीसा जान थान ॥२२४॥
रोगनगर सो तेली कहिये आहनगर लोहार।
बढ़ई दाँ के विर्द दिगर नालैनदोज चमार ॥२२५॥
वाख संगपुश्त आहै कछवा छाई कुल्फःदान।

साअत = ढाई घड़ी का समय, एक घंटा, मुहूर्त, समय। घीड़ी = घड़ी, (यह रूप अन्यत्र उपलब्ध नहीं है)। पास = एक पहर का समय, निगरानी, शील, संकोच। शह्‌र = मास, महीना, चाँद। माह = महीना। दस्त बिरिंजन = हाथ के कंगन। खलखाल = नूपुर, पाजेब।

साअत – अ०; घीड़ी (घड़ी) – हिं०। पहर – हिं०; पास – फा०। शह्‌र – अ०; माह – फा०; मास – हिं०। दस्त बिरिंजन – फा०; कंगन – हिं०। पायल – हिं०; खलखाल – अ०।

पाए बिरिंजन चूड़ा कहिये खूबी हुस्नो[3] जमाल ॥१६५॥
गुलूबंद को तिलड़ी कहिये और हमाइल हार।
बाजूबंद भुजाली कहिये जो पैरायः सिंगार ॥१६६॥

आर्द आटा आजख महसा खाल सो तिल पैचान ॥२२६॥
बाज कुँभार कलाल कहिये आहै खंमार कलाल।
पित्ता जह्रः कदर अंदाजः दल्लालस्त दलाल ॥२२७॥
खांदन पडनाँ बिश्नो तूँ सुन दुश्वार दुहेला।
याद गिरफ्तम मैं सुँवर्या आसनस्त सुहेला ॥२२८॥
गर उतरवुश जो बहरा कहिये गर हम खारिश खाज।
दुलमुल ऊचनी फूँक कहिये गल्लः सो आहै अनाज ॥२२९॥
कज्लिको सिक्कीं बेदाँ सीधी छुरी।
हम बेदाँ सातूर रा टेढ़ी छुरी ॥२३०॥
कूचः ओ कू है गली बाजार हाट।
खल्क आमद लोग बगिरीजस्त नाठ ॥२३१॥
फूल गुल है खार काँटा गोद किनार।
नर्दबान सीढ़ी ओ बरशो हो सवार ॥२३२॥
जान खुर्मा हिंदवी रा आँपली।
मग्ज आहै गूद गलीमस्त कामली ॥२३३॥ पु० ३।

१—हुस्न। पु० ४।

पाए बिरिंजन = पाँव का कड़ा। चूड़ा = लाख की चूड़ी, (पाए बिरिंजन के लिये 'चूड़ा' शब्द उचित नहीं है।) खूबी = सुंदरता, गुण, उत्तमता। हुस्न = सुंदरता, शोभा, छबि। जमाल = सौंदर्य, शोभा। गुलूबंद = एक आभूषण, गले और कानों को शीत से बचानेवाला वस्त्र। हमाइल = गले में पहनने का एक आभूषण, गले में लटकाने के लिये प्रस्तुत कुरान का गुटका। पैरायः = आभूषण, सजावट, वस्त्र, शैली।

पारा बिरिंजन – फा०; चूड़ा – हिं०। खूबी – फा०; हुस्न, जमाल – अ०। गुलूबंद – फा०; तिलड़ी – हिं०। हमाइल – अ०; हार – हिं०। भुजाली – हिं०; बाजूबंद – फा०। पैरायः – फा०; सिंगार – हिं०।

गोशवारः दर हिंदवी बरनूँ करनफूल दर कान।
गौहर लूलू मोती कहिये मूँगा है मर्जान ॥१६७॥
बदली मेग चो अब्र सहाब।
अहिला[1] सैल ओ[2] कीच खलाब ॥१६८॥
अंगुश्तरी अँगूठी कहिये खातम जान नगीनः।
है[3] जंगूलः घुँगरू झुमका चिछवा माल खजीनः ॥१६९॥
शबचिराग याकूत रतन हीरा है अलमास।
और जुमुर्रुद पन्ना कहिये किसवत जान लिबास ॥१७०॥

१—हीला। पु० ४।
२—जो। पु० ४।
३—है जंगूलः घुँघरू बिछुवा झुमका माल खजीन। पु० ४।

गोशवारः = कान का लटकन, बुंदा, ब्यौरे का कागज (हिसाब)। दर कान = कान में। गौहर = मोती। लूलू = मोती। मर्जान = प्रवाल, मूँगा। बदली = छोटा बादल। मेग = मेघ। अब्र = बादल। सहाब = बादल। अहिला = पानी का प्रवाह, बाढ़। सैल = जलप्रवाह, बाढ़। कीच=कीचड़। खलाब = कीचड़। अंगुश्तरी = अँगूठी, मुद्रिका। खातम = अँगूठी, मुद्रा। नगीनः = नग, अँगूठी पर जड़ा जानेवाला रत्न। जंगूलः = घुँघरू, मजीरा। माल = धन, बहुमूल्य वस्तु, महत्व। खजीनः = निधि, कोष। शबचिराग याकूत = एक प्रकार का लाल जो रात में चमकता है। अलमास = हीरा। जुमुर्रुद=पन्ना। किसवत=वस्त्र, पोशाक।

गोशवार – फा०; करनफूल – हिं०। गौहर – फा०; लूलू – अ०; मोती–हिं०। मूँगा – हिं०; मर्जान – अ०। बदली – हिं०; मेग, अब्र – फा०; सहाब – अ०। अहिला – हिं०; सैल – अ०। कीच – हिं०; खलाब – अ०। अंगुश्तरी – फा०; अँगूठी – हिं०। खातम – अ०; नगीनः–फा०। जगूलः–फा०; घुँगरू, झुमका, चिछवा – हिं०। माल खजीनः – अ०। शबचिराग, याकूत – फा०; रतन – हिं०। हीरा – हिं०; अलमास – फा०। जुमुर्रुद–फा०; पन्ना – हिं०। किसवत, लिबास – अ०।

तिला कुंदन सोना कहिये जेवर अभरन[1] गहना।
नाम जड़ाऊ मुकल्लल बाशद और मुरस्सा कहना ॥१७१॥

[2]निया खाल हिंदवी मामूँ जान।
औदिर अंमू चचा बखान ॥१७२॥
बरादरजादः जान भतीजा।
खाहरजादः जो कहिये भांजा ॥१७३॥
खलफ सपूत मुखालिफ बैरी।
कुर्सी तख्त जूलान है बेड़ी ॥१७४॥

१—आभरन। पु० ४।

२—नियाँ व खाल (है) मामूँ (व) औ दर अम चचा।
बरादरजादः भतीजा औ खाहरजाद (है) भांजा ॥१५३ पु० ३
निया खाल हिंदवी मामूँ जान।
और अंमू कहिये चचा बखान ॥ पु० ४

तिला = सोना। जेवर = आभूषण। अभरन = आभरण, आभूषण। मुकल्लल = चमकता हुआ, मुलंमा किया हुआ। मुरस्सा = जड़ाऊ। निया=मामा, नाना, दादा, प्रतिष्ठा। खाल = मामा। औदिर = चाचा, ताऊ। अंमू = चाचा या ताऊ। बरादरजादः = भाई का पुत्र, भतीजा। खाहरजादः = बहन का पुत्र, भांजा। खलफ = सुपुत्र, आज्ञाकारी पुत्र। मुखालिफ = विरोधी, प्रतिकूल, शत्रु। कुर्सी = कुर्सी, बैठने का विशेष प्रकार का आसन। तख्त = बड़ी चौकी, पलंग। जूलान = बेड़ी, कैदियों के बाँधने की जंजीर।

तिला – फा०; कुंदन, सोना – हिं०। जेवर – फा०; आभरन, गहना – हिं०। जड़ाऊ – हिं०; मुकल्लल, मुरस्सा – अ०। निया – फा०; खाल–अ०; मामूँ – हिं०। औदिर – फा०; अंमू – अ०; चचा–हिं०। बरादरजादः – फा०; भतीजा हिं०। खाहरजादः – फा०; भांजा – हिं०। खलफ – अ०; सपूत – हिं०। मुखालिफ – अ०; बैरी – हिं०। कुर्सी – अ०; तख्त – फा०। जूलान – फा०; बेड़ी – हिं०।

राद गरज कहिये घनघोर।
बर्क बीजली मौज हिलोर ॥१७५॥
बिस्तर सेज दोलीचा काली।
मर्गजार कहिये हरयाली ॥१७६॥
गुलिस्तानो हम बोस्ताँ बाग बाड़ी।
चमन कतअ बाशद खियाबाँ कियारी ॥१७७॥
कुल्बः हल है ज़िराअत खेती।
मर्जो बूम है कहिये धरती ॥१७८॥
खर्दल राई अरजन चेना।
दाद सितद है देना लेना ॥१७९॥

राद = बिजली की कड़क। बर्क = बिजली, चपला। मौज = तरंग, लहर। बिस्तर = शय्या, बिछौना। दोलीचा = गलीचा। काली = कीमती ऊनी गलीचा। मर्गजार = जिस मैदान में दूब बहुत हो, गोचर भूमि। गुलिस्तान = वाटिका, उद्यान। हम = साथ ही, भी। बोस्ताँ = वाटिका, उद्यान। बाग = उद्यान, वाटिका। चमन = उद्यान, वाटिका। कतअ = खंड, टुकड़ा। खियाबाँ = क्यारी, उद्यान। कुल्बः = हल। जिराअत = कृषि, खेती। मर्ज = कृषिभूमि, क्यारी, सीमांत। बूम = बंजर भूमि, उल्लू, मूर्ख। खर्दल = राई। अरजन = चबीना, साँवाँ की जाति का अन्न, प्रियंगु। चेना = चबीना, कँगनी या साँवाँ की जाति का एक अन्न, प्रियंगु। दाद = दिया हुआ। सितद = लेना, लेन ('दाद' शब्द के साथ सितद शब्द का प्रयोग होता है)।

राद – अ०; घनघोर गरज – हिं०। बर्क – अ०; बिजली–हिं०। मौज – अ०; हिलोर-हिं०। बिस्तर – फा०; सेज-हिं०। दोलीचा, काली–तु०। मर्गजार – फा०; हरयाली – हिं०। गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, बाग – फा०; बाड़ी – हिं०। चमन – फा०; कतअ – अ०; खियाबाँ – फा०; कियारी हिं०। कुल्बः – फा०; हल – हिं०। जिराअत – अ०; खेती – हिं०। मर्ज, बूम – फा०; धरती – हिं०। खर्दल – अ०; राई – हिं०। अरजन – हिं०; चैना – हिं०। दाद – फा०; देना – हिं०। सितद – फा०; लेना – हिं०।

खुसुर पूरः साला है जान।
खुसुर सुसुर और हान जियान ॥१८०॥

चर्खः रहटा गल्लः रा पागलः दाँ।
राँड बेवः जाल रा बूढो वेदाँ ॥१८१॥

नीज पेचक नाम पूनी जानिये।
हम कलावः नाम आँटी मानिये ॥१८२॥

दूक तकला सून बाशद रेस्माँ।
जान रेसीदन बहिंदी कातना ॥१८३॥

मूसलस्त मारूफ हावन ओखली।
चोबदस्तः मूसलस्त खोशः फली ॥१८४॥

खुसुर = ससुर। पूरः = पुत्र। हान = हानि। जियान = हानि, अनिष्ट, घाटा, क्षति। चर्खः = चर्खा। रहटा = चर्खा। गल्लः=अन्न, धान्य, दाना। बेवः = विधवा। जाल = सफेद बालों वाली बूढ़ी स्त्री, बूढ़ा पुरुष या स्त्री। पेचक = लिपटी हुई वस्तु, बटे हुए महीन सूत की गोली। पूनी = पूणी, पूनी। कलाबः = चर्खे पर काती जानेवाली पिंडिया, कूकड़ी। आँटी = सूत का लच्छा, कुश्ती, का एक पेंच, घास का पूला। दूक= चर्खे का तकला। रेस्माँ = डोरी। रेसीदन = कातना। मारूफ = प्रसिद्ध। हावन = लकड़ी की ऊखली, औषधि कूटने की ऊखली। चोबदस्तः=लाठी, छड़ी।

खुसुर पूरः – फा०; साला – हिं०। खुसुर – फा०; सुसुर – हिं०। हान – हिं०; जियान – फा०। चर्खः – फा०; रहटा – हिं०। गल्लः – अ०; पागलः – फा०। राँड – हिं०; बेवः–फा०। जाल – फा०; बूढ़ी – हिं०। पेचक – फा०; पूनी – हिं०। कलावः – फा०; आँटी – हिं०। दूक – फा०; तकला – हिं०। सूत – हिं०; रेस्माँ – फा०। रेसीदन – फा०; कातना – हिं०। मूसल – हिं०; चोबदस्तः – फा०। हावन – फा०; ऊखली – हिं०। खोशः – फा०; फली – हिं०।

वाह कनीजक कहिये चेरी।
दाम जाल जूलान है बेड़ी॥१८५॥
शर्म हया दर हिंदवी लाज।
हासिल कहिये बाज खराज॥१८६॥
[1]ताले बख्त जो कहिये भाग।
लहन सुरूदो[2] तरन्नुम राग॥१८७॥
तिफ्ले कोदक खुर्दो[3] बाला मुंडा[4] रा।
[5]बैजः बजबाने हिंदवी दाँ अंडा रा॥१८८॥

१—दाँ के बेबख्तस्त अभागा ओ दिगर बख्त (अस्त) भाग फारसी आमद सरोद आमद सरोद (ो) हिंद (व) ी गोयंद राग। १८६। पु० ३
२—सुरूद। पु० ४।
३—खुर्द। पु० ४।
४—मुंढा। पु० ३ :
५—बैजो हनायः बेदानी अंडा रा। पु० २।

वाह = खूब, साधु। कनीजक = छोटी दासी। दाम = फंदा, पाश, बंधन। जूलान = बेड़ी। शर्म = लज्जा। हया=लज्जा, व्रीडा। हासिल = आय, राजस्व, उपलब्ध। बाज = खिराज, राजस्व, चौथ। खराज = लगान, भूमिकर, अधिनस्थ राजाओं द्वारा दिया जानेवाला राज्यांश, चौथ। ताले = भाग्य, प्रारब्ध, उदयोन्मुख। बख्त = भाग्य, प्रारब्ध, अदृश्य। लहन = राग, तराना, ध्वनि, मधुर ध्वनि। सुरूद = गाना, गीत एक बाजा। तरन्नुम = मधुर गान, स्वर माधुर्य, राग। तिफ्ल = बाल, बच्चा। कोदक = बालक, किशोर, शिशु। खुर्द = नन्हा, छोटा, लघु। मुंडा = बच्चा, शिष्य, जिसने हजामत बनवाई है, लड़का। बैजः = अंडा। बैजः बख्त···अंडा रा = हिंदी में 'बैजः' को अंडा समझो।

कनीजक – फा०; चेरी – हिं०। दाम – फा०; जाल – हिं०। जूलान – फा०; बेड़ी – हिं०। शर्म – फा०; हया – अ०; लाज – हिं०। हासिल, खराज – अ०; बाज – फा०। ताले – अ०; बख्त – फा०; भाग – हिं०। लहन – अ०; सुरूद, तरन्नुम – फा०; राग – हिं०। तिफ्ल – अ०; कोदक, खुर्द – फा०; मुंडा-पं०।

मुज्दः नवेद खुशखबर बुशारत।
चश्मक ईमा सैन इशारत ॥१८९॥
दस्तक हिंदवी ताली जान।
अंगुश्तक[1] चुटकी पहचान ॥१९०॥
[2]हुकहुक हिचकी फाजः जमाई।
खमयाजः कहिये अँगड़ाई ॥१९१॥
अत्सः छींक आरोग डकार।
महक कसोटी जान अयार ॥१९२॥

१—अंगुश्तक को। पु० २।
२—फाज जँभाई दाँ हुकहुक। है तन (जाला व मकड़ी जो लहक)। २००। पु० ३।

इस पद के पहले निम्नलिखित पद हैं—

मील दर हिंदी सलाई सुर्मः जोय।
......चौगानो फंदक गेंद गोय ॥१९८॥
दाँ पियाज आमद आमद बसल हर दो जबाँ।
काँदा बादा बेखाँ बैगन हम बेदाँ ॥१९९॥ पु० ३।

मुज्दः = खुशखबरी, शुभ समाचार। नवेद = शुभ समाचार, निमंत्रण-पत्र। खुशखबर (खुशखबरी) = सुसमाचार, शुभ समाचार। बुशारत = शुभ संवाद, सुसमाचार। चश्मक = किसी बात के लिये आँख का संकेत। ईमा = संकेत, इंगित। इशारत (इशारः) = संकेत, इंगित, तात्पर्य। दस्तक = ताली, खटखटाना। अंगुश्तक = चुटकी। हुकहुक = हिक्का, हुचकी। फाजः = जँभाई, अँगड़ाई। जमाई = जृंभा, जँभाई। खमयाजः = अँगड़ाई, परिणाम, जँभाई। अत्सः = छींक। आरोग = डकार, उद्गार। महक = कसौटी, निकष। अयार = परख, चाँदी-सोने को कसौटी पर कसना।

मुज्दः नवेद, खुशखबर (खुशखबरी) – फा०; बुशारत – अ०। चश्मक – फा०; ताली – हिं०। अंगुश्तक – फा०; चुटकी – हिं०। हुकहुक फाजः – फा०; जमाई – हिं०। खमयाजः – फा०; अँगड़ाई – हिं०। अत्सः – अ०; छींक – हिं०। आरोग – फा०; डकार – हिं०। महक, अयार – अ०; कसोटी – हिं०।

[1]आखिर अंजाम है नीज तमाम।
अंत बात है खत्म कलाम ॥१९३॥
मौलवी साहब सरन पनाह।
गदा भिकारी खुसरो शाह[2] ॥१९४॥

—०—

१—१८६ और १८७ वाँ पद नहीं है। पु० ३।
२—अंतिम पद इस प्रकार है—

खालिक बारी भई तमाम।
दोहूँ जग रहिया खुसरो नाम ॥२३५॥ पु० ३।

आखिर = अंत, अंतिम। अंजाम = परिणाम, फल, अंत। तमाम = समाप्त, समस्त। खत्म कलाम = बात समाप्त।

आखिर तमाम – अ०; अंजाम – फा०। खत्म कलाम – अ०; अंत बात – हिं०।

परिशिष्ट

हिंदी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

ध्वनिपरिवर्तन—भारतीय आर्यभाषा की मूल ध्वनियों के परिवर्तन की कहानी बहुत पुरानी है। मध्यकाल में परिवर्तन की प्रक्रिया अधिक तीव्र रही। परिवर्तन का यह क्रम नव्य भारतीय भाषाओं में भी रुका नहीं है, यद्यपि उसकी गति में मध्यकालीन तीव्रता नहीं है। 'खालिक बारी' में प्रयुक्त हिंदी के शब्दों से ज्ञात होता है कि जिस समय यह पुस्तक लिखी गई, खड़ी बोली के अधिकांश शब्दों ने सुसंस्कृत रूप धारण कर लिया था। थोड़े से शब्दों पर ही क्षेत्रीय प्रभाव दिखाई देता है—

आ > अ — अकास < आकाश
अभरन < आभरण

ऋ > ई — सींग < शृंग

अ + य > ऐ (शब्द के मध्य में) — नैन < नयन

अ + व > ओ (शब्द के मध्य में) — लोन > लवन < सं० लवण

अ + ं + व > औ (शब्द के मध्य में) — लौंग < सं० लवंग
कौल < सं० कवल

क > ग — परगट < सं० प्रकट
कंगन < सं० कंकण
साग < सं० शाक

ट > ड — ककड़ी < सं० कर्कटी
कूकड़ा (मुर्गा) < सं० कुक्कुट + क
कूकड़ी (मुर्गी) < सं० कुक्कुटी

ट > ड़ > र — जलकुकर < जलकुकड़ < जलकुक्कट

ड > ड़ > र — पीर < पीड़ < सं० पीडा
टीरी < हिं० टीड़ी

द < ज — छाज < सं० छाद

ध्य < झ < ज — बाँज < बाँझ < सं० वंध्या

म < ँव — नाँव < सं० नाम

र<ल — हिलोर < सं० हिल्लोल
ल<र — कपार < सं० कपाल
व<ब — बार < सं० वार
बास < सं० वास
बिस < सं० विष
बैद < सं० वैद्य
बैरी < सं० वैरी
व<म — पृथमी < सं० पृथ्वी
श>स — अकास < सं० आकाश
आस < सं० आश
निरास < सं० निराश
निस < सं० निशा
ष<स — दोस < सं० दोष
रोस < सं० रोष
ह्व< भ — जीभ < सं० जिह्वा
ज्ञ>ञ>य — सयाना < सं० सुज्ञान + क

महाप्राण ध्वनियों में 'ह' शेष रहता है—

थ>ह — मही (छाछ) < मथिता
घ>ह — मेंह < मेघ
सोहनी < शोधनी

वर्णविपर्यय—वर्णविपर्यय के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

कीच < चिक्लिद
कुल्हाडा < प्रा० कुढालओ, कुढालिआ < सं० कुठार + क
मेंहदी < सं० मेंधिका अथवा मेंधी

क्षतिपूर्ति—क्षतिपूर्ति के रूप में ध्वनियों में परिवर्तन हुआ है—

(क) द्वित्व—कप्पड < प्रा० कप्पडओ, कप्पडो < सं० कर्पट
किल्ली < सं० कील + इका
(ख) दीर्घत्व—काजल < सं० कज्जल
गाँठ < सं० ग्रंथि

नाक < सं० नक्र
काँकर < सं० कर्कर
पाथर < सं० प्रस्तर
पान < सं० पर्ण
बाती < सं० वर्त्ती
माँछर < सं० मत्स+र
लाज < सं० लज्जा
हाड < सं० हड्ड
सीपी < सं० सिप्पी
सीह < सं० सिंह
दूध < सं० दुग्ध

स्वरागम—उच्चारण की सुविधा के लिये आरंभ में स्वर का आगमन एक शब्द में मिलता है। संयुक्ताक्षर से पूर्व इस प्रकार इकार का आगमन फारसी का अनुकरण है—

इस्तरी < स्त्री

श्रुति—श्रुति के रूप में दो शब्दों में 'ह' का प्रयोग हुआ है। यह 'ह' श्रुति पूर्वी प्रभाव की द्योतक है—

चील्ह < सं० चिल्ल
चूल्हा < सं० चुल्लि+क+इका

स्वरभक्ति—खड़ी बोली में स्वरभक्ति को प्रोत्साहन नहीं मिला है। 'खालिक बारी' के कुछ शब्दों में स्वरभक्ति का प्रयोग हुआ है—

मारग < मार्ग
मित्तर < मित्र
रतन < रत्न
लच्छमी < लक्ष्मी
सवाद < स्वाद
दिरोह < द्रोह
दुवार < द्वार

वर्णलोप—वर्णलोप के उदाहरण के लिये 'खालिक बारी' में प्रयुक्त शब्दों को प्रस्तुत किया जाता है—

'र' का लोप कपास < सं० कर्पास
कपूर < सं० कर्पूर
पहर < सं० प्रहर

ह्रस्वीकरण—खड़ी बोली के विपरीत 'खालिक बारी' में कहीं कहीं ह्रस्वीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है—

अकास < आकाश
अभरन < आभरण
कया < काया
तंबूल < तांबूल
मया < माया
मरी < मारि

संज्ञा—

(क) हिंदी पर्यायों में संस्कृत के बहुप्रचलित तत्सम शब्द निम्नलिखित हैं—

आनंद, उत्तर, गंधक, गुड़, घास, चोर, जाल, जीव, तिल, तुरंग, दान, दिवस, दूर, नगर, नदी, नर, नाग, नाव, पेट, बल, बलद, मंगल, मसूर, मास, मुकुट, मुख, राग, लोह, संसार, सेवक, सेवा, सोम, हंस, हल, हार।

(ख) कुछ ऐसे शब्द हैं, जो इस समय खड़ी बोली में प्रचलित नहीं हैं। इन संज्ञाओं का संबंध क्षेत्रीय बोलियों से है—

अरजन (चबीना, एक विशेष प्रकार का धान)।
उन्मन (बादल)।
चैना (चबीना, एक विशेष प्रकार का धान)।

(ग) कुछ शब्दों में ध्वनि संबंधी अधिक परिवर्तन हुए हैं। इन शब्दों की व्युत्पत्ति दी जा सकती है—

अहिला (बाढ, जलप्रवाह), बोलियों में इस शब्द के आह्ला, एह्ला रूप भी प्रचलित हैं।

सं० आ + प्लाव + क

आहर < सं० अहः

ईठ < सं० इष्ट

कंघी < सं० कंकत + इका

कस्सी (कुदाली < सं० कर्ष + इका

गाँसी (वाण की नोक) < गाँस < ग्रास + इका

ठाँवँ < सं० स्थानम्

डीठ—बोलियों में दीठि और दीठी रूप भी प्रचलित हैं।
< प्रा० दिट्ठी < सं० दृष्टि

तिलड़ी < हिं० तीन + लड़ी

तोंदी—बोलियों में 'तोंद' अधिक प्रचलित है, < सं०
तुंद + इका

दाँती (दराँती) < सं० दंत + इका

नीडा—(नियर और नेर रूप भी प्रचलित हैं।) < प्रा०
निअड < सं० निकट

पाहुना < सं० प्राघुण + क

पेवसी < सं० पीयूष + इका

बड़ा < सं० वड्र + क

बदली < सं० वार्दल + इका

बसीठ < सं० वसिष्ठ

जायसी ने 'बसीठ' शब्द का प्रयोग दूत तथा संदेशवाहक के लिये किया है—

> भई रजाएसु देखहु को भिखारि अस ढीठ।
> जाउ बरजि तिन आवहु जन दुइ जाइ बसीठ[1]।
> नाउँ महापातर मोहि तेहिक भिखारी ढीठ।
> जौं खरि बात कहैं रिस लागै खरि पै कहै बसीठ[2]।

---

१. जायसी-पद्मावत, व्याख्याकार—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, प्रकाशक साहित्यसदन, चिरगाँव (झाँसी), वि० २०१२, पृ० २०८।

२. वही, पृ० २५५।

बात <सं० वात

बेटा <प्रा० बिट्टा <सं० वटु

बेड़ी <सं० वेडितः

मुंडा <प्रा० मुंडश्रो, मुंडश्र <सं० मुंडक

मेंढा <सं० मेढ्र +क

रहटा <सं० अरघट्टक

रैन <प्रा० रयणी <सं० रजनी

रोज (रोना) <प्रा० रुज्ज <सं० रुद

लाडला <सं० लड् + इल + क

लोखडी (लोमडी)—(लोखरी और लूखटी रूप भी प्रच-
लित हैं।) <लुक + ट <ड + इका

सीठा (नीरस) <प्रा० सिट्ठश्रो <सं० शिष्ट + क

सीला <प्रा० सीअलश्रो <सं० शीतल

स्याना <सं० सज्ञान

हाँडी <प्रा० भंडिश्रा <सं० भांड + इका

हिया <प्रा० हिअश्र, हियश्र, हियय <हृदय

प्रत्यय—

(क) पुम्वाची 'आ'—खालिक बारी के आकारांत हिंदी शब्द हमारा ध्यान मुख्य रूप से आकर्षित करते हैं। आकारांत संज्ञा और विशेषण खड़ी बोली की अपनी विशेषताएँ हैं। ब्रज में आकारांत संज्ञा आकारांत बनी रहती है किंतु आकारांत विशेषण ओकारांत बन जाते हैं। खालिक बारी की हिंदी शब्दावली से यह बात स्पष्ट होती है कि अनेक स्त्रीलिंगवाची शब्द अकारांत बन गए हैं और उनके लिंग में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ—

आस <आशा

जीभ <जिह्वा

रीत <रीति

हान <हानि

मूछ <श्मश्रू

इन शब्दों के विपरीत संस्कृत के अनेक पुलिंगवाची शब्द हिंदी में 'आकारांत' बन गए। अनेक भाषावैज्ञानिकों का विचार है कि यह 'आ' संस्कृत के 'क' प्रत्यय का अवशिष्ट भाग है। खालिक बारी में प्रयुक्त इस प्रकार के शब्दों की सूची दी जा रही है—

संज्ञा—

ओला < सं० उपल + क
कलेजा < सं० कालेय + क
कव्वा < सं० काक + क
काँटा < सं० कंट + क
कुँव्वाँ < सं० कूप + क
कूपा < सं० कूप + क
कोठा < सं० कोष्ठ + क
खाँडा < सं० खंड + क
गड्ढा < सं० गर्त + क
गैंडा < स० गंड + क
घड़ा < सं० घट + क
घोड़ा < सं० घोट + क
चना < सं० चण + क
चीता < सं० चित्र + क
चेरा < सं० चेट अथवा चेड + क
छुरा < सं० क्षुर + क
तवा < सं० ताप + क
ताँबा < सं० ताम्र + क
ताता < सं० तप्त + क
तीतरा < सं० तित्तिर + क
दिया < सं० दीप + क
बाना < सं० वर्ण + क
रूपा < सं० रूप्य + क
हीरा < सं० हीर + क

संस्कृत से संबंधित न होते हुए भी कुछ शब्द आकारांत हैं—

चाचा

तकला

विशेषण—

अंधा < सं० अंध + क

उजला < सं० उद् + ज्वल + क

कड़वा < सं० कटु + क

काला < सं० काल + क

संस्कृत से असंबंधित—भला।

(ख) **ई**—स्त्रीलिंगवाची—सं० इका

अंगूठी < सं० अंगुष्ठ + इका

अटारी < सं० अट्टाल + इका

ऊखली < सं० उलूखल + इका

कड़ी (लकड़ी की) < सं० कट + इका

कसौटी < सं० कष + पट्ट + इका

कस्तूरी < सं० कस्तूर + इका

खेती < सं० क्षेत्र + इका

घड़ी < सं० घट + इका

चाकी < सं० चक्र + इका

चुटकी < सं० चुट + क + इका

बाड़ी < सं० वाट + इका

बूढ़ी < सं० वृद्ध + इका

रोटी < सं० रोट + इका

ई—पुलिंगवाची—सं० इका

नाती < नप्तृ + इक

मोती < मुक्ता + इक

सर्वनाम—खालिक बारी में उत्तमपुरुषवाचक और मध्यमपुरुषवाचक सर्वनामों का प्रयोग हुआ है। उत्तमपुरुषवाची सर्वनाम का प्रयोग एक स्थान पर विभक्तिरहित 'मैं' के रूप में हुआ है। मध्यमपुरुषवाची

'तू' का एक स्थान पर द्वितीया तथा चतुर्थी का रूप 'तुज' और दूसरे स्थान पर षष्ठी का रूप 'तोर' मिलता है। तोर पर पूर्वी का प्रभाव लक्षित होता है।

संख्यावाचक—(क) संख्यावाचक 'एक' का प्रयोग हुआ है।

(ख) क्रमवाचक संख्यावाचक विशेषण के रूप में 'ईं' और 'वाँ' <सं० तम का प्रयोग हुआ है—

तेरह > तेरहीं
चौदह > चौदहीं
पंद्रह > पंद्रहीं

क्रिया—फारसी क्रियाओं के पर्याय के रूप में हिंदी की कुछ क्रियाओं का प्रयोग हुआ है—

(क) आज्ञार्थक—आज्ञार्थक रूप में एक स्थान पर 'आव' 'आओ' और एक स्थान पर 'इये' का प्रयोग हुआ है। अधिकांश स्थानों पर प्रत्ययरहित धातु का उपयोग किया गया है—

उठाव और उठाओ < उठाना
खा < खाना
खींच < खींचना
चाख < चाखना
छानियें < छानना
जा < जाना
दे < देना
देख < देखना
पछोर < पछोरना (= पछोड़)
पीस < पीसना
फाड़ < फाड़ना
बैठ < बैठना
राख < राखना

(ख) वर्तमानकालिक कृत प्रत्यय युक्त—

सोयता है<सोना
जागता है< जागना

(ग) भूतकालिक कृदंत रूप—

गई (गया)< जाना
भई (भया)<होना
रहिया < रहना
कहिया <कहना

क्रियाविशेषण—स्थानवाची क्रियाविशेषण के रूप में 'कित'<सं० कुत्र का प्रयोग हुआ है।

शब्दानुक्रमणी

[संख्याएँ छंदों की हैं]

अरबी